सपनों की ओडिसी

80 कैंसर रोगी सहित 168 यात्री,
6 बसें और 2800 किलोमीटर लंबी
एक चुनौती भरी यात्रा..

लेखक : देवाशीष शर्मा
हिंदी अनुवाद : रविशंकर रवि
(असमिया में लिखी गई पुस्तक का हिंदी अनुवाद)

लेखक का अनुभव

वर्ष 2019 का दिसंबर महीना। उस समय मैं मुंबई स्थित असम भवन में संयुक्त आवासिक आयुक्त के रूप में कार्यरत था। पूरे देश में कोरोना महामारी का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। कोरोना पूरे देश को जकड़ता जा रहा था। उच्च चिकित्सा के लिए मुंबई आने वाले कैंसर रोगियों के लिए असम भवन, मुंबई प्राण केंद्र है। इसके अलावा भी मुंबई महानगरी में घर लेकर बस जाने वाले असमवासी उत्सव-पर्व के समय आमतौर पर यहां का एक चक्कर जरूर मारते हैं। क्योंकि उन्हें मुंबई में रहते हुए भी असम भवन उन्हें अपने घर जैसा लगता है।

मुंबई महानगर में कोविड भयावह रूप लेता जा रहा था, स्थिति गंभीर होती जा रही थी। इसके साथ ही अचानक असम भवन के ऊपर एक गंभीर दायित्व आ पड़ा था। असमवासी हमारी तरफ उम्मीद भरी नजर से देख रहे थे। इस परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए हम मानसिक रूप से किसी भी प्रकार तैयार नहीं थे। ऊपर बैठे लोगों का सिर पर आशीर्वाद लेकर मैं और असम भवन में कार्यरत एक छोटा-सा समूह मौजूदा चुनौतियों का अपने स्तर पर मुकाबला करने का प्रयास कर रहा था। आगे की यात्रा बेहद दुर्गम थी। जरूरत थी एक दूरदर्शी परिकल्पना, उन्नत संपर्क का माध्यम, थोड़ी संवेदना और सरकारी नियमों को पूरी तरह न पकड़े रहने की और सरकारी नियमों की अवहेलना किए बिना आमलोगों के लिए थोड़ा-बहुत होने से भी मदद करने का रास्ता निकालने की। सरकारी नौकरी में कई बार ऐसी परिस्थिति के सामने आ खड़ी हो जाती है, जब कोई अधिकारी यदि कोई एक काम न करने का मन बना ले तो, वह काम न करने के पक्ष में तर्कपूर्ण कारण बता सकता है। लेकिन मैं इसे उचित नहीं मानता। कइयों ने कहा था कि इस तरह के झमेलें में पड़ने की जरूरत नहीं है। कुछ पक्ष की राय थी कि वर्तमान स्थिति को देखते हुए स्थिति के पूरी तरह सामान्य होने तक असम भवन को पूरी तरह बंद कर दिया जाना चाहिए।

ऐसा नहीं करने से कोविड संक्रमण का भय था। लेकिन वैसा निर्णय लेने में मुंबई के विभिन्न अस्पतालों से मुक्त कर दिए अनेक रोगी कहां पर ठहरते? तब मुंबई के सारे होटल धीरे-धीरे बंद होने लगे थे।

दूसरी तरफ असम से आकर टोलजा नामक अंचल में असम से आकर रहने वाले हजारों श्रमिकों को तब कई महीने से वेतन नहीं मिला था। वे सभी असम भवन, मुंबई की तरफ इस आशा से देख रहे थे कि हमारी तरफ से कुछ न कुछ जरूर किया जाएगा। ऐसी परिस्थिति में कई वरिष्ठ व्यक्तियों ने कहा था- 'ये आपका काम नहीं है, उनलोगों की देखभाल की जिम्मेदारी महाराष्ट्र सरकार की है।'

उनलोगों की बातें भले ही तर्कपूर्ण थीं, लेकिन असम के विभिन्न अंचलों से मुंबई आकर काम करने आए लोगों के कारण मुझे लगा कि इस कोविड संक्रमण के भय से हम असम भवन का कामकाज बंद नहीं कर सकते, क्योंकि इसी भवन पर असम से आए अनेक कैंसर रोगियों की आशा और आकांक्षाएं टिकी हुई हैं। अपनी-अपनी जगह पर कुछ निर्णय या विचार करना गलत नहीं है। फिर भी नौकरी के दौरान कई बार ऐसी परिस्थिति होती है, जहां पर एक लिपिबद्ध नियमावली तथा ऊपर से आनेवाले आदेशों में विरोधावास रहता है। नियमों की कुंडली के बीच व्यवहारिक पहल से आम आदमी को काफी राहत मिल जाती है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं लगाया जाना चाहिए कि मैं सरकारी नियम-नीति का उल्लंघन करके एक जिम्मेदार अधिकारी के रूप कुछ और कहना चाहता हूं। मैं तो महज यह कहना चाहता हूं कि जब रात के बारह बजे भूखे-प्यासा कोई आम नागरिक आकर सरकारी अतिथिशाला का दरवाजा खटखटाता है, तब उस नागरिक को 'कमरा खाली नहीं है' कह कर लौटा देने की जगह उस रात के लिए मंत्री या वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आरक्षित एक खाली कमरा को खोलकर मात्र रात भर के लिए ठहरने दे देना दरअसल नियम-नीति भंग होने के बावजूद कोई गलत पदक्षेप नहीं है, ऐसा मेरा मानना है।

इन प्रश्नों को लेकर आज भी मैं कुछ हद तक असमंजस तथा चिंतित हूं और हो सकता है कि भविष्य में भी रहूंगा। कई अग्रज तथा बंधु-बांधव मेरे अनुभवों को एक किताब के रूप में आकार देने के लिए अनुरोध-आग्रह कर रहे थे। शायद मेरे मन में उमड़-घुमड़ रहे अनेक प्रश्नों का उत्तर न पाने के कारण उनलोगों के अनुरोधों को आकार देने में संकोच कर रहा था। शायद सामयिक

परिस्थितियों ने मेरी मानसिकता को बदल दिया। कैंसर रोगियों के साथ मिलकर की गई इस यात्रा ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दिखा दी। एक अस्वस्थ शरीर के साथ, विविध चुनौतियों से जूझती एक यात्रा में शामिल होने वाले प्रत्येक कैंसर रोगी और हृदय रोगों से पीड़ित नवजात शिशु ही हैं इस कहानी के मुख्य नायक एवं नायिका।

इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे कई व्यक्तियों के नाम का उल्लेख करना होगा। सबसे पहले मैं तात्कालीन स्वास्थ्य मंत्री और वर्तमान में माननीय मुख्यमंत्री डा. हिमंत विश्व शर्मा के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। जब हवाई जहाज कंपनियों ने कोविड संक्रमण के भय से हमारे रोगियों को ले जाने से मना कर दिया, तब मैंने स्वास्थ्य मंत्री जी को रोगियों को बस से ले जाने का प्रस्ताव दिया था। क्योंकि तब मुंबई के अस्पताल बंद होने लगे थे और तमाम प्रयत्नों के बाद भी रोगी अपनी चिकित्सा जारी रखने में असमर्थ हो गए थे। हमारे आग्रह का समर्थन करते हुए वे एक बार में ही नीता बोल्वो नामक बस कंपनी को करीब पचास लाख रुपए से अधिक धन राशि का भुगतान करने को तैयार हो गए थे। यदि इस धनराशि के भुगतान की स्वीकृति नहीं मिलती तो शायद कभी भी इस यात्रा पर नहीं निकल सकते।

डा मृण्मयी बरुवा नहीं होती तो यह किताब कभी पाठकों तक पहुंच ही नहीं पाती। 2800 किलोमीटर दूर से टेलिफोन पर मैं कहता रहा और मृन्ण्यी अत्यंत धैर्यपूर्वक पन्ने दर पन्ने लिखती गईं। बीच-बीच में कभी नौकरी का दबाव, कभी इस यात्रा के अनुभव का विवरण न दे पाने की मन:स्थित और कभी-कभी आलस के कारण यह किताब अपने आरंभिक काल में अधूरी रह जाती। लेकिन मृण्मयी ने हार नहीं मानी। वह लगातार कहती रही। कई माह तक चले लंबे प्रयास के बाद फोन पर भी यात्रा के अनुभवों को लिखकर पूरा कर लिया। इस तरह से कोई किताब संपूर्ण रूप लिखी गई होगी, यह मुझे पता नहीं। मेरे जीवन की पहली किताब पाठकों के समक्ष रख देने के लिए मृण्मयी के समक्ष चिर कृतज्ञ हूं। दूसरी उल्लखेनीय बात यह है कि हमारे साथ भले ही यात्रा नहीं कर रही थीं, लेकिन रास्ते में गुजरने वाले प्रत्येक राज्य में खाने-पीने के साथ चिकित्सा तथा जाने के लिए सामान आदि की व्यवस्था की थी मेरी बंधु नीता दोशी ने। हमारी यात्रा के योजना के साथ मेरे मुंबई से रवाना होने के पहले तक प्रतिदिन काफी देर तक मेरे साथ फोन पर जुड़ी रहती थीं। यदि उनका सहयोग नहीं मिलता

तो शायद यह यात्रा सफल नहीं हो पाती। नीता के इस अतुलनीय अवदान के लिए मैं और मेरे साथ चलने वाले सहयात्री उनके प्रति सदैव श्रृणी रहेंगे।

असम भवन मुंबई में मेरे सहकर्मी जयेश, ध्रुव, राजू, मृदुल हमेशा मेरे साथ छाया की तरह रहकर सिर्फ इस यात्रा में ही नहीं, असम भवन मुंबई में प्रायः मेरे आरंभ काल से मेरे साथ पूरी एकाग्रता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करते आए हैं। इस यात्रा के दौरान उनका सहयोग उल्लेखनीय रहा। हमारे असम भवन के अभियंता त्रिनयन के उत्साह-उमंग के साथ बढ़ाए गए सहयोग के लिए सदा कृतज्ञ रहूंगा। असम भवन के लखी, प्रदीप, महेन, रवि, नजमूल, वीरेन, संतोष, विपुल तथा दीपशिखा के भाई की मदद ने इस यात्रा को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कोविड काल के आरंभिक दिनों से मैं असम के अपने निजी घर पर एकदम समय नहीं दे पाया। कई बार घर पर उपस्थित रहने का वादा करने के बावजूद कभी समय पर घर नहीं लौट पाता। ऐसा नहीं है कि मैंने एक अच्छा पिता या पति बनने की कोशिश न की हो। परिवार को एकदम समय नहीं देकर सिर्फ जनता के काम में लगे रहने के बारे में मैंने कभी नहीं सोचा था। लेकिन कई बार मैं यह महसूस करता हूं कि इच्छा रहने के बाद भी परिवार को उपयुक्त समय नहीं दे पाया। लेकिन मेरी पत्नी आइनु ने इसके लिए कभी मुझसे शिकायत नहीं की। आज यदि मैं लाचार कैंसर रोगी की यात्रा में सहभागी हो पाया हूं तो इसके पीछे आयनु का बड़ा योगदान है। उनके प्रति में सदैव कृतज्ञ रहूंगा।

मेरा एकमात्र पुत्र रेयान मेरे लिए शक्तिपुंज है। उसने आज तक मुझे स्नेह से सिंचित कर रखा है। मेरी यात्रा के दौरान सुदूर हांगकोंग से फोन पर मेरा उत्साह बढ़ाता रहा। मेरे पिता प्रदीप कुमार शर्मा और मां लीला शर्मा मेरी प्रेरणा हैं। स्कूली जीवन में उन्होंने अपने कर्म से हमारे समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया था। उनलोगों का आर्शीवाद लेकर ही मैं इस यात्रा पर निकला था। मेरा अनुज डॉन का शुभाशीष और यात्रा के दौरान उसके सहयोग को कभी भुला नहीं सकता।

मुझे यह किताब लिखने के लिए उत्साहित करने तथा काफी धैर्य के साथ मेरी पांडलिपि को पढ़ने और अमूल्य सुझाव देने, कई जगहों पर वाक्यों को शुद्ध करने के लिए मैं अपने परम मित्र, विशिष्ठ पत्रकार तथा असम वाणी अखबार के संपादक दिलीप चंदन जी के प्रति कृतज्ञ हूं। मेरे एक और मित्र, विशिष्ठ साहित्यकार तथा सातसरी पत्रिका के कार्यकारी संपादक अतनू भट्टाचार्य को प्रति

आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने मेरी इस किताब को अपने संपादन में प्रकाशित पत्रिका सातसरी में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया और अपने विशेष वचनों से मेरी किताब का महत्व बढ़ा दिया। एक अत्यंत स्नेह से परिपूर्ण परिवार में जन्म लेने के लिए मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं। बड़े भाई, बड़ी भाभी, मंझले भैया, मंझली भाभी, छोटे भैया, छोटी भाभी, चंदन मामा, माइनी मामी, हृदय मामा और जया चाची तथा हमारे प्यारे परिवार के प्रत्येक सदस्य के आशीर्वाद और शुभकामनाओं के लिए उनके प्रति आंतरिक स्नेह और धन्यवाद व्यक्त करता हूं।

इस किताब को हिंदी के पाठकों तक पहुंचाने के लिए हिंदी में अनुदित हेतु दैनिक पूर्वोदय के संपादक रविशंकर रवि के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। इस किताब को हिंदी में अनुवाद कराने के लिए उत्साहित करने के लिए ....। हिंदी में अनुदित पुस्तक के प्रकाशन के लिए.....। उपर्युक्त लोगों का आशीर्वाद न होता तो यह यात्रा कभी सकुशल अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पाती। आज पुनः उनके लोगों को स्मरण करते हुए पाठक समाज के सामने यह पुस्तक प्रस्तुत है।

20 दिसंबर, 2022

- देवाशीष शर्मा

पहला अध्याय

हम हार से नहीं हारते। हार के भय से हार जाते हैं। नकारात्मक सोच से ही हमारी पराजय होती है। प्रयासों की कमी से ही सफलता हमसे छिटक जाती है। अपने मन को कभी मायूस न करें, बस अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जुटे रहें और कामयाबी आपको मिलेगी ही। जिंदगीं में किसी भी मंजिल या मुकाम को पाने के लिए सबसे आवश्यक चीज आपकी मेहनत तथा आपका धैर्य है। अगर आप ईमानदारी से मेहनत करते हुए तथा कभी भी धैर्य ना खोते हुए अपने मंजिल की तरफ कदम बढ़ाते है तो दुनिया की कोई भी ताकत आपके समक्ष अड़चन नहीं बन सकती तथा आपकी सफलता को कोई रोक नहीं सकता।

कैंसर रोगी, लोकमान्य तिलक रेलवे स्टेशन, छत्रपति शिवाजी हवाई अड्डा, असम भवन, 'दीपशिखा' (असम और मुंबई) और टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल के साथ विभिन्न खट्टे-मीठे अनुभवों का 16 वर्षीय एक लंबा सफर। सब कुछ ठीक चल रहा था। असम लोक सेवा आयोग के एक अधिकारी होने के चलते काम और जिम्मेदारी अनेक।

समाज व लोगों के लिए कुछ भला करने का सौभाग्य हर किसी के नसीब में नहीं होता। लोक सेवा ही एक ऐसा पेशा है जो अपने मन को बोलने की स्वतंत्रता देता है तथा सभी दिशाओं में इच्छा के अनुसार काम करने का अवसर प्रदान करता है। महज इसके लिए जरूरत होती हैं सपनों की पंख वाली उड़ान, नई परियोजनाएं

तथा लोग व समाज के लिए कुछ कर गुजरने की आपार आकांक्षाएं।

उस दिन को याद कर अभी भी मेरा रोम-रोम रोमांचित हो उठता है। 25 मई,1992 का दिन था, हम 172 लड़कों ने कई चुनौतियों का सामना करते हुए बिना किसी 'गॉडफादर' व 'गॉडमादर' के, अपने एकल प्रयास से असम लोकसेवा आयोग के प्रोवेशनर के रूप में नौकरी जीवन का आरंभ किया था।

असम प्रशासनिक पदाधिकारी महाविद्यालय में एक महीने का प्रशिक्षण पूरा कर 28 जून,1992 को बरपेटा के सरभोग स्थित बरनगर राजस्व कार्यालय में राजस्व अनुमंडल अधिकारी (संलग्न) के रूप में पदभार संभाला था। सरभोग में चीठा, जमाबंदी, सीमा निर्धारण, मंडल, लाट मंडल, प्रारंभिक कानूनी जांच और कानून-व्यवस्था संबंधी कार्य के साथ एक व्यस्त जिंदगी की शुरुआत हुई । ढाई साल के बाद मेरा तबादला असम सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग में प्रोटोकॉल अधिकारी के रूप में हुआ। वर्ष 1994 में असम में निर्वाचन सूची का नए सिरे से गहन पुनरीक्षण चल रहा था। उसी दौरान केंद्रीय पर्यवेक्षक के स्वागत के लिए बरपेटा जिला प्रशासन की ओर से मुझे बोरझाड़ हवाई अड्डा आना पड़ा था और हवाई अड्डे में ही मेरी मुलाकात श्री ध्रुव हजारिका जी से हुई। मुलाकात के दौरान उन्हें मेरी कोई बात अच्छी लगी। उस दौरान वे असम सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग में उप-सचिव के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने मुझे कहा था- 'देवाशीष, जल्द ही तुम्हें जीएडी ले आएंगे। (जीएडी यानी सामन्य प्रशासन विभाग)।

ध्रुव हजारिका जी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। एक महीने अंदर ही मेरे तबादला का हुक्म जारी हो गया। तबादले के उस हुक्म से मेरी जिंदगी में एक नयी दिशा मिल गई। इस वजह से मैं हजारिका जी के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहूंगा। नौकरी की जिंदगी में खून का रिश्ता न होने के बावजूद कुछ रिश्ते खून के रिश्ते से ज्यादा प्रगाढ़ हो जाते हैं। श्री ध्रुव हजारिका जी और उनकी पत्नी बोनु भाभी मेरे लिए ऐसे ही दो व्यक्ति हैं।

बचपन से ही अंग्रेजी माध्यम का छात्र होने के नाते शायद कार्यालयी काम-काज में फटाफट अंग्रेजी बोलकर दूसरे पर हावी बनने की कोशिश करना तथा कॉन्वेंट अंग्रेजी में मजबूत पकड़ के कारण खुद को थोड़ा अलग महसूस करने का मेरा एक अहंकारी स्वभाव था। समय के साथ मेरी मानसिकता में भी बदलाव आने लगा और एहसास होने लगा कि एक प्रशासनिक अधिकारी के लिए दूसरे पर हावी बनने का अस्त्र अंग्रेजी नहीं, बल्कि कार्यस्थल की स्थानीय भाषा है। मेरे

उस आचरण की बात याद आते ही अब मुझे खुद पर हंसी आता है। बहरहाल, प्रोटकॉल ड्यूटी, वीवीआईपी, वीआईपी, आवर्त भवन में स्थान दिया जाए या ब्रह्मपुत्र अशोका होटल में, एंबेसडर गाड़ी दी जाये या मारुति 800 के बीच माथपच्ची करते हुए निरंजन घोष जी, बरबाबू रंजीत नाग दा और ध्रुव हजारिका जी के बीच दो साल बिताने के बाद 1996 में माननीय राज्यपाल जी के विशेष अधिकारी के रूप में मेरा तबादला राजभवन कर दिया।

उस वक्त असम के राज्यपाल माननीय लोकनाथ मिश्र जी थे। माननीय राज्यपाल मिश्र जी दूसरे लोगों से थोड़ा अलग थे। वे झाड़-फूंक में अत्यंत उस्ताद थे। हर रविवार को असम तथा पूर्वोत्तर के दूर-दराज क्षेत्रों से आने वाले रोगियों के लिए राजभवन के दरबार हॉल में एक दरबार लगाया जाता था। दरबार में वे मंत्र पाठ कर और रोगी के शरीर में फूंक मारकर रोग से निजात दिलाने की कोशिश करते थे। साथ ही छोटे-छोटे बोतलों में तेल एवं पानी भरकर मंत्र पाठ-फूंक मारकर रोगियों के हाथ में थमा देते थे और उन्हें तेल को शरीर में लगाने तथा पानी को पीने की सलाह देते थे।

राजभवन में झाड़-फूंक के लिए बोतलों की आपूर्ति करना, माननीय राज्यपाल को नए-नए मंत्र सीखने के लिए असम के विभिन्न स्थानों से प्रसिद्ध तांत्रिकों को खोज कर लाना, उन दिनों मेरी सिविल सेवा के लिए एक नया अनुभव था। आयुक्त अशोक अरोड़ा, सरस्वती प्रसाद, अनिल कुमार शेषण, कैप्टन हीरामठ, कैप्टन अनुभव नेगी, हरमीत सिंह (आईपीएस), सिन्हा जी, शिवाशीष भौमिक, संयुक्त सचिव भट्टाचार्य जी, सइकिया जी और पंकज ठाकुर, अब्दुल और ड्राइवर शरत डेका के साथ मिलकर सुचारू रूप से राजभवन का संचालन करता था- जिनकी स्मृति आज भी मेरे मन में सजीव है।

लोकनाथ मिश्र के बाद लेफ्टिनेंट जनरल श्रीनिवास कुमार सिन्हा सर के साथ पहली बार मिल्ट्री सिस्टम ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, अभिलेख संरक्षण करना, लाचित बरफुकन, चिलाराय, गोपीनाथ बरदलै सहित असम के प्रसिद्ध व्यक्तियों को भारत तथा विश्व के दरबार में पहचान दिलाना, यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट असम (अल्फा) के साथ संबंध स्थापित कर उन्हें शांति वार्ता के लिए बुलाना आदि कई मूल्यवान अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला। उस वक्त भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। तब प्रधानमंत्री के सचिव भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी शक्ति सिंह जी थे, गृह मंत्री माननीय एल.के. आडवाणी, रॉ के एक

उच्च अधिकारी जनरल सिन्हा के कनिष्ठ भाई श्री वाई.के. सिन्हा, असम सरकार के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी जी.एम. श्रीवास्तव जी और रंगिया स्थित भारतीय सेना की 21वीं माउंटेन डिवीजन के शीर्ष अधिकारी मेजर जनरल गगणजीत सिंह थे।

राज्यपाल सिन्हा के आदेशानुसार मैं राज्यपाल के दूत के रूप में यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट, असम (अल्फा) के प्रतिनिधियों से अक्सर मिलने जाता था। 2001 में अल्फा के साथ वार्ता के लिए सिंगापुर जाते समय राज्यपाल सिन्हा मुझे और कैप्टन अनुभव नेगी को साथ लेकर गए थे और पूरी वार्ता प्रक्रिया में हमें काफी करीब से जुड़ने का मौका मिला था। ये सारी बातें उन्होंने अपनी अंग्रेजी पुस्तक-गार्डिंग इंडियाज इनटेगरिटी: ए प्रोएक्टिव गवर्नर स्पीक्स नामक पुस्तक में विस्तृत रूप से उल्लेख किया है।

शायद मेरा सौभाग्य था कि जनरल सिन्हा जैसे एक सर्वगुण संपन्न दक्ष व्यक्ति के सान्निध्य में आने का मौका मिला था। भारतीय सैन्य वाहिनी, विदेश सेवा और भारतीय प्रशासन में उनका नाम हमेशा स्वर्ण अक्षरों से लिखा रहेगा। पांच साल तक उनके साथ काम करने के बाद जिंदगी, प्रशासन और सामाजिक दायित्व बोध के प्रति मेरा जो दृष्टिकोण था, उसमें काफी बदलाव आ गया था। नौकरी जीवन के प्रातःकाल में ऐसे एक महान व्यक्ति के सान्निध्य में आने का मौका मिलना मेरे लिए भगवान का वरदान स्वरूप था।

2003 में लेफ्टिनेंट जनरल एस.के. सिन्हा सर का जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल के रूप में तबादला हो गया और ठीक दो महीने के बाद मेरा तबादला मुंबई के वाशी स्थित 'असम भवन' में हो गया। 'असम भवन' निर्माण के सात साल पूरा होने के बावजूद विभिन्न कारणों से तब तक उपयोग की स्थिति तक नहीं पहुंच पाया था। कंधे पर काम का एक भारी-भरकम दायित्व वहन कर मैं 2003 के अक्टूबर महीने में हाथों में एक सूटकेस और अपना गिवसन गिटार लेकर मुंबई रवाना हो गया था। जर्जर स्थिति में एक विशाल भवन। मुख्य द्वार कंटीले तारों से घिरा हुआ था। विद्युत का कनेक्शन भी नहीं था। भवन की देख-रेख के लिए त्रिनयन संदिकै नामक लोकनिर्माण विभाग के एक सेक्शन अधिकारी तैनात थे। असम भवन में पहली बार प्रवेश करते समय संदिकै जी के सफेद रंग का जर्मन स्पिट्ज डॉग ने भौंक-भौंक कर मेरा स्वागत किया था। त्रिनयन जी ने काफी सम्मान के साथ मेरे रहने के लिए सरकारी क्वार्टर का साफ-सफाई करा दी थी,

जहां सिर्फ टिन का एक बिस्तर था। कई दिनों तक उन्होंने खुद खाना पकाकर मुझे खिलाया था। त्रिनयन जी का नीले रंग का एक एलएमएल वेस्पा स्कूटर हुआ करता था, जिसमें सवार होकर हम दोनों नवी मुंबई स्थित नगर निगम के कार्यालय सहित विभिन्न सरकारी दफ्तरों का चक्कर लगाते थे। हमलोग 'असम भवन' को जल्द से जल्द खोलने के लिए सरकारी अनुमति आदि संग्रह करने में जुट गए थे। उस वक्त गुवाहाटी की बिल्डिंग शाखा के कार्यकारी अभियंता अजय बरदलै ने एक ठेकेदार से 40 हजार रुपए उधार लेकर असम भवन में खराब ट्रांसफार्मर की मरम्मत के लिए भेज दिया था। यदि वे ऐसा नहीं करते तो हमें शायद काफी दिक्कतों सामना करना पड़ सकता था। (उक्त धन राशि बाद में नियमित रूप से ठेकेदार को वापस कर दी गई थी।)

मेरे आगमन के कुछ दिन बाद ही जब खराब पड़े ट्रांसफार्मर की मरम्मत के उपरांत 'असम भवन' बिजली की रोशनी से चमक उठा था। तब नबी मुंबई में रहने वाले असमिया लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई थी। उस वक्त 'असम भवन' को चलाने के लिए निजी हाथों में देने अर्थात पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल की चर्चा हो रही थी। इस बात से मुंबईवासी असमिया बिल्कुल खुश नहीं थे। जानकारी के अनुसार मुंबई असम एसोसिएशन की ओर से विभिन्न समय पर प्रतिनिधियों का दल असम दौरा कर सत्तारूढ़ राज्य सरकार तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई जी से 'असम भवन मुंबई' को कार्यकारी बनाने का आवेदन-निवेदन करते थे। 'असम भवन मुंबई' को कार्यकारी की स्थिति तक लाने तक इस लंबी यात्रा के पीछे एक रोमांचक कहानी है। यह कहानी विस्तृत रूप से आने वालों दिनों में पाठकों के सामने लाऊंगा।

2004 के मई महीने की एक शाम। उस समय मुंबई महानगर में रिमझिम वर्षा होते रहती थी। पहली मंजिल के दाहिने ओर के कोरिडोर के शेष भाग में मेरा क्वार्टर था। क्वार्टर की खिड़की के पास बैठकर मैं चाय पी रहा था। सामने ही सेंटर वन शोपिंग मॉल और थोड़ी ही दूरी पर वाशी रेलवे स्टेशन। उन दिनों इन तीनों बड़ी इमारतों के अलावा असम भवन के आस-पास कई विशेष निर्माण कार्य नहीं हुआ था। ठीक उसी समय मुंबई में रहने वाले असम के परिवारों में से सबसे पुराने परिवार को प्रतिनिधित्व करने वाली सुश्री रुपांजली बरुवा दीदी और उनके साथ आए श्री सुरजीत डेका नामक एक व्यक्ति हाथों में फूलों का एक गुलदस्ता लेकर असम में भवन में मुझे मिलने पहुंचे थे।

दूसरा अध्याय

मुंबई, 25 मार्च, 2020।

चीन के बुहान शहर के हुबेई नामक इलाका में पृथ्वी पर कभी नहीं सुने जाने वाले कोविड-19 नामक एक रोग फैलने की जानकारी चीन ने पहली बार 31 दिसंबर, 2019 को विश्व स्वास्थ्य संगठन को दी। 30 जनवरी, 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस रोग को एक ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी करार दिया और उसी वर्ष के 11 मार्च को कोविड-19 को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया। काफी कम समय के अंदर यह रोग बुहान से पूरे विश्व में फैलने लगा।

इस कहानी की पटकथा में कोविड-19 के बारे में विस्तृत रूप से विभिन्न स्तर पर कई बातें लिखी गई हैं। भारतवर्ष में कोविड-19 द्वारा संक्रमित पहले व्यक्ति की शिनाख्त 30 जनवरी, 2020 को केरल में हुई थी। वह चीन के बुहान शहर से भारत आया था। केरल से शुरू हुए इस रोग का संक्रमण धीरे-धीरे पूरे देश फैलने लगा और इसके संक्रमितों की संख्या हजारों की संख्या में पहुंच गई। केरल सहित महाराष्ट्र, नई दिल्ली, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और तमिलनाडु में इस रोग का प्रभाव अधिक देखा गया । तथ्यों के अनुसार विदेश भ्रमण से भारत लौट रहे लोगों से इस रोग का संक्रमण भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों में हुआ था। इस रोग के संक्रमण की चुनौती को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने विभिन्न तरह के प्रतिरोधक कदम उठाने का निर्णय लिया। इनमें से - (क) सामाजिक दूरी बनाए रखना, (ख) साबुन से बार-बार हाथ धोना व सेनिटाइजर का प्रयोग, (ग)

'मास्क' परिधान करना आदि है। इन दिशा-निर्देशों का पालन करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार 24 मार्च, 2020 को 'लॉकडाउन' की घोषणा कर दी । इस घोषणा के तहत सभी शिक्षण संस्थान, व्यापार, संस्था तथा यातायात बंद कर दिया गया। सिर्फ अत्यावश्यकीय सामग्री की बिक्री करने वाली दुकानों तथा आपातकाली सेवाओं जैसे - हॉस्पिटल, फार्मेसी, पेट्रोल पंप, रसोई गैस एजेंसी आदि खोलने की अनुमति दी गई थी।

लॉकडाउन शुरू होने के कुछ दिन बाद ही देश को तथा नागरिकों को कई तरह की चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ा। यह देशवासियों के लिए अप्रत्याशित स्थिति थी। ऐसी बेचैनी और संशय की स्थिति कभी नहीं हुई थी। पूरी तरह से अनिश्चितता की स्थिति। एक भयावह अनुभव। एक ओर देश की आर्थिक स्थिति सर्वाधिक निचले स्तर तक पहुंच गई और दूसरी ओर इसका प्रतिकूल असर अधिकतर व्यवसायिक संस्थानों के व्यापार-वाणिज्य पर पड़ने लगा। यहां तक कि बड़ी-बड़ी अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले अधिकतर लोगों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी। साथ ही कई कर्मचारियों के वेतन में भी कटौती हुई। जिससे इन कंपनियों में कच्ची सामग्री आपूर्ति करने वाली फैक्ट्रियों व अन्य संबंधित उद्योगों में दैनिक मजदूरी करने वाले श्रमिकों का भी काम बंद हो गया।

मुंबई महानगरी में भी इस लॉकडाउन का व्यापक असर पड़ा था। मेरिन ड्राइव के किनारे-किनारे खुली हवा का लुत्फ उठाने वाली भीड़ भी अचानक गायब हो गई। चौपाटी के नजदीक लगने वाली स्ट्रीट फूड की छोटी-छोटी गाड़ियां भी गायब हो गईं। कोलाब और फेशन स्ट्रीट पर लगने वाली विभिन्न डिजाइनों के कपड़ों की दुकानें भी नदारद हो गईं। मुंबई के प्रख्यात केफे मनडोगा और लियोपोल्ड केफे में गाना सुनते हुए स्टिक चिकन खाने और ड्रॉफ्ट बियर पीने के लिए भी कोई नहीं आता था। जिस महानगरी को कभी नहीं सोने वाली कहा जाता है, वह महानगरी दोपहर के वक्त भी श्मशान में तब्दील हो गयी। सिर्फ मुंबई ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का माहौल ऐसा था। इस स्थिति का मुकाबला करने के लिए मानसिक रूप से कोई भी तैयार नहीं था। चहुंओर स्थिति तनावपूर्ण बन गई थी। लोगों का अवसाद बढ़ रहा था। आम आदमी के बीच कुछ नई चीजें आ गई थीं, जैसे वर्क फ्राम होम, जूम, गुगुल मीट, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वर्च्युअल मीटिंग आदि। मानव सभ्यता एक नई दिशा की ओर चलने लगी थी। वाहनों का चलना बंद हो जाने से व्यस्त सड़कें वीरान हो गई थीं तथा वीरान शहरों में नजदीक के जंगलों से

जानवर निकलकर मुक्त विचरण करने लगे थे।

असम भवन के स्वागत कक्ष में असम भवन में कार्य कर रहे असम के श्रमिक तथा विभिन्न कल-कारखानों में कार्यरत सैकड़ों लोग रोज फोन करने लगे थे। उनमें वैसे लोगों की संख्या ज्यादा थी, जिन लोगों की स्थिति पैसे व खाद्य सामग्री नहीं होने के कारण दयनीय बन गई थी। करीब 16 साल मुंबई में रहने के बावजूद कभी नहीं मालूम पड़ा था कि मुंबई महानगर स्थित विभिन्न फैक्ट्रियों, हिन्दी सिनेमा उद्योग, वस्त्र उद्योग, प्लास्टिक कंपनी, सुरक्षा कर्मी, ओला-उबेर चालक, निर्माण खंड के श्रमिक, घरेलु सहायक इत्यादि विभिन्न कार्यों में असम के 40 हजार से अधिक युवक-युवतियां काम कर रहे थे। (इन लोगों में अधिकतर श्रमिक नगांव, होजाई, सिलचर, करीमगंज, बंगाईगांव, कोकराझाड़ तथा मंगलदै के थे।)

मदद के लिए उन लोगों से आवेदन मिलने के बाद असम भवन, मुंबई की ओर से स्थानीय मुंबईवासी असमिया जनता की सहायता तथा असम सरकार की ओर से बीस लाख रुपए संग्रह कर एक व्यापक सहायता अभियान का शुभारंभ किया गया। अभियान के तहत असम भवन, मुंबई की विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं, जैसे - 'राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस', 'मेस' ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज', 'नीलसिंधी कंस्ट्रक्शन', 'असम एसोसिएशन, मुंबई', बिष्णुप्रिया मणिपुरी सोसाइटी', 'गामखारु' साथ व्यक्तिगत रूप से जानी-मानी अभिनेत्री सीमा विश्वास, न्यायाधीश उज्ज्वल भुयां, नीता दोशी, पारुल नेगी, लंदन से डॉ. नृपेन बरकटकी, अमेरिका से बरसा बकुल बरुवा इत्यादि ने इस प्रयास में सहायता का हाथ आगे बढ़ाया।

स्थिति को देखते हुए हमारे पास दो रास्ते थे- पहला कोविड-19 से डर कर घर के अंदर ही रहें और दूसरा सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए (जरूरी सावधानियों का पालन करते हुए) भय व संशय के बीच बाहर निकल कर आम जनता के लिए कुछ कर गुजरना। आपदा में फंसे प्रवासी असमिया लोगों को भरोसा था कि मुंबई महानगर में असम सरकार को प्रतिनिधित्व करने के नाते असम भवन, मुंबई उनके लिए जरूर कुछ करेगा। उस समय हाथ थाम कर बैठे रहने के बजाय अपने लोगों के लिए कुछ करने का वक्त था।

40 हजार से भी अधिक श्रमिकों के पास जाना कोई मामूली बात नहीं थी। इसके लिए जन-बल, पूर्व निर्धारित योजना एवं पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता थी। दूसरी ओर बाहर निकलने के लिए कड़े सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करना पड़ता था।

दरअसल, एक सरकारी अधिकारी के सभी दायित्वों सरकारी नियमों में लिखित रूप से नहीं होता। हमारी सिविल सेवा की नौकरी आलू की भांति होता है- किस व्यंजन में कब साथ देना होगा इसकी कोई पूर्व सूचना अधिकतर मामलों में नहीं होती। सामने जो भी दायित्व मिल जाता है इसका हर हाल में समाधान करना है। इस समाधान में प्रशिक्षण से ज्यादा तात्कालिक बुद्धि अधिक काम आती है। असम भवन, मुंबई को असम से इलाज के लिए आए कैंसर के रोगियों की सेवा में समर्पण करने के लिए सरकार को अवगत कर संस्थान को एक सेवा केंद्र में तब्दील करना भी इन दायित्वों में से एक था। असम भवन को कैंसर रोगियों को समर्पित करने का प्रस्ताव संबंधित पक्ष आसानी से स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। हमें मालूम था कि मुंबई व महाराष्ट्र में असम सरकार के सरकारी कार्यों का ज्यादा झंझट नहीं रहता। इसलिए असम भवन के दो कमरों को सरकारी काम-काज में आने वाले अधिकारियों के लिए आरक्षित कर अन्य सभी कमरों को असम से आए कैंसर रोगियों के लिए आरक्षित करने पर उन्हें ज्यादा मदद मिलेगी। बेशक असम भवन को असम के कैंसर मरीजों को सौंप दिया गया, लेकिन इस संदर्भ में सरकारी निर्देश जारी करने में कम से कम 12 साल लग गए।

सरकारी नौकरी करते-करते कुछ साल बाद हम में से अधिकर एक मशीन में तब्दील हो जाते हैं। लालफीताशाही और सरकारी भाषा में लिखित इन नीति-नियमों में इस कदर गुम हो जाता हूं कि जिंदगी के कुछ सुंदर व छोटी-छोटी बातें भी महसूस करना भूल जाता हूं। अगर कभी मानवता और सरकारी नीति-नियमों में से किसी एक को चुनना पड़ा तो चाहे कुछ पल के लिए ही क्यों न हो मेरा अनुभव हमेशा अपना विवेक का साथ देगा और मानवता का पक्ष ही लेना उचित समझेगा। सरकारी नीति-नियम आम जनता के कल्याण हेतु लिखा गया है। मेरा मानना है कि एक सरकारी अधिकारी के रूप में हमेशा यह याद रखना चाहिए कि इन नीति-नियमों का पालन करते समय जनता का कल्याण ही सर्वोत्तम है।

मेरी जानकारी के अनुसार आपातकालीन स्थिति में असम से आकर भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में कार्यरत श्रमिकों तथा कर्मचारियों को असम सरकार की ओर से सहायता करने की परिस्थिति इससे पहले कभी नहीं हुई थी। ऐसी एक विषम परिस्थिति में असम भवन के सहकर्मी जयेश कुमार, ध्रुवज्योति शर्मा, मृदुल हजारिका, राजू शर्मा, लक्षीराम कलिता, हरिष मंडल, विपुल मालाकार, 'दीपशिखा' के केयरटेकर जियाउर रहमान, वाहन चालक संतोष और गणेश को साथ लेकर

सहायता वितरण का कार्य शुभारंभ किया गया। देश के अन्य असम भवनों की तुलना में असम भवन, मुंबई के कर्मचारियों की संख्या काफी कम। लेकिन सौभाग्य से इस भवन के प्रत्येक कर्मचारी अत्यंत निष्ठावान और जरूरत पड़ने पर उनमें कठोर परिश्रम करने की क्षमता है। वे हमेशा जारी किए गए सभी निर्देश निष्ठा से पालन करते आए हैं। छोटी टीम होने के बावजूद इन कर्मठ लोगों के साथ मिलकर किसी परिस्थिति व चुनौती का सामना करने में हमें कभी पीछे हटने नहीं पड़ा। (इन सभी के प्रति मैं हमेशा आभारी रहूंगा)

नवी मुंबई के तुलजा इलाके से हमने सहायता अभियान शुरू कर दिया और देवीशापर, तंद्रे, घोटगांव, खेरना आदि इलाकों के लगभग चार हजार लोगों तक अभियानकारी दल पहुंचा। समानांतर रूप से वाशी स्थित असम भवन में भी एक राहत शिविर लगाया गया, जहां सुबह 10 से अपराह्न 5 बजे तक असम भवन प्रबंधन राहत वितरण कार्य में जुट गए। इस अभियान को असम की बेटी तथा हिंदी फिल्म जगत की जानी-मानी अभिनेत्री सीमा विश्वास ने भी काफी मदद की। इसके साथ ही तुलजा इलाके के धर्मेंद्र कुर्मी, कुश चेतिया, अजय दैमारी, मनोज बोरा, पंजक बरुवा आदि लोगों ने हमें हर संभव मदद की। सुबह होते ही हम एक छोटी गाड़ी में राहत सामग्री लादकर 'दीपशिखा' की एंबुलेंस में बैठकर लक्ष्य स्थान की ओर निकल पड़ते थे। लक्ष्य स्थान पहुंचने से पहले उक्त इलाके के स्थानीय लोगों की शिनाख्त कर सामग्री वितरण का स्थान पहले ही निर्धारित कर लिया जाता था। उक्त स्थान पहुंचते ही इलाके के स्वयंसेवकों की मदद से राहत सामग्री का वितरण किया जाता था। उन इलाकों में रहने वाले असम के लोगों से मिलकर आश्चर्य व अच्छा भी लगता था, क्योंकि वे लोग सरकारी नौकरी पर भरोसा न करते हुए मुंबई आकर अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए संघर्ष कर रहे थे। जीवन संग्राम के लिए चुने गए लक्ष्य तक पहुंचने के लिए दिन-रात संघर्ष करने वाले इन लोगों में से अधिकतर दिहाड़ी मजदूर, सुरक्षा गार्ड, कंप्यूटर ऑपरेटर, अर्द्ध प्रशिक्षण प्राप्त श्रमिक, फैक्ट्री में काम करने वाले श्रमिक और हिंदी फिल्म उद्योग से जुड़े लोग थे। अचानक होने वाली इस आपदा की घड़ी में इन लोगों की मदद कर मन में एक संतुष्टि भी मिली थी।

उस वक्त तुलजा में घटित की एक रोमांचक घटना की याद आ रही है। तुलजा नामक स्थान नवी मुंबई के वाशी स्थित असम भवन से लगभग 17 किलोमीटर दूरी पर स्थित एक औद्योगिक क्षेत्र है। वहां जाने के लिए असम भवन से सी बी

डी बेलापुर होते हुए खारघर पार करने के बाद कालांबली पहुंचने से पहले मिलने वाली फ्लाई ओवर के बाईं ओर से जाना पड़ता है। तुलजा में भारतवर्ष की प्रतिष्ठित कंपनियों की फैक्ट्रियां हैं। यह पूरा इलाका छोटे-छोटे गांवों में बंटा हुआ है। असम के कई हजार श्रमिक, तकनीशियन तथा उनके परिवार वहां कई सालों से रह रहे हैं। तुलजा जाने पर असम का एक छोटा गांव ही नजर आता है। असम के लगभग सभी कोने के लोग वहां मिल जाता है।

हम तंद्रे नामक गांव पहुंचे थे। वहीं पर हमारे कुछ स्वयंसेवियों से मिलना हुआ। उस दिन उनके चेहरे से हमेशा दिखने वाली हंसी गायब थी। हम थोड़ा आश्चर्य चकित हो गए थे। बाद में पता चला कि उन लोगों में कुछेक ने इस सहायता अभियान को राजनीतिक रूप देना चाहा था। कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा यह फैलाया गया था कि उक्त सहायता अभियान सिर्फ कुछ चुनिंदा समुदाय के लोगों के लिए है। लोगों के बीच एक असमंजस की स्थिति और विभाजन पैदा हो गई थी। कुछ लोग राहत सामग्री लेने में हिचकिचा रहे थे, कुछ पहले से अधिक आग्रह के साथ राहत सामग्री ले रहे थे, कोई निष्पक्ष बैठे थे और कुछ लोग जले पर नमक छिड़कते हुए परिस्थिति का मजा ले रहे थे। ऐसी स्थिति में मैने कुछ जान-पहचान वाले भाई जैसे सेवयंसेवियों की मदद से इलाके के ग्राम प्रधान को इस बात की जानकारी दी। उन्हें समझाया गया कि असम सरकार की ओर से उक्त राहत वितरण योजना असम से आने वाले प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए है। यह राहत कार्य उन लोगों के लिए है जिन्हें लॉकडाउन के कारण आर्थिक तंगी के साथ-साथ खाद्य सामग्री जुटाने में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा रहा है। साथ ही उन्हें समझाया गया कि सिर्फ असम के ही नहीं, बल्कि असम के श्रमिक जिस स्थान पर ठहर रहे हैं, वहां के मराठी व देश के अन्य प्रांतों से आने वाले जरूरतमंदों की भी हर संभव मदद की जा रही है। यह सुनकर ग्राम प्रधान ने काफी प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने नजदीक ही खड़े कुछ पहलवान युवाओं को मराठी भाषा में कुछ कहा और उनकी बात सुनकर वे युवा तुरंत हमारे पास से चले गए। उन युवाओं के जाने के करीब आधा घंटा के बाद इस परिस्थिति के पैदा करने वाले लोग शर्म के मारे धीरे-धीरे राहत सामग्री लाने वाली ट्रक के करीब पहुंचे और सामान उतारते हुए दूसरे लोगों को भी सामान उतारने के लिए इस कदर आदेश देने लगे जैसे कि उनके कारण ही अभियान विलंब हो रहा है। बाद में मालूम चला कि ग्राम प्रधान ने उन स्वयंभू युवा नेताओं को फटकार लगाई थी कि अगर ऐसे नेक

कार्यों में दुबारा अड़ंगा डालने व राजनीति करने की कोशिश करेंगे तो 'जमकर धुनाई' होगी, जिसके चलते वे राहत वितरण कार्य में जुट गए थे। यह सोच कर हैरानी होती है कि आपातकालीन स्थिति में कुछ लोग सस्ती राजनीति करने से बाज नहीं आते।

इस तरह हम तुलजा के साथ-साथ अंधेरी, भिवंदी, सिउरी, घाटकपार, चेंबुर, मिरा रोड, माहुल, डकयार्ड रोड, खारघर, काम्टे, घनछली, कपारखेरनी, टुर्बे, सानपारा, नेरुल, वेंगनवाड़ी, वारसोवा, जीएन नगर, सांताक्रूज, देहिसर, दंविली, मड् आइलैंड, मलोवान और मालदा सहित विभिन्न स्थानों पर सामूहिक रूप से रहने वाले असम के लोगों को राहत सामग्री वितरण करना शुरू कर दिया। राहत सामग्री की मांग अधिक थी, लेकिन मांग के अनुसार हमारे पास पर्याप्त धनराशि नहीं थी। इस अभियान के लिए असम सरकार ने 20 लाख रुपए का अनुदान दिया था। असम भवन के निचले तल्ले को गोदाम में तब्दील किया गया था और उसी गोदाम से हर रोज सुबह जरूरत के हिसाब से राहत सामग्री को ट्रक में लादकर मुंबई के विभिन्न स्थानों में भेजा गया था।

धीरे-धीरे मुंबई में कोविड संक्रमण की संख्या पहले की तुलना में बढ़ने लगी, फिर भी विश्व के अन्य देशों के मुकाबले भारतवर्ष में मृत्यु दर काफी कम थी। मृतकों में से ज्यादातर उम्रदराज तथा कोविड के साथ-साथ अन्य रोग से पीड़ित व्यक्ति थे। दूसरी ओर मीडिया में कई तरह की टिप्पणियां देखने और पढ़ने मिली थी। कुछेक ने लॉकडाउन नीति को कोविड के संक्रमण को रोकने में कारगर करार दिया था और अन्य कुछ लोगों द्वारा इस रोग को लेकर जारी नीति-नियमों को असर्कसंगत करार दिया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन को भी कोविड-19 को लेकर विभिन्न समय पर विवादित बयान जारी करते देखा गया था। इस बीच चर्चा का विषय बन गया था कि दरअसल कोविड-19 एक प्राकृतिक रोग है या फिर चीन के प्रयोगशाला में निर्मित एक बायोलॉजिकल परमाणु बम है। इसके साथ ही इस रोग से जुड़ी प्रत्येक प्रतिक्रिया पर भी बहस शुरू हो गई थी, जो समूचे विश्व को पहले कभी नहीं देखने व सुनने वाली परिस्थिति की ओर ले जा रही थी। सामान्य लोगों को इस परिस्थिति को समझ पाना अत्यंत कठिन हो गया था।

ऐसी एक भ्रामक परिस्थिति में चिकित्सा के लिए असम से मुंबई आने वाले कैंसर के मरीज एक चक्रव्यूह में फंस गए थे। इन रोगियों में से एक ऐसा वर्ग भी था जो चिकित्सा समाप्ति के बाद घर वापसी की तैयारी कर रहा था। कई महीनों

तक मुंबई में रहने के बाद वे लोग अपने परिजनों से मिलने के लिए बेचैन थे। दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग भी था जिन्हें टाटा हॉस्पिटल में प्रारंभिक चिकित्सा के बाद रेडिएशन, कैमोथेरेपी आदि की चिकित्सा असम के किसी अस्पताल में कराना था। लॉकडाउन के चलते उन्हें रेडिएशन, कैमोथेरेपी आदि कराने के लिए विलंब हो रहा था। जिसके चलते इन रोगियों की चिंता बढ़ गई थी, क्योंकि उन्हें मालूम था कि अगर समय पर चिकित्सा नहीं मिलने पर उनके शरीर में कैंसर रोग धीरे-धीरे फैल जाएगा। वहीं, एक वर्ग ऐसा भी था जो कैंसर रोग की शिनाख्त के बाद मुंबई में उच्च इलाज के लिए आया था। अचानक लॉकडाउन हो जाने से इन लोगों की आशा पर पानी फिर गया था। टाटा हॉस्पिटल के ओपीडी (रोगी बाहरी विभाग) आंशिक तौर पर खुले रहने के बावजूद वहां पहले की भांति नए रोगियों का पंजीयन व चिकित्सा नहीं हो रही थी। बहरहाल लॉकडाउन के चलते इन रोगियों की चिकित्सा प्रक्रिया शुरू करने का मूल्यवान समय नष्ट हो रहा था। ऐसी एक स्थिति में मुंबई में फंसे प्रत्येक रोगी तथा उनके अभिभावकों के मन में धीरे-धीरे एक गहरी चिंता व अवांछित मानसिक यातना ने घर बना लिया था।

18 अप्रैल, 2020 की रात्रि करीब 11 बजे जयेश और ध्रुव के साथ राहत वितरण पर चर्चा कर रहा था। ठीक उसी समय माननीय तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा जी का फोन आया। उन्होंने कहा कि असम में कोविड से लड़ने के लिए भारतवर्ष तथा विदेश के विभिन्न स्थानों से मास्क, पीपीई किट, फेसशील्ड, वेंटिलेटर तथा अन्य जरूरी सामग्री संग्रह करने की कोशिश की जा रही है। स्थिति को भांपते हुए रिलायंस इंड्रस्टीज के मालिक मुकेश अंबानी भी असम को 10,000 पीपीई किट देने के लिए आगे आए हैं। उन्होंने मुझे आदेश दिया कि रिलायंस इंड्रस्टीज के वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क कर इन पीपीई किट्स को यथाशीघ्र असम भेजने का इंतजाम किया जाए।

दूसरे ही दिन से मुझे कई लोगों का फोन आना शुरू हो गया। उनमें से कोई था वस्त्र उत्पादक, कोई कंप्यूटर सॉफ्टवेर से जुड़ा व्यक्ति, कोई दवा वितरक और कोई फल व कपड़ा व्यवसायी। मुझे आश्चर्य हुआ कि पल भर में ही वे सभी लोग पीपीई किट, वेंटिलेटर, फेसमास्क तथा फेसशील्ड व्यापारी में तब्दील हो गए। मैंने फल व्यापारी से पूछा था कि वे कैसे पीपीई किट वितरक बन गए थे। उन्होंने गंभीर शब्दों में जवाब दिया था कि यह सवाल मुझे ऊपरी स्तर से करना चाहिए। फिलहाल कुछ दिन बाद गुवाहाटी पहुंचकर पता चला कि कई पीपीई किट

कंसाइनमेंट असम सरकार के संबंधित अधिकारियों ने रद्द कर दिया था, क्योंकि ये सभी किट्स निम्न स्तरीय गुणवत्ता संपन्न थे। बहरहाल, मुकेश अंबानी जी की रिलांयस इंडस्ट्रीज द्वारा प्रस्तुत सामग्री को भेजने की तैयारी पूरी कर ली गई थी।

कोविड-19 के खिलाफ लड़ने के लिए जरूरी सामग्रियों को मुंबई तथा भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों, विशेष रूप से दिल्ली से असम भेजा गया था। मीडिया की रिपोर्ट्स से पता चला था कि भारतवर्ष के अन्य राज्यों की तुलना में कोविड के खिलाफ लड़ने के लिए असम में बेहतर तैयारी की गई थी।

असम भवन, मुंबई में जारी इन गतिविधियों के बीच एक दिन भवन में रहने वाले रोगी तथा उनके अभिभावकों का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री तुतुल सइकिया मेरे कार्यालय के चेंबर में आए। वे तनावग्रस्त थे। उन्होंने कहा कि असम भवन तथा 'दीपशिखा' आरोग्य भवन में रहने वाले अधिकतर कैंसर रोगी अत्यंत मानसिक तनाव में हैं, क्योंकि मुंबई में उन लोगों की चिकित्सा लगभग बंद हो चुकी थी। इसके अलावा 'अटल अमृत कार्ड' के अंतर्गत जिन रोगियों का इलाज नवी मुंबई के बेलपुर स्थित अपोलो हॉस्पिटल में चल रहा था, उन्हें भी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। टाटा हॉस्पिटल में इलाज बंद हो जाने से कई रोगी अपना प्राण बचाने के लिए निजी अस्पतालों की ओर रुख करने लगे थे, लेकिन वे भी विफल साबित हुए, क्योंकि कोविड-19 संक्रमण के कारण निजी अस्पतालों ने भी इच्छा के बावजूद इन रोगियों का इलाज करने में असमर्थता व्यक्त की। उधर, एक सामान्य कैमोथेरेपी- जिसकी कीमत दस से बीस हजार रुपए है और जिसे अस्पताल में भर्ती हुए बगैर ही डे-केयर के रूप में लिया जा सकता था, उस कैमोथेरेपी की कीमत कुछ निजी अस्पतलों में (भर्ती करने के बहाने) दोगुना से अधिक बढ़ गई थी। जिसके चलते असम से आने वाले सिर्फ आर्थिक रूप से कमजोर रोगी ही नहीं, बल्कि मध्यम वर्ग के रोगियों में भी त्राहिमाम मचने लगा था। रोगियों के बीच चहुंओर सिर्फ निराशा और हताशा का माहौल था। सइकिया जी से सारी बातें सुनने के बाद वहीं बातें मुझे कई रोगियों के जुबान से भी सुनने को मिली। उपायहीन होकर कुछ रोगी शुरू में ही कुछ पैसों का बंदोबस्त कर मुंबई की कुछ एजेंसियों से एंबुलेंस किराए में लेकर असम की ओर रवाना होने लगे थे। अधिकतर रोगियों की यही मंशा थी कि जल्द असम पहुंचकर चिकित्सा जारी रखना है व चिकित्सा शुरू करना है। असम भवन की ओर से हम इन एंबुलेंसों का नंबर, चालक का लाइसेंस तथा एजेंसी की वैधता का प्रमाण करने का प्रयास कर

रहे थे। उस वक्त कोकराझाड़ के जिला उपायुक्त तथा मेरा दोस्त व सहपाठी पार्थ मजूमदार के साथ बात कर इन एंबुलेंसों को श्रीरामपुर गेट से असम में प्रवेश करने कोई दिक्कत न हो इसकी व्यवस्था करने का प्रयास कर रहे थे।

गुवाहाटी यात्रा के लिए एक एंबुलेंस द्वारा प्रति किलोमीटर पर तीस, पैंतीस, चालीस रुपए वसूला जा रहा था। मुंबई से गुवाहाटी तक एक एंबुलेंस को लगभग एक लाख बीस हजार रुपए भुगतान करना पड़ा था। वह भी पांच दिन पांच रात्रि की कठिन यात्रा थी। रास्ते पर कदाचित कहीं कोई ढाबा व होटल खुला मिलता था। यात्रियों ने हमें फोन पर बताया था कि सौ-सौ किलोमीटर तक कहीं कोई ढाबा व खाद्य सामग्री की खुली दुकान नहीं मिलती थी। अत्यंत पीड़ादायक यात्रा बर्दास्त न कर पाने की वजह से कई रोगियों की बीच सफर में ही मौत भी चुकी थी। यह सब कुछ जानने के बावजूद जो रोगी कर्ज लेकर भी पैसा जुटाने में सक्षम हुए थे। वे सभी इस कठिन यात्रा को तय करने के लिए तैयार थे। उधर अधिकतर रोगी कैंसर जैसे खर्चीले रोग के साथ मुंबई जैसे एक महंगे शहर में कई महीनों तक रुककर आर्थिक संकट से जूझ रहे थे। जिसके चलते बिना किसी सरकारी व गैर-सरकारी संस्थान की मदद से अन्य लोगों की भांति व्यक्तिगत रूप से गाड़ी भाड़े में लेकर घर वापसी करना उनके लिए संभव नहीं था।

मुंबई आने वाले अधिकतर कैंसर के मरीज असम भवन व 'दीपशिखा' के मुंबई स्थित पांच आरोग्य भवनों में से किसी एक में रहना चाहते हैं। जिसका प्रमुख कारण इन मरीजों के ठहरने के लिए इन संस्थानों में सभी सुविधाएं लैस हैं। इन सुविधाओं में से रोगी के लिए निःशुल्क डॉर्मेट्री बिस्तर, अस्पताल तक यातायात की सुविधा, मात्र दस रुपए में एक वक्त का खाना, वित्तीय मदद से लेकर जरूरत पड़ने पर रक्त का इंतजाम किया जाता है। इनमें से कुछ रोगी टाटा हॉस्पिटल के नजदीक रहने वाले रुबेया लॉज तथा गेस्ट हाउसों, विश्व हिंदू परिषद द्वारा संचालित विभिन्न पालक हॉलों, टाटा हॉस्पिटल द्वारा संचालित बर्जिस गेस्ट हाउस और कुछ रोगी अपने इष्ट-मित्रों व कुटुंबों के घर में रहकर चिकित्सा कराते हैं। इनमें से अधिकतर रोजाना हमें अलग-अलग से संपर्क कर उन्हें असम भेजने की व्यवस्था करने का अनुरोध करने लगे। स्थिति अति दयनीय बन गई थी। कई रोगी मेरे ऑफिस में रो-रो कर कहते थे कि सरकार ने शायद उन्हें कोविड-19 से बचाने के लिए लॉकडाउन दिया है, लेकिन वे निश्चित थे कि अगर ऐसा ही हाल रहा तो कैंसर की चिकित्सा के बिना ही वे लोग मर जाएंगे।

यह बात सुनकर मैं भी काफी चिंतित हो गया था और तय किया कि किसी भी सूरत में इन रोगियों को असम पहुंचाना होगा और इसकी व्यवस्था तत्काल करनी होगी। इस बात की जानकारी मैने स्वास्थ्य मंत्री दी थी और उन्होंने मुझे उचित इंतजाम करने का आश्वासन दिया था।

19 अप्रैल, 2020 की सुबह ही खबर मिली कि स्वास्थ्य मंत्री जी हमारे इन कैंसर मरीजों तथा उनके अभिभावकों के साथ 'जूम' के जरिए बात करना चाहते हैं और शाम के वक्त इस वार्तालाप के लिए तैयारी करने का निर्देश दिया है। एक पल भी गंवाए बिना हमारे असम भवन के कंप्यूटर विशेषज्ञ जयेश कुमार और मृदुल हजारिका को बुलावा भेज दिया और 'जूम बैठक' आयोजन की सभी तकनीकी इंतजाम करने का निर्देश दिया। 'दीपशिखा' के नवी मुंबई स्थित आरोग्य भवनों से रोगी और उनके अभिभावकों को बस के जरिए शाम 6 बजे असम भवन में लाने का दायित्व दोपहर 3 बजे केयरटेकर जियाउर रहमान को दिया गया। ध्रुव शर्मा और राजू शर्मा को असम भवन में रह रहे अतिथियों को स्वागत कक्ष में इकट्ठा कर सुचारु रूप से सभा संचालन के लिए सभी इतंजाम करने का दायित्व दिया गया।

हमारे सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने असम भवन के निचले तल्ले में 'जूम सभा' आयोजन के लिए सभी तैयारियां शुरू कर दी। शाम के करीब 6 बजे रोगी तथा अभिभावक मास्क लगाकर तथा तय सामाजिक दूरी बनाते हुए सभा कक्ष में यथास्थान पर बैठ गए। करीब 7 बजे असम के माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी के साथ 'जूम सभा' शुरू हो गई। सभा में राज्य स्वास्थ्य मंत्री पीयूष हजारिका, स्वास्थ्य विभाग के सचिव श्री समीर सिन्हा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के निदेशक डॉ. लक्ष्मणन भी उपस्थित थे। सभा में रोगियों की समस्याओं, आशा-आकांक्षाओं आदि पर विस्तृत चर्चा हुई। सभा में ही कुछ रोगियों ने घर वापसी की व्यवस्था करने का आग्रह किया और स्वास्थ्य मंत्री ने उन्हें हर संभव प्रयास करने का भरोसा दिया। एक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ सभा संपन्न हुई। जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य मंत्री जी ने लॉकडाउन के चलते रोगयों के सामने आ रही समस्याओं का जायजा लिया और पहले दी जाने वाली 20,000 रुपए आर्थिक मदद के अतिरिक्त कुछ वित्तीय मदद का आश्वासन दिया। कुल मिलाकर हमें यही उचित लगा कि मौजूदा परिस्थिति के मद्देनजर मुंबई में फंसे कैंसर रोगियों को तत्काल असम ले जाकर उनकी चिकित्सा जारी रखना उचित होगा।

तृतीय अध्याय

यात्रा की परियोजना

मुंबई की तत्कालीन परिस्थिति के बारे में बारीकी से जायजा लेने के बाद सबसे पहले अपने रोगियों की दयनीय स्थिति के बारे में मैने अपर्ने 'कंट्रोलिंग ऑफिसर' और सामान्य प्रशासन विभाग के आयुक्त सचिव डॉ. एम अंगमुथु को जानकारी दी। उन्होंने जल्द कुछ करने का आश्वासन दिया था। उसी दौरान संयोजवश असम के तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने फोन के जरिए मुझे बताया कि मुंबई में फंसे प्रत्येक रोगी को असम सरकार के स्वास्थ्य विभाग की ओर से

पचीस हजार रुपए आर्थिक अनुदान दिया जाएगा। मौका मिलते ही मैने भी मंत्री जी को मुंबई में फंसे कैंसर रोगियों की दुर्दशा के बारे में अवगत किया। थोड़ा सोच कर उन्होंने सीधी तौर पर बताया, 'हम उन्हें एक हवाई जहाज के जरिए लाएंगे, आप प्रक्रिया की तैयारी करें'।

मंत्री जी के इरादे के बारे में जानकर हम युद्धस्तर पर कोविड परिस्थिति के बीच कैसे एक विशेष हवाई जहाज किराए में लिया जाए, इस प्रक्रिया में जुट गए। उस दिन रात्रि करीब एक बजे अचानक फोन की घंटी बजने लगी, मैने देखा कि हमारे स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव श्री समीर सिन्हा जी का फोन कॉल है। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में मुझसे एक साल का जूनियर थे। उनके साथ मेरा संबंध एक वरिष्ठ अधिकारी के अलावा दोस्ताना भी था। उन्होंने कहा - आवर ऑनरेवल हेल्थ मिनिस्टर वांट्स दैट एक प्लेन शुड भी आर्गेनाइज्ड टु ब्रिंग बैक द कैंसर पैशेंट्स स्ट्रैंडेड इन मुंबई (हमारे माननीय स्वास्थ्य मंत्री चाहते हैं कि मुंबई में फंसे कैंसर रोगियों को वापस लाने के लिए एक हवाई जहाज की व्यवस्था होनी चाहिए।) रोगियों और उनके अभिभावकों का जल्द से जल्द कोविड परीक्षण की व्यवस्था करें- दिस इज मैंडेटरी फॉर एयर अराइवल। (हवाई जहाज से आने के लिए यह अनिवार्य है।)

मेरी नींद उड़ गई। मैं उत्साहित हो गया। इतनी आसानी और जल्द हमारे रोगियों को घर पहुंचाने के बारे में मैने कभी सोचा ही नहीं था

27 अप्रैल की सुबह समीर सिन्हा जी ने फिर फोन किया। उन्होंने कहा कि रोगियों को हवाई जहाज से लाने के लिए कोविड परीक्षण कराना अनिवार्य है। इसलिए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से नवी मुंबई स्थित थाइरोकेयर डायग्नोस्टिक लेबोरेटरी से संपर्क किया है। उन्होंने कहा कि अतिशीघ्र 'असम भवन' में एक कोविड-19 परीक्षा शिविर की स्थापना करने और हवाई जहाज में यात्रा करने वाले रोगियों व अभिभावकों की एक सूची तैयार की जाए।

फिर एक नई समस्या। कोविड नियमों के अनुसार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए एक हवाई जहाज में सिर्फ 120-130 यात्री सफर कर सकेंगे, लेकिन हमारे यात्रियों की संख्या 200 हैं। इनमें से कुछ ऐसे रोगी भी थे, जिनका ऑपरेशन व कैमोथेरेपी कुछ दिन पहले ही हुआ था। इन लोगों का हवाई यात्रा करना चिकित्सक के अनुसार अनुचित है। सूची तैयार करने के लिए जयेश, ध्रुव, मृदुल और राजू ने जयेश के कार्यालय में ही बैठकर दिन-रात एक कर दिया था। यह

सूची तैयार करना कोई आसान काम भी नहीं था, क्योंकि 'असम भवन' और 'दीपशिखा' आरोग्य भवनों के अलावा अन्य कई रोगी और उनके अभिभावक मुंबई के विभिन्न स्थानों में फैले हुए थे। काफी मशक्कत के बाद वे इन रोगियों का नाम, पता और फोन नंबर जुटाने में सफल हुए थे। काफी समय में जटिल काम का सुचारु समाधान करना आसान नहीं था। हमारे मन में हमेशा एक शंका थी कि जानकारी व सूचना के अभाव में कोई रोगी व उनके अभिभावक को इस यात्रा से वंचित होना न पड़े। बहरहाल कड़ी मेहनत के बाद 'असम भवन' प्रबंधन ने एक सूची तैयार कर सभी से 30 अप्रैल को 'असम भवन' पहुंचकर कोविड-19 परीक्षण कराने का आग्रह किया गया।

प्रधान सचिव समीर सिन्हा के कहे अनुसार थाइरोकेयर डायग्नोस्टिक नामक लेबोरेटरी प्रबंधन के साथ संपर्क किया गया। संयोगवश उक्त संस्थान के संचालक डॉ. सिजर मेरे पुराने मित्र थे। डॉ. सिजर के चलते कोविड-19 परीक्षण से जुड़े कई नीति-नियमों का पालन करने में हमें विशेष कठिनाई नहीं झेलनी पड़ी। डॉ. सिजर हमें हर काम में मार्गदर्शन व सलाह दे रहे थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। अचानक डॉ. सिजर ने मुझे पूछा- देवाशीष, मुझे उम्मीद है कि डाक्टर तैयार होंगे?

मैंने आश्चर्यचकित होकर उन्हें पूछा- ह्वाट डाक्टर?

उनसे पता चला कि कोविड परीक्षण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एक अलग से चिकित्सक के प्रिस्क्रिप्शन की आवश्यकता होती है, जहां पर कोविड-19 परीक्षण की जरूरत के बारे में उल्लेख रहता है। बिना प्रिस्क्रिप्शन के कोई संस्थान कानूनी तौर पर व्यक्तिगत रूप से कोविड-19 की परीक्षण नहीं करा सकता। यह बात सुनकर कुछ पल के लिए मैं दुविधा में पड़ गया था। मुंबई की तत्कालीन परिस्थिति में कोई चिकित्सक प्रिस्क्रिप्शन लिखने के लिए 'असम भवन' आना तो दूर की बात है, अस्पताल जाने से भी चिकित्सक नहीं मिलता था। कुछ पल के लिए ऐसा लगा था कि सारी कोशिशों पर पानी फिर गया। कहां से लाए एक चिकित्सक- मुंबई महानगर की वर्तमान परिस्थिति में क्या कोई दक्ष चिकित्सक 'असम भवन' में कई घंटे बैठकर एक ही दिन में 200 रोगियों की कोविड जांच कर प्रिस्क्रिप्शन के लिए राजी होंगे? जब एक दरवाजा बंद होता है तो भगवान दूसरा दरवाजा खोल देता है। घनघोर अंधेरे के बीच आशा की एक किरण दिखाई दी और डॉ. निलाक्षी चौधुरी का नाम याद आया।

सिर्फ दो सप्ताह पहले पीडी हिन्दूजा अस्पताल से डॉ. निलाक्षी चौधुरी नामक असम की एक महिला चिकित्सक ने जान-पहचान के लिए फोन किया था। उन्होंने बताया था कि मुंबई में एक प्रशिक्षण के लिए आई हुई थी और प्रशिक्षण समाप्ति के बाद वे असम लौटना चाहती हैं। उस दौरान मुंबई से असम जाने के लिए यातायात पूरी तरह बंद था। उन्होंने हमसे मदद की गुहार लगाई थी। कोविड-19 संक्रमण के कारण किसी से नहीं मिल पाने के चलते वे अकेलापन भी महसूस कर रही थी। उन्हें 'असम भवन' की बात गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के किसी वरिष्ठ चिकित्सक ने बताई थी। असमिया भाषा में बात करने तथा घर के किसी पड़ोसी के साथ बात कर मन का बोझ हल्का करने के लिए डॉ. निलाक्षी ने हमें फोन किया था। मैने उन्हें आश्वासन दिया था कि किसी तरह की परेशानी होने पर वे बिना किसी हिचकिचाहट के हमसे संपर्क कर सकती हैं। बाद में मालूम पड़ा था कि डॉ. निलाक्षी चौधुरी हिन्दुजा अस्पताल में काक्लीअर इम्प्लैन्ट सर्जरी का प्रशिक्षण लेने आई थी। काफी कम उम्र की ईएनटी सर्जन की याद आते ही मैने उन्हें कॉल किया था। परिस्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी मिलने के बाद उन्होंने कहा था कि वे 30 अप्रैल को 'असम भवन' पहुंचेगी, साथ ही दो सौ से अधिक लोगों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर उनके साथ बातें करेंगी और कोविड जांच के लिए प्रिस्क्रिप्शन लिखेंगी, साथ ही वे उन लोगों की स्वास्थ्य की जांच कर हवाई यात्रा के लिए शारीरिक योग्यता की जानकारी देंगी। डॉ. निलाक्षी को दिल से धन्यवाद दिया और जिंदगी में भाग्य की भूमिका को दोबारा याद किया। अंधेरा-उजाला, धूप-बरसात और सुख-दुख के इस खेल में कब किसका सामना करना पड़ सकता है इसका कोई अता-पता नहीं है। इसीलिए दार्शनिकों, विद्वानों, साधु-संतों ने कहा है - 'अतीत को छोड़ो, वर्तमान को पकड़ो और भविष्य से अपने आपको जोड़ो'।

30 अप्रैल, 2020। सुबह से ही असम भवन में एक व्यस्तता का माहौल। हमारे विंगर एंबुलेंस के चालक गणेश पाटिल और लक्ष्मीराम कलिता माहिम से डॉ. निलाक्षी को लाने गए। कोविड परीक्षण के लिए साजो-सामान के साथ दो गाड़ियां थाइरोकेयर की टीम 'असम भवन' पहुंच गई थी। भवन के पीछे वाहन पार्किंग स्थल पर टेबल आदि सजाकर पंजीयन की तैयारियां की गई। थाइरोकेयर की तकनीकी टीम चाय की चुस्की ले ही रही थी कि उसी समय डॉ. निलाक्षी भी असम भवन पहुंच गई थी। डॉ. निलाक्षी एक हंसमुख, व्यक्तित्व संपन्न और

अत्यंत दोस्ताना स्वभाव की युवा चिकित्सक। पहली मुलाकात में ही उन्हें काफी अच्छा लगा था। मेरे ऑफिस चेंबर में ही उन्हें इच्छुक यात्रियों के साथ बातचीत कर प्रिस्क्रिप्शन देने की व्यवस्था कर दी गई। वह प्रक्रिया सुबह 9 बजे से शाम के 6 बजे तक चली। इस बीच सिर्फ आधा घंटा के लिए डॉ. निलाक्षी ने भोजन के लिए विराम लिया। 30 अप्रैल के दिन ही कुल 101 लोगों का 'स्वाब' संग्रह संपन्न हुआ था। शाम सात बजे थाइरोकेयर की टीम असम भवन से चली गई। बहरहाल, यात्रा के लिए इच्छुक सभी लोगों की परीक्षण उस दिन संभव नहीं हो पाया। पूरी प्रक्रिया का सुचारु संचालन में हमारे असम भवन के प्रत्येक कर्मचारी जी-जान से लगे हुए थे। उन लोगों के निरंतर परिश्रम के बिना यह कार्य सुचारु से संपन्न होना असंभव था। कोविड परीक्षण की तिथि तय करने के कुछ दिन पहले लोकप्रिय गायक जुबिन गर्ग की पत्नी गरिमा ने मुझे फोन किया था। उन्होंने मुझे कहा था कि जिस काम के लिए जुबिन मुंबई गए हुए वह पूरा हो चुका है। वे जल्द मुंबई से लौटना चाहते हैं। इस संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री जी के कार्यालय से भी कई लोग जुबिन की खबर ले रहे थे। हमें कहा गया था कि मुंबई में प्रवास के दौरान जरूरत पड़ने पर जुबिन को हर संभव मदद दी जाए। बातों ही बातों में मैने गरिमा को उनके साथ ही संगीतज्ञ (ड्रामर) पार्थ और जुबिन के मेनैजर सिद्धार्थ को हमारे असम भवन में कोविड परीक्षण के लिए निमंत्रण दिया। वे लोग जल्द ही हवाई यात्रा के बारे में सोच रहे थे, इसलिए कोविड-19 की रिपोर्ट की आवश्यकता होगी। हमारे असम भवन में कार्यरत लोकनिर्माण विभाग के सेक्शन ऑफिसर त्रिनयन संदिकै का जुबिन और गरिमा के साथ पुरानी पहचान है। मुंबई में रहते समय त्रिनयन उनके सघन संपर्क में थे। मुझे त्रिनयन से जानकारी मिली थी कि मुंबई आने का उद्देश्य पूरा होने के बाद जुबिन कई दिनों तक मुंबई सांताक्रूज के छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा के नजदीक 'होटल ललित' के एक सुइट में ठहरे हुए थे। लॉकडाउन के चलते जुबिन भी मुंबई में फंस गए थे और होटल ललित के उक्त सुइट में वे अकेलापन व मानसिक तनाव जूझ रहे थे। जुबिन एक लोक कलाकार हैं और वे हमेशा लोगों के बीच रहना पसंद करते हैं। लॉकडाउन के चलते एक पांच सितारा होटल के बंद कमरे में अकेले रहकर वे अस्थिर हो गए थे। यह बात सुनकर मैं त्रिनयन से कहा कि जुबिन को तत्काल असम भवन लाने की व्यवस्था की जाए। भवन के दूसरे तल्ले में एक सुंदर सुइट में जुबिन को थोड़ा अलग से ठहरने का इंतजाम किया जाएगा। मेरा विश्वास था कि 'असम भवन' में रहने वाले

कैंसर मरीजों, उनके अभिभावकों और बीच-बीच में यहां आने वाले असम के लोगों को मिलने पर उनका मन प्रसन्न रहेगा। होटल के सुइट से असम भवन का मुक्त वातावरण निश्चित रूप से उन्हें अच्छा लगेगा। अंत में जुबिन को असम भवन लाकर हमारे बीच लाकर रखने की मनोकामना पूरी नहीं हुई, क्योंकि परिस्थिति हमारी सोच के विपरीत थी।

30 अप्रैल को थाइरोकेयर द्वारा की गई परीक्षण रिपोर्ट 1 मई के शाम को मिली। डॉ. सिजर ने मुझे फोन पर बताया-देवाशीष, एक बुरी खबर है।

यह बात सुनते ही मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। मुझे भनक लग गई थी कि डॉ. सिजर क्या कहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि असम भवन में की गई कोविड जांच में 101 लोगों में दो की रिपोर्ट पॉजिटिव है। उनमें से एक असम भवन में रहने वाले महत बरुवा (रोगी के अभिभावक) और दूसरा सायन नामक स्थान के एक गेस्ट हाउस में रहने वाले पार्थप्रतीम फुकन है। साथ ही उन्होंने बताया कि मुंबई नगर निगम को इसकी जानकारी दी गई है और हमारी ओर से उन्हें शीघ्र ही वाशी-9 नं. सेक्टर स्थित क्वारनटाइन सेंटर भेजने की व्यवस्था की जाए। जैसे अचानक एक तूफान आ गया था। अच्छी खबर यह थी कि मेरे साथ परीक्षण करने वाली असम भवन की पूरी टीम सुरक्षित है। इससे पहले कोविड संक्रमित व्यक्ति द्वारा पालन किए जाने वाले नीति-नियमों के बारे में सिर्फ संवाद माध्यम जरिए पता चला था। अपना घर 'असम भवन' में ही पॉजिटिव केस शिनाख्त होने के बाद कुछ पल के लिए दुविधा में पड़ गया था।

सबसे पहले महत ज्योति बरुवा को अपने ऑफिस में बुलाकर अत्यंत सरल भाषा में उन्हें समझाया कि कोविड-19 के ज्यादातर मरीज एक सप्ताह के अंदर स्वस्थ हो जाते हैं। इसके बाद उन्हें कोविड परीक्षण परिणाम के बारे में बताया गया। यह बात सुनकर वह कुछ समय के लिए बिना हिले-डुले एक ही स्थान पर खड़े थे। उनका पहला सवाल था- 'सर, मेरी पत्नी का क्या होगा?'

महत बरुवा की पत्नी का विगत कई महीनों से टाटा हॉस्पिटल में कैंसर का इलाज चल रहा था और उस वक्त वह कैमरोथेरेपी ले रही थी। अभिभावक के रूप में उनके पास पति महत बरुवा और उनके एक मित्र के अलावा घर का कोई सदस्य मौजूद नहीं था। ऐसी परिस्थिति में रोगी और उनके अभिभावक की मानसिक स्थिति काफी नाजुक रहती है। जिसके चलते हर कदम काफी सोच-समझ कर उठाना पड़ता है। उधर महत बरुवा की मानसिक स्थिति काफी नाजुक बन गई थी,

लेकिन उसकी बीमार पत्नी यह बात सुनकर थोड़ा भी अस्थिर नहीं हुई थी। पत्नी का मनोबल देखकर मैं दंग रह गया था। समानांतर रूप से महत बरुवा की परिस्थिति को उनके मित्र ने अधिक जटिल बना दिया था। वह कई दिनों से असम वापसी की योजना बना रहे थे। उन्होंने मुझे बताया था कि इस तरह फंस जाने से तथा दिन-व-दिन मुंबई की स्थिति खराब होते दिख वह हताश हो गए थे।

दूसरी ओर असम भवन में रहने वाले एक सौ से अधिक रोगी तथा उनके अभिभावकों के बीच असम भवन में ठहरे एक व्यक्ति में कोविड पॉजिटिव पाए जाने की खबर जंगल में आग की तरह फैल गई थी। हमारे कर्मचारियों से पता चला कि रोगियों के बीच एक आतंक का माहौल है, क्योंकि वे सभी महत बरुवा के संग एक साथ डाइनिंग रुम में खाना खाने के अलावा नाम-प्रसंग व 'दीपशिखा' की बस में अस्पताल आवाजाही करते थे।

उधर, सायन के गेस्ट हाउस में रहने वाले पार्थ प्रतीम को भी शीघ्र खबर देनी जरूरी थी, क्योंकि वह सिर्फ एक अभिभावक के साथ एक ही कमरे में ठहरे हुए थे। मेरा भी पार्थ जी के साथ कई बार असम वापसी को लेकर चर्चा हुई थी। चिकित्सा खत्म होने के बाद मुंबई में फंस जाने से वे भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त थे। मुझे समझ में आया था कि तत्कालीन परिस्थिति के चलते पार्थ फुकन भी अत्याधिक मानसिक दबाव में थे। कभी कभार वे अधिक भावुक बन जाते थे। काफी सोच-विचार के बाद फुकन जी को फोन किया। रोजाना की भांति उन्होंने अति विनम्रता के साथ आवाज दिया- 'सर'?

फुकन से रोजमर्रा की खबर लेने के बाद मैंने उन्हें पूछा- शारीरिक रूप से उन्हें कोई दिक्कत है क्या?

फुकन की आवाज अचानक कांप उठी- 'सर, ये सब बातें आप क्यों मुझसे पूछ रहे हैं? मुझे बहुत डर लग रहा है।'

बात को इधर-उधर नहीं घुमाते हुए मैने फुकन को कोविड-19 के परिणाम के बारे में धीरे से बोलना शुरू ही किया था कि फुकन रो पड़े। वे पूरी तरह टूट गए थे और जितनी जल्दी हो सके वे मुझे अपने पास बुलाने लगे। उस वक्त मुंबई शहर में पूरी तरह लॉकडाउन था। बाहर निकलते ही मुंबई पुलिस की तलाशी और विभिन्न सवाल-जबाव। जाए तो कैसे जाए? इस बीच कई लोगों से पैरवी करने के बाद नवी मुंबई स्थित क्वारंटाइन सेंटर में पार्थ फुकन के लिए एक सीट का जुगाड़ हुआ। उस वक्त मुंबई में कोविड संक्रमण की दर इस कदर थी कि पीड़ितों की

तुलना में चिकित्सक, नर्स, चिकित्सा सामग्री और हॉस्पिटल में सीट पर्याप्त नहीं थी। समय पर चिकित्सा के अभाव में कई रोगियों को जान गंवानी पड़ी थी। हॉस्पिटल में बेड नहीं मिलने पर कई पीड़ितों को बरामदा में रहना पड़ा था।

इस स्थिति के लिए किसी को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि अचानक ऐसी एक स्थिति का सामना करने के लिए प्रशासन, चिकित्सा विभाग और सत्तारूढ़ सरकार कोई तैयार नहीं थे। खासकर महाराष्ट्र में परिस्थिति अधिक जटिल थी, क्योंकि सत्तारूढ़ सरकार की स्थिति काफी डांवाडोल थी। चुनाव में बहुमत हासिल करने के बावजूद सरकार बनाने के लिए भाजपा के पास बहुमत का आंकड़ा कम था। छल-बल व कौशल से भाजपा को शासन से दूर रखने के लिए भारत के इतिहास में पहली बार शिवसेना, कांग्रेस और एनसीपी (पावार) का गठबंधन हुआ। यह गठबंधन भी ज्यादा दिन तक नहीं टिक पाया और क्षमता केंद्रिक अराजकता व्याप्त होने लगी। मिली जानकारी के अनुसार शिवसेना के विधायकों की संख्या अधिक होने कारण मुख्यमंत्री श्री उद्धव ठाकरे और उनके बेटे आदित्य ठाकरे अधिकतर महत्वपूर्ण निर्णयों में मनमानी करने लगे। जिसके चलते कांग्रेस और एनसीपी के प्रतिनिधियों के साथ शिवसेना का विवाद बढ़ गया। परिणाम स्वरूप महाराष्ट्र में कोविड के विरुद्ध जारी जंग के विभिन्न महत्वपूर्ण सरकारी निर्णय उस लड़ाई की भेंट चढ़ गई थी।

डिब्रूगढ़ डॉन बॉस्को स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद मैने कक्षा 11वीं और 12वीं की पढ़ाई डिगबोई के 'विवेकानंद विद्यालय' में की थी। उसी स्कूल में पढ़ाई करने वाले हमारे सीनियर एच.एस. सिंह भैया उस वक्त नवी मुंबई नगर निगम अस्पताल की कोविड शाखा में प्रमुख के रूप में कार्यरत थे। सिंह भैया से हमें काफी मदद मिली थी। मैने फोन पर ही उनसे संपर्क कर अनुरोध किया। उन्होंने अत्यंत किल्लत के बावजूद पार्थ बरुवा के लिए क्वारंटाइन सेंटर में एक बेड का जुगाड़ किया और नगर निगम का एक एंबुलेंस असम भवन भेज दिया। एंबुलेंस के पहुंचने के बाद सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न हुई। बरुवा को क्वारंटाइन सेंटर छोड़ने कौन जाएगा? उन दिनों कोविड रोगी के साथ एक अछूत की भांति बर्ताव किया जाता था। कई दफा अपने परिजन भी रोगी के नजदीक आने से हिचकिचाते थे। कोविड संक्रमण का आतंक इस कदर बढ़ गया था कि अपने भी गैर बन जाता था। महत बरुवा की पत्नी को सलाह-मशविरा देते हुए पीपीई किट परिधान कर बरुवा जी को क्वारंटाइन सेंटर छोड़ने के लिए मैं तैयार हो गया। मन

ही मन में थोड़ा डर भी लग रहा था, क्योंकि कोविड रोग व संक्रमण के बारे में उस समय पुख्ता जानकारी नहीं थी। वैसी एक परिस्थिति में मानसिक रूप से अस्थिर लोगों को एंबुलेंस में ले जाना किस हद तक सटीक होगा इस पर मुझे भी संदेह था। दूसरी ओर उनके लिए यह पूरी तरह एक नया शहर, जहां की किसी भी चीज से वे परिचित नहीं हैं। जिंदगी में कभी-कभार ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां आगे बढ़कर आना बेहद जरूरी है। इसमें दुःसाहस प्रदर्शन करना मेरी कोई मंशा नहीं थी। संस्थान के प्रमुख होने के नाते मैं सिर्फ जिम्मेदारी का पालन कर रहा था।

सेक्टर-17 क्रॉस कर वाशी के शिवाजी चौक होकर हम सेक्टर-14 स्थित क्वारंटाइन सेंटर पहुंच गए। महत बरुवा को ले जा रहे एंबुलेंस के पीछे ही मैं असम भवन का एंबुलेंस चलाकर जा रहा था। रात्रि करीब 10.30 बज रहे थे। क्वारंटाइन केंद्र को देखकर मुझे स्टिवन स्पिलवर्ग की होलोकास्ट आधारित (1993 में निर्मित) 'स्विंडलर्स लिस्ट' नामक फिल्म की एक दृश्य का याद आ रहा था। निस्तब्धता के बीच यूनिफॉर्म पहनकर खड़े बंदूकधारी जर्मन सिपाहियों द्वारा यूहदी कैदियों को गैस चेंबर की ओर लेकर जा रहे थे। पीपीई किट परिधान करने वाले चालकों और स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा ठीक उसी तरह डरे हुए रोगियों को एंबुलेंस से उतार कर क्वारंटाइन केंद्र की ओर ले जाया जा रहा था। यह दृश्य और स्पिलवर्ग की उस फिल्म की वह दृश्य बिल्कुल एक जैसा था। बरुवा को एक ही चिंता खाई जा रही थी कि उनकी बीमार पत्नी अकेली कैसे खुद को संभाल पाएगी। उन्हें बिल्कुल चिंता नहीं करने का सलाह देते हुए भरोसा दिया था कि उनकी पत्नी का पूरा ख्याल रखा जाएगा। मेरा आश्वासन काम आया, अत्यंत चिंतित बरुवा ने हल्की सी राहत महसूस की और मुझे धन्यवाद देकर क्वारंटाइन केंद्र के अंदर चले गए। जाते वक्त मुझे असम भवन से 'भागवत' पुस्तक को भेज देने का आग्रह किया।

उधर, सायन में रह रहे पार्थप्रतीम फुकन के समक्ष एक नई समस्या पैदा हो गई। कोविड-19 पॉजिटिव पाए जाने पर सरकारी नियम अनुसार परीक्षण संस्थान द्वारा तुरंत इसकी सूचना संबंधित नगर निगम को देना अनिवार्य है। सूचना मिलते ही नगर निगम के स्वास्थ्य कर्मी तय करेंगे कि रोगी को किस केंद्र में भेजना है और इसके बाद एंबुलेंस के जरिए रोगी को ले जाने की व्यवस्था करेंगे। असम भवन नवी मुंबई इलाके में है, जिसके चलते बरुवा की जिम्मेवारी नवी मुंबई नगर निगम

ली। परंतु पार्थप्रतीम फुकन का गेस्ट हाउस सायान इलाके में था और सायान वृहान मुंबई नगर निगम के दायरे में आता है। उस वक्त वृहान मुंबई नगर निगम के अधीन हर अस्पताल और क्वारंटाइन केंद्र कोविड रोगी से भरा हुआ था।

'दीपशिखा' की आजीवन सदस्या श्रीमती नीता दोशी की मुंबई के कई प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ अच्छी पहचान थीं। उनके द्वारा लाख प्रयास के बावजूद फुकन के लिए मुंबई के किसी भी अस्पताल में एक बिस्तर नहीं मिला। उधर, पल-पल में फुकन और उनके घर से फोन आ रहा था। हम दुविधा में पड़ गए थे। क्या करें- सामने कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। एक ओर जहां सरकारी नियम के अनुसार फुकन को अतिशीघ्र गेस्ट हाउस से निकाल कर लाना, वहीं दूसरी ओर उन्हें नगर निगम का एक अस्पताल के बरामदे में छोड़कर आने की दुःचिंता। अगर फुकन को वृहान मुंबई नगर निगम के किसी एक अस्पताल में भर्ती कर दिया जाए तो यह निश्चित है कि वहां उन्हें पर्याप्त चिकित्सा नहीं मिलेगी। इसके अलावा बिस्तर के अभाव में अन्य कोविड रोगियों के साध अस्पताल के बरामदे में एक अस्वस्थ वातावरण में रखे जाने की आशंका भी अधिक थी। फुकन के साथ बातचीत कर पता चला था कि वे लक्षण विहीन कोविड रोगी है। कोविड-19 के बारे में थोड़ा अध्ययन कर अंतिम निर्णय लिया कि सरकारी नियम तोड़ कर भी फुकन को गेस्ट हाउस के बाहर निकलने नहीं देंगे, क्योंकि वे एक कैंसर के मरीज थे और उस समय उनमें रोग प्रतिरोध क्षमता (कुछ दिन पहले ही कैमोथेरेपी लेने के कारण) काफी कम था।

फुकन को एक सलाह दिया- चुपचाप रहें और इस संदर्भ में गेस्ट हाउस के किसी भी व्यक्ति को कानोकान खबर नहीं होनी चाहिए। कोविड संक्रमण की बात सुनते ही गेस्ट हाउस में अफरा-तफरी मच जाएगी। सौभाग्य से उस दौरान गेस्ट हाउस में कोई दूसरा अतिथि नहीं था। अगर अतिथि रहते तो शायद यह रिस्क मैं कभी नहीं लेता। फुकन को कड़ा निर्देश दिया कि मेरे नहीं कहने तक वह गेस्ट के कमरे से बाहर न निकले। उन्हें कहा गया कि उनके साथ रह रहे अभिभावक को सामाजिक दूरी का पालन करने और शौचालय को हर बार प्रयोग के बाद फिनाइल से साफ करें। फुकन हताश हो गए थे, फिर भी मेरी बातों का अक्षर-दर-अक्षर पालन करने का आश्वासन दिया। बेफिक्र होकर रात गुजारने के लिए वे राजी हो गए। चिंता नहीं करने के लिए फुकन को तो आश्वासन दे दिया, मगर मैं खुद चिंता के सागर में डूब गया। चिकित्सक मित्रों द्वारा बार-बार फोन कर परेशान किया जा

रहा था तथा पूछ रहे थे कि अगर फुकन को कोविड लक्षण दिखाई देगा तो क्या होगा। नवी मुंबई के नगर निगम हॉस्पिटल से डॉ. सिंह भैया मजाकिया अंदाज में कह रहे थे कि तुम दोनों की नौकरी जाने के अलावा विशेष कुछ नहीं होगा। सिंह भैया का वह मजाक मुझे बार-बार परेशान कर रहा था। फुकन को रोज फोन पर मनोबल वृद्धि करने की कोशिश करता था। कभी-कभार फुकन पूरी तरह टूट जाते थे, लेकिन उन्हें विभिन्न तरह की प्रेरणा देकर 14 दिन की अवधि पार कर लिया था। बहरहाल, देखते ही देखते समय बीतता गया और फुकन में कोविड लक्षण भी दिखाई नहीं दिया। ईश्वर की दया से हम दोनों बच गए। इस घटना के कुछ ही दिन महाराष्ट्र सरकार ने निर्देश जारी किया कि कोविड रोगियों से अस्पताल भर जाने के कारण लक्षण विहीन कोविड रोगियों को घर में आइसोलेशन पर रखा जाए।

असम भवन में कोविड संक्रमण की खबर मुंबई के समाचार पत्र में भी छप गई थी। 1 मई के दिन दोपहर नवी मुंबई नगर निगम के सहायक आयुक्त श्री महेश सनशेट्टी अपनी कोविड एक्शन टीम के साथ असम भवन पहुंच गए। शेट्टी जी के साथ पहले से मेरी मित्रता थी। उन्हें अपने ऑफिस में बिठाकर चाय की चुस्की लेने दिया। उन्होंने बताया कि वे पूरे असम भवन को कंटेनमेंट जोन में तब्दील करने आये हैं। मैने उन्हें ऐसा नहीं करने के लिए विनम्र अनुरोध किया। उस वक्त हमारे असम भवन में ऐसे कई कैंसर मरीज थे, जिनकी चिकित्सा चल रही थी। उनमें से कई लोग कैमोथेरेपी व रेडियोथेरेपी ले रहे थे। इन रोगियों को 'दीपशिखा' बस के जरिए रोजाना अस्पताल ले जाया जाता था। अगर असम भवन को अचानक कंटेनमेंट जोन में तब्दील कर दिया गया तो वे लोग बाहर नहीं निकल सकेंगे। परिणाम स्वरूप उनकी चिकित्सा अधूरी रह जाएगी। यह बताना जरूरी नहीं है कि अगर ऐसे रोगों की चिकित्सा बंद हो जाएगी तो इन लोगों की क्या दशा होगी। शेट्टी जी को कुछ चिकित्साधीन बच्चों की स्थिति से अवगत कराया गया और मैं अपने अनुरोध पर अटल खड़ा रहा। शेट्टी जी ने मुझसे कुछ समय मांगा और हमारे हालात के बारे में उच्च अधिकारी को जानकारी दी। चिकित्साधीन कैंसर रोगी ठहरने के कारण स्पेशल केस के रूप में असम भवन को कंटेनमेंट जोन घोषित नहीं किया। उन्हें आश्वासन देते हुए मैने बताया कि असम भवन से चिकित्सा के लिए बाहर जाने वाले रोगियों को 'असम भवन' के बाहर एपीबीएन के डॉरमेट्री में रहने का इंजाम किया जाएगा और उन्हें असम भवन में प्रवेश करने नहीं दिया जाएगा। मेरे ऊपर उनके विश्वास का अनुचित फायदा कभी नहीं उठाऊंगा। शेट्टी जी ने हाथ

मिलाने के लिए हाथ को आगे बढ़ाया था, लेकिन अचानक उन्हें याद आया कि कोविड संक्रमण के कारण नमस्कार देना ही उचित होगा। मुझे नमस्कार देते हुए शेट्टी जी चले गए।

दोस्ती और मानवता के खातिर असम भवन की परिस्थिति को प्रत्यक्ष करने के बाद शेट्टी जी ने हमारे ऊपर कठोर कोविड नियमों को लागू नहीं किया, परंतु प्रचार माध्य के जरिए और आरोग्य सेतु नामक एप के जरिए लोगों को इसकी जानकारी मिलने के बाद असम भवन एक 'अछूत गृह' में तब्दील हो गया। 'असम भवन' से जाने वाले कैंसर रोगियों का इलाज करने से अस्पतालों ने मना कर दिया और चिकित्साधीन रोगियों को भी अस्पताल आने पर रोक लगा दी गई थी। कुछ प्रतिष्ठित अस्पतालों ने रोगियों को असम लौट कर बी बरुवा कैंसर संस्थान, जीएमसी की राज्य कैंसर संस्थान तथा असम में स्थापना की गई कुछ नए निजी अस्पतालों में चिकित्सा जारी रखने की सलाह दी गई थी। दरअसल, तत्कालीन परिस्थिति के मद्देनजर उन अस्पतालों के चिकित्सक कोविड संक्रमण के डर से असम भवन के रोगियों की चिकित्सा के लिए थोड़ा हिचकिचा रहे थे। इस बात की जानकारी मिलते ही हमारे रोगी काफी चिंतित हो गए थे। कुछ महिलाएं मेरे सामने ही रो पड़ी थी और कर कह रही थीं कि उनका भविष्य अंधेरे में डूब चुका है। वे लोग काफी आशा लेकर गाढ़ी कमाई खर्च कर मुंबई आए थे तथा उनमें से कई लोग अपनी जमीन-जायदाद बेचकर कैंसर रोग का इलाज कराने आये थे। आर्थिक रूप से कमजोर व मध्यम वर्ग के लोगों में एक धारणा थी कि कैंसर के इलाज के लिए टाटा मेमोरियल अस्पताल ही सर्वोत्तम है। अब टाटा अस्पताल से लेकर शेष सभी अस्पतालों का दरवाजा उनके लिए धीरे-धीरे बंद होते देख रोगियों के सिर पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा था। वे रोजाना मुझे मिलने आते थे। उन लोगों का एक ही अनुरोध, जल्दी घर वापसी की व्यवस्था करें।

इधर, स्वास्थ्य मंत्री द्वारा हवाई जहाज के जरिए रोगियों को असम लाने की व्यवस्था करने का आश्वासन दिए जाने के बाद उन्हें फिर से आशा की एक किरण दिखाई दे रही थी। वे काफी आशा के साथ यात्रा की तिथि घोषणा करने के दिन का इंतजार कर रहे थे। हवाई यात्रा के लिए जरूरी पहले चरण की कोविड जांच 30 अप्रैल को ही संपन्न हुई थी और दूसरे चरण की जांच के लिए 2 मई का दिन निर्धारित किया गया था। पहली बार की भांति सामाजिक दूरी का पालन करते हुए निर्धारित समय पर रोगी व उनके अभिभावक असम पहुंचने लगे थे। यात्रा के लिए

इच्छुक कई यात्री इस बार नदारद थे। असम भवन में कोविड संक्रमण का मामला पाए जाने के बारे में प्रचार होने के कारण वे लोग भवन परिसर में आना नहीं चाह रहे थे। थाइरोकेयर का दल सुबह ही पहुंचकर अपने-अपने काम में व्यस्त हो गया था। शिविर की शुरुआत सुबह 9 बजे हो गई थी। पहले की तरह इस बार डॉ. निलाक्षी को उनके माहिम स्थित घर से लाने के लिए असम भवन की ओर से कोई नहीं गया था, क्योंकि हम उन्हें बेकार में एक्सपोज करना नहीं चाहते थे। थाइरोकेयर के डॉ. सिजर से बात कर इस बार कोविड परीक्षण के लिए इच्छुक यात्रियों की प्रिस्क्रिप्शन डॉ. निलाक्षी को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इंटरनेट के जरिए भेज दी गई थी। वे इन कागजातों की परीक्षण कर प्रिस्क्रिप्शन लिख कर इंटरनेट के जरिए वापस भेज दी थीं।

दोपहर करीब दो बजे त्रिनयन ने जुबिन और गरिमा की कोविड परीक्षण के बारे में मुझे याद दिलाया। भवन में गाड़ी चालकों का भी अभाव था, क्योंकि संक्रमण के डर से वे गाड़ी चलाने के लिए डर रहे थे। चालकों के साथ मैं भी जोर-जबरदस्ती करना नहीं चाहता था। कोविड संक्रमण का मामला प्रकाश में आने के बाद मैं भी क्वार्टर में नहीं रह रहा था, क्योंकि मुझे रोगियों के साथ हमेशा जुड़े रहना पड़ता था। जिसके चलते मेरी पत्नी आइनु और भवन की पहली व दूसरी मंजिल में रहने वाले रोगियों को जोखिम में नहीं डालना चाहता था। इसलिए ग्राउंड फ्लोर में स्थित मेरे कार्यालय में ही एक बिस्तर लगाकर मैं वहीं रहता था। उक्त अस्थाई कमरे से मैं पीपीई किट पहनकर जुबिन को लाने के लिए एंबुलेंस के चालक की सीट पर बैठ गया और सांताक्रूज की ओर रवाना होने लगा।

'एसबीआई, लाइफ' द्वारा दान किए गए एमएच-43-बीजी-6351 नंबर का एंबुलेंस लॉकडाउन के वक्त हमारे लिए प्राणकेंद्र बन गया था। रोगी को चिकित्सालय ले जाने, आपातकालीन परिस्थिति के लिए, दवा लाने और असम के प्रवासी श्रमिकों को राहत सामग्री देने के लिए इस एंबुलेंस का प्रयोग किया गया था। असम भवन से सिंबुर होकर छत्रपति शिवाजी की मूर्ति के सामने नवनिर्मित फ्लाइओवर के नजदीक पहुंचते ही दाईं तरफ मोड़कर वांद्राकुर्ला कॉप्लेक्स पहुंच गया। सड़क बिल्कुल खाली थी। कुछ स्थानों पर मुंबई पुलिस गाड़ियों को रोक रही थी और सवारियों से विभिन्न सवाल कर रही थी। कुछ लोगों को आगे जाने की अनुमति मिली थी और कुछ वाहनों वापस भेज दिया गया था। यहां से आगे बढ़कर मैं मुंबई विश्वविद्यालय होते हुए सीधा सांताक्रूज फ्लाइओवर पहुंच गया

और वहां से दाईं ओर मोड़ कर छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर आगे बढ़ने लगा। यह सोचकर आश्चर्य लगा था कि आम तौर पर इस रास्ते पर आधा किलोमीटर जाने के लिए कभी कभार आधा घंटा तक लग जाता था। उस दिन एक मिनट में ही तय कर लिया। हर चौराहे पर पाइरेटेड किताब लेकर पहले एक अद्भुत दाम बताकर बाद में आधा दाम पर देने वाले छोटे-छोटे बच्चे तथा उनके पीछे-पीछे गाड़ी के शीशे पर काफी देर तक ठोकर मारने वाले भिखारी उस दिन नदारद थे। न जाने उन छोटे-छोटे बच्चे अब कहां चले गए? छत्रपति शिवाजी हवाई अड्डे का सेंट्रल टॉवर क्रॉस करने के बार अंधेरी फ्लाइओवर पहुंचने से पहले एंबुलेंस को दाईं तरफ मोड़ दिया। इस इलाके में भारत के सबसे विलासी पांच सितारा होटल अवस्थित है। थोड़ा आगे बढ़ते ही 'होटल ललित' दिखाई दिया।

जुबिन, गरिमा, पार्थ और सिद्धार्थ होटल के बाहर ही खड़े थे। उन लोगों से मैं फोन पर संपर्क में था। जुबिन एंबुलेंस की फ्रंट सीट पर मेरे सामने ही बैठ गए। बाकी लोग पीछे के दरवाजे से अंदर आए। मुझे पीपीई किट में देख शायद वे लोग कुछ पल के लिए आश्चर्यचकित हो गए थे। चाहे लाख सुरक्षा दें, लेकिन पीपीई किट परिधान करने पर एक व्यक्ति सर्कस के सफेद क्लाउन की तरह दिखता है। मुझे मालूम था कि उन लोगों की सुरक्षा के लिए मैंने पीपीई किट पहन रखा था, क्योंकि मैं एक कोविड संक्रमित इलाके से आ रहा हूं। शायद उन्हें भी निश्चित रूप से इस बात की जानकारी होगी। जिसके चलते मेरी इस असामान्य पोशाक के बारे में उन लोगों ने कोई चर्चा नहीं की। जुबिन ने एक मास्क पहन कर रखा था। पहले की भांति मजाकिया अंदाज में ही उन्होंने मुझे कहा कि उन्होंने गत कुछ दिनों से एक 'नया लुक' बनाया है। मास्क को नीचे कर उन्होंने अपना चेहरा दिखाया। देखने में 'पाइरेट्स ऑफ द कैरेबियन' नामक अंग्रेजी फिल्म के जॉनी डेप की दाढ़ी बनाने की स्टाइल जैसा ही था। गरिमा ने बताया कि वे लोग जितना जल्द हो सके असम वापसी की कोशिश कर रहे हैं। चालीस मिनट में ही हम 'असम भवन' पहुंच गए। असम भवन में जुबिन के आगमन की खबर किसी को नहीं दी गई थी। फिर भी असम भवन में ठहरे कुछ अतिथियों को इसकी भनक मिल गई थी और जुबिन को देख इन लोगों में हंगामा मच गया था। कड़ा निर्देश दिया गया था कि कोई भी कमरे से बाहर न निकले, जिसके चलते वे लोग जुबिन के पास नहीं आए थे। बावजूद इसके कुछ दुःसाहसी फैन्स ने सभी बाधाओं को तोड़कर जुबिन के साथ दांत दिखाते हुए कुछ सेल्फी लीं। जुबिन को असम भवन में स्वागत के लिए

त्रिनयन व्यस्त हो गए थे। गरिमा, पार्थ और सिद्धार्थ को रोगियों से सौहार्द्रपूर्वक भेंट व ठहरने के लिए सुइट को दिखाने में त्रिनयन व्यस्त थे। करीब डेढ़ घंटे तक जुबिन असम भवन में रुकें, लेकिन उन्होंने असम भवन के अंदर प्रवेश नहीं किया। भवन के पीछे मुक्त स्थान पर बैठक चाय की चुस्की ली थीं। कोविड परीक्षण के बाद थोड़ा समय हमारे साथ बिताने के बाद मैं फिर उन्हें होटल में छोड़ने गया था।

दो मई के दिन जुबिन और गरिमा के अलावा कुल 77 लोगों की कोविड जांच हुई थी। रिपोर्ट 3 मई शाम को मिली। जुबिन और उनकी टीम की रिपोर्ट निगेटिव आई थी। उस दिन की परीक्षण में भवन भवन में चिकित्साधीन मलया चौधुरी नामक एक महिला और भवन के सफाई कर्मियों के सुपरवाइजर रवि सिंह की रिपोर्ट पॉजिटिव आई। खबर का मुझ पर विशेष कुछ असर नहीं पड़ा। सबसे पहले रवि सिंह को खोज निकाला गया और उन्हें सरकारी निर्देशानुसार तत्काल पानवेला स्थित क्वारंटाइन सेंटर में रिपोर्ट करने को कहा गया। मलया चौधुरी को लेकर कुछ जटिलताओं का सामना करना पड़ा। उनकी शारीरिक स्थिति खराब थी। कैमोथेरेपी लेते हुए बस कुछ ही दिन हुए थे। उससे भी चिंताजनक बात यह थी कि किसी की मदद के बगैर वह खड़ी व चल भी हो पाती थी। अभिभावक के रूप में उनके साथ पति हेमप्रसाद सेनापति थे। उन्हें कोविड पॉजिटिव की जानकारी देना हमारी मजबूरी थी। खबर मिलते ही हेमप्रसाद पूरी तरह टूट गए थे और स्वागत कक्ष के बगल में एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ गए थे। काफी धैर्य के साथ मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि 'असम भवन' के प्रत्येक कर्मचारी उनके साथ हैं तथा उन्हें किसी तरह की दिक्कत होने नहीं देंगे। उन्हें जब बताया गया था कि हमें मलया चौधुरी को जल्द नवी मुंबई के वाशी की 9 नंबर सेक्टर स्थित अस्पताल स्थानांतर करना होगा, तब हेमप्रसाद एक छोटे बच्चे की भांति रोने लगा था। वह बार-बार एक ही बात करने लगे कि जो महिला किसी के सहारे के बिना चल नहीं सकती है उसे कैसे अस्पताल के कोविड वार्ड में अकेले छोड़ सकते हैं। दूसरी ओर वह कैमोथेरेपी लेने वाली रोगी है। काफी समझा बुझाकर हेमप्रसाद को इसकी जानकारी देने के लिए उनकी पत्नी के पास भेज दिया गया। अनुभव से सीख मिली थी कि जिंदगी के कुछ पलों में मनुष्य को समस्या समाधान के लिए अकेला छोड़ देना चाहिए। कुछ समस्याएं ऐसी होती है जहां आप चाह कर भी मदद नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में कुछ भला करने की कोशिश करने पर मामला उल्टा अधिक बिगड़ ही जाता है। हेमप्रसाद अपने कमरे में चले जाने के बाद मैं नगर निगम की एक

परिचित महिला चिकित्सक को फोन पर ही निगम अस्पताल में एक सीट की व्यवस्था करने का आग्रह किया। काफी दबाव के बावजूद महिला चिकित्सक ने मुश्किल से एक सीट का जुगाड़ कर दिया। उन्होंने एक एंबुलेंस भेजने का भी आश्वासन दिया।

सीट तय होने के बाद मुझे एक बार फिर पीपीई किट पहनकर असम भवन के तीसरे तल्ले की कमरा नंबर 314 में जाना पड़ा। मलया और हेमप्रसाद वहीं थे। मुझे देखते ही मलया ने रोना शुरू कर दिया। बार-बार अनुरोध करने लगी कि उन्हें अस्पताल भेजने के बजाय असम भवन में ही चिकित्सा की व्यवस्था की जाए। उन्हें चिंता हो रही थी कि कोविड पॉजिटिव की खबर मिलते ही उनके पिता दुखी हो जाएंगे। मलया ने रो-रो कर हेमप्रसाद से अपने पिता के साथ फोन पर बात कराने का अनुरोध करने लगी। इसकी खबर मिलते ही मलया के पिता ने दुखी मन से मुझे फोन पर बताया था कि उसकी बेटी का दायित्व अब मेरे ऊपर है। मुझे जो अच्छा लगे वहीं करने को कहा था। हेमप्रसाद और मलया को थोड़ा समझाने की कोशिश की और एंबुलेंस आते ही उन्हें अस्पताल ले जाने की बात कह कर कुछ खाने के लिए मैं अस्थाई कमरे में चला आया। मेरी पत्नी आइनु को फोन पर ही इसकी विस्तृत जानकारी दी गई थी। बातों ही बातों में आइनु अक्सर अल्टरनेटिव मीडिया का जिक्र करती थी और विभिन्न स्रोतों से संगृहीत तथ्य के साथ मुझे समझाने की कोशिश की थी कि कोविड-19 और लॉकडाउन की आड़ में कई गुप्त बातें छिपी हुई है, जिसे हम सिर्फ मेनस्ट्रीम की मीडिया पर भरोसा कर अवहेलना कर रहे हैं। उनके अनुसार यथा समय पर पूरी दुनिया को कोविड-19 की आड़ में छिपे रहस्य पता चल जाएगा और कई शक्तिशाली राष्ट्रों के निकृष्ट कार्यों का पर्दाफाश होगा। आइनु की बातें गौर से सुनने पर उनकी तथ्यों के आधार पर कई मतलब निकल जाता था। कोविड-19 आविर्भाव होने के बाद लोगों को डराने का षड्यंत्र चल रहा था। लोगों को आतंकित करने के लिए यह प्रचार किया जा रहा था कि हृदय रोग, कैंसर रोग तथा अन्य रोगों के चलते मरने वालों में से अधिकतर लोगों की मौत कोविड-19 के कारण हुई है। कोविड-19 से संक्रमित अधिकर लक्षण विहीन रोगी स्वस्थ जाते थे। गौर से देखा जाए तो मृतकों की सूची में सिर्फ उन लोगों का नाम है जो पहले से किसी जटिल व अन्य रोग से पीड़ित थे। इसलिए कोविड-19 को लेकर सावधानी बरतना चाहिए, मगर आतंकित होने की कोई जरूरत नहीं है। किसे विश्वास में ले और किसे नहीं ले, मैं कभी कभार

दुविधा में पड़ जाता था।

डॉ. पाटिल के साथ बात करते हुए दो घंटा बीत गए थे, लेकिन मलया को लेने एंबुलेंस नहीं पहुंची। रात धीरे धीरे गहरी हो रही थी। जितना विलंब हो रहा था, उतना ही निगम के अस्पताल में सीट मिलना कठिन होता जा रहा था। डॉ. पाटिल ने उस दिन मुझे कर्तव्यरत रेसिडेंट मेडिकल ऑफिसर से मिलने की सलाह दी थी और रात्रि 9 बजे से पहले अस्पताल पहुंचने की बात कही थी। लेकिन रात्रि 8.30 बजे तक एंबुलेंस नहीं पहुंचने पर मैने तय किया कि खुद 'दीपशिखा' एंबुलेंस लेकर मलया को अस्पताल पहुंचाना होगा। 'असम भवन' के इलेक्ट्रिशियन विपुल मालाकार को बुलाकर एंबुलेंस के चालक की सीट के पीछे एक बेरियर बनाने को कहा। विपुल ने चपरासी लक्ष्मीराम कलिता और हरीश मंडल की मदद से अतिशीघ्र पुरानी फ्लेक्स और पर्दे के कपड़े से एक सुंदर स्क्रीन तैयार कर यथास्थान पर लगा दिया। कमरा नंबर 314 से मलया को एक ह्वील चेयर पर बिठाकर उनके पति के साथ असम भवन के नीचे लाकर एंबुलेंस में लेटा दिया। उन्हें कमरे से बाहर लाते समय मैने भवन के कर्मचारियों को बाहर निकलने से मना कर दिया था, क्योंकि संक्रमण का खतरा था। मैं असम भवन के किसी भी कर्मचारी व अधिकारी को कोविड संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में नहीं आने देना चाहता था। उन लोगों के घर में छोटे-छोटे बच्चे हैं। जिसके चलते जरूरत पड़ने पर सभी नीति-नियमों का पालन करते हुए संक्रमितों के संपर्क में खुद आने का निर्णय लिया था। 15 मिनट के अंदर हम सेक्टर 9 स्थित नगर निगम का अस्पताल पहुंच गए थे। पंजीयन के लिए करीब दो घंटे तक चिकित्सकों व टेबलों का चक्कर लगाना पड़ा था। दुर्भाग्य से डॉ. पाटिल ने चिकित्सालय में हमारे बारे में कोई सूचना नहीं दी थी और रेसिडेंट मेडिकल ऑफिसर की ड्यूटी भी 9 बजे खत्म हो चुकी थी। हमारी मुलाकात एक अलग रेसिडेंट मेडिकल ऑफिसर से हुई थी। सबसे पहले उन्होंने हमें अस्पताल में सीट खाली नहीं होने की बात कही थी और नवी मुंबई स्थित एक अन्य मेडिकल में रोगी को स्थानांतर करने की सलाह दी थी। काफी पैरवी और डॉ. पाटिल की बात कहने पर उन्होंने पीड़ित को बरामदे में रखने की अनुमति और सीट खाली होने पर सूचना देने का आश्वासन दिया था।

उधर, धीरे धीरे मैं महसूस कर रहा था कि पीपीई किट के अंदर रहना कितना कष्टदायक है। उमस भरी गर्मी से राहत पाने के लिए नाक के जरिए अंदर आ रही हवा पर्याप्त नहीं था। ऐसा लग रहा था मैं कि मई महीने के दोपहर धू धू कर जल

रही आग के सामने बैठकर खाना पका रहा हूं। पसीने से कपड़े भीग गए थे और माथे से पसीना टपक रहा था। ठीक उसी समय एक डाक्टर ने आवाज दी- 'यहां पर हेमप्रसाद कौन है?'

हेमप्रसाद की स्थिति बदतर बनी हुई थी, नाम सुनकर तुरंत कहने लगा- 'मैं मैं'।

डाक्टर ने कहा, 'रेडी हो जाओ, रेडी हो जाओ जाने के लिए'।

हम दोनों दंग रह गए और एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। डाक्टर साहब हेमप्रसाद को कहां जाने के लिए कह रहे हैं। थोड़ी पूछताछ के बाद पता चला कि हेमप्रसाद को अतिशीघ्र इंडिया बुल्स बिल्डिंग के ओल्ड पानवैल क्वारंनटाइन केंद्र लेकर जाएगा। यह बात सुनकर हेमप्रसाद डर के मारे कांप उठे। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था हंसे कि रोए। डाक्टर से हेमप्रसाद काफी देर तक दया-याचना करते रहे, लेकिन डाक्टर ने उनकी एक न सुनी। वह जानना चाहता था कि बिस्तर पर लेटी एक महिला जो कैमोथेरेपी लेने के बाद शरीरिक रूप से बिल्कुल अस्वस्थ चल रही थी, पति के बिना कोविड वार्ड में बेचारी की क्या दशा होगी? लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। कुछ कर पाने की चाहत में मैंने भी चिकित्सकों से हरसंभव अनुरोध किया था, लेकिन उन्होंने कहा- 'नियम तो नियम ही है'।

मैं सोचकर हैरान था- ये कैसे नियम हैं? लेकिन चिकित्सकों के साथ वाद-विवाद में लिप्त होने का भी कोई तर्क नहीं था। उन्हें भी काफी दबाव में करना पड़ रहा था। मैने अपनी आंखों से देखा था कि हर आधा घंटे के बाद कम से कम दो नए कोविड रोगी एंबुलेंसों द्वारा लाया जा रहा था। मलया को हमारे एंबुलेंस में एसी ऑन कर लेटाकर आया था। हेमप्रसाद व मैं बीच-बीच में जाकर उन्हें देखकर आया करता था। इस बार जब उन्हें देखने गया तो देखा कि एंबुलेंस की फ्यूल टैंक का काटा लाल दाग तक पहुंच गया है। इधर एसी कब तक चलाना पड़ेगा इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसलिए असम भवन में फोन कर ध्रुवज्योति शर्मा को भवन की बस से थोड़ा डीजल लाने का आग्रह किया। लॉकडाउन के कारण रात्रि आठ बजे के बाद सभी पेट्रोल पंप बंद हो गए थे। तभी खबर मिली कि अस्पताल में एक सीट खाली हो रहा है। विलंब करे बगैर मैं चिकित्सक के पास पहुंच गया। काफी कम उम्र के हाउमैनशिप कर रहे दो चिकित्सक ड्यूटी में तैनात थे। उन्हें शायद उस दिन पहली बार ड्यूटी मिला था। हमने जाकर उन्हें सीट खाली होने की जानकारी दी, लेकिन कुछ करने के बजाय उल्टा वे सिर्फ हमारी तरफ देख रहे थे। हमें कहा कि

आरएमओ को पूछना पड़ेगा।

हम आरएमओ के पास गए, उन्होंने कहा वार्ड सिस्टर को पूछना पड़ेगा।

एक टेबल की ओर इशारा करते हुए कहा- 'उसको पूछो'।

टेबल के पास पहुंचकर देखा कि एक हट्टा कट्टा व्यक्ति फोन पर बात करने में मशगूल है। करीब दस मिनट तक उनके पास ही खड़े रहे, लेकिन वे शख्स फोन पर बात खत्म करने का नाम ही नहीं ले रहे थे। धैर्य का बांध टूट रहा था और फिर उनके हाथ को थोड़ा छूकर कहा- भाई साहब ! उन्होंने हमारी तरफ थोड़ा सा चेहरा घूमाकर भौं उठाकर पूछा- क्या हुआ? चेहरे को फिर घूमाते हुए फोन पर बात करने लगे। उस दिन मुझे समझ में आया कि कुछ नौकरी, पदवी व किसी संस्थान में कोई परिचित व्यक्ति न होने पर आम जनता को काफी कष्ट झेलना व परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

गुस्सा चरम पर था। आरएमओ के पास पहुंचकर अंग्रेजी में ही खुब बकना शुरू कर दिया। हमारे देश में अच्छी तरह अंग्रेजी बोल पाने से दूसरा पक्ष थोड़ा महत्व देता है तथा कभी कभा काम भी हासिल हो जाता है। इस बार आरएमओ जी ने मेरी 'संयुक्त आवासीय आयुक्त' पद की बात अंग्रेजी में कहने पर थोड़ा ध्यान देने लगे। मुझे 'ओके, ओके' कह कर वार्डबॉय को बुलाया और हमें मलया को महिला कोविड वार्ड में लाने को कहा। हम एंबुलेंस की तरफ लौटे और मलया को एक स्ट्रेचर में लेटाकर कोविड वार्ड की ओर जाने लगे।

उधर, हेमप्रसाद को क्वारंटाइन केंद्र में ले जाने के लिए अस्पताल के वार्डबॉय बार-बार आ रहे थे। मैने उन्हें अनुरोध किया कि अंततः उन्हें अपनी पत्नी को कोविड वार्ड के बिस्तर पर छोड़ने का एक मौका दिया जाए। उन्हें भी मामला समझ में आया था और हमें हरसंभव मदद करने की कोशिश कर रहे थे। मानवता की दिशा में कभी कभार एक वार्डबॉय व वार्डगर्ल का मानवता का बोध विभिन्न समाज के ऊंचे आसन पर बैठे कुछ लोगों से अधिक होते हैं। यह जानकर बुरा भी लगा था कि क्वारंटाइन केंद्र में जाने वाली आखिरी बस में कुछ अन्य लोगों को बैठाकर सिर्फ हेमप्रसाद के लिए रुकी हुई है। मलया को वार्ड में ले जाकर बिस्तर पर लेटा दिया गया और उन्हें अच्छी तरह समझाया गया कि हेमप्रसाद उन्हें देखभाल नहीं कर सकेंगे, उनके स्थान पर असम भवन की ओर से हम सारी जिम्मेदारियों का पालन करेंगे। मलया भी स्थिति को समझ रही थी। मानना होगा कि उस समय उन्होंने एक अद्भुत आत्मबल का प्रदर्शन किया था। सिर्फ एक रात

के लिए हमने उनसे विदाई मांगी। मैने हेमप्रसाद को क्वारंटाइन केंद्र की बस में बैठा दिया। कुछ भी चिंता नहीं करने का आश्वासन देते हुए मैं असम भवन की ओर रवाना होने लगा।

समय बीतने के साथ-साथ हमारे रोगी और उनके अभिभावक बार-बार पूछने लगे कि हवाई जहाज कब जाएगी। उनमें से कुछ लोगों को हवाई सफर का अनुभव नहीं था। हवाई यात्रा का किराया अधिक होने के चलते वे किफायती दर पर ट्रेन में ही आवाजाही कर इस खर्चीले रोग का इलाज करा रहे थे। कई लोगों के मन में ऊहापोह की स्थिति भी बनी हुई थी। कुछ लोग बीच-बीच में मेरे ऑफिस आकर हवाई सफर के नीति-नियमों के बारे में भी पूछा करते थे।

हमारा प्रयास अरण्य रोदन साबित हुआ और सारा गुड़ गोबर हो गया। 4 मई को खबर मिली कि हमारे रोगियों के बीच कोविड पॉजिटिव का मामला प्रकाश में आने के बाद जिस हवाई जहाज कंपनी के साथ उन्हें ले जाने की बात हुई थी, उसने जाने से इनकार कर दिया। इसकी खबर मिलते ही 'असम भवन' और 'आरोग्य भवनों' में शोक की लहर दौड़ गई, शायद इसी को हर्ष-विषाद कहा जाता है। झुंड में पहुंचे रोगी और उनके अभिभावकों ने मुझे ऑफिस में ही घेर लिया और उनमें से कोई रो रहे थे तो दूसरे को गुस्सा आया था और कोई मेरे टेबल के पास खड़ा होकर बिल्कुल मौन हो गए थे। असम सरकार को प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति होने के नाते कुछ लोगों गुस्सा मेरे ऊपर ही फूट रहा था। कुछेक ने मुझे कहा था कि सरकार उन्हें कोविड संक्रमण से तो बचाना चाहती है, लेकिन इस कदर बिना किसी चिकित्सा के कैंसर रोगियों को मुंबई में ही रहना पड़ेगा तो इसका परिणाम उन्हें भलीभांति मालूम है। ज्यादातर रोगी बुरी तरह हताश हो गए थे। उनका सिर्फ एक ही लक्ष्य था, जितना जल्द हो सके असम लौट जाए और असम पहुंचकर अतिशीघ्र चिकित्सा शुरू करना है। उन लोगों की मानसिक स्थिति मैं अच्छी तरह समझ रहा था, लेकिन कोई बेहतर वैकल्पिक मार्ग दिखाने के लिए मैं उस वक्त तैयार नहीं था।

सभी से धैर्य व संयम बरतने का अनुरोध किया था और आश्वासन दिया था कि शीघ्र ही उन्हें असम ले जाने की व्यवस्था की जाएगी। कैंसर रोग के साथ एक दीर्घकालीन संबंध होने के कारण कैंसर रोगी और उनके अभिभावकों को शायद मेरी बातों पर विश्वास हुआ था। कई आशा लेकर वे लोग मेरे ऑफिस में आए थे और मन ही मन भरोसा जताते हुए वापस लौट गए थे।

मेरे मन में अचानक एक योजना आई। थोड़ा सोच कर मैं फिर माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी को फोन किया। उन्हें फोन करने पर दरअसल वे मेरे फोन को कभी दरकिनार नहीं करते। तत्कालीन परिस्थिति के मद्देनजर मैने तय किया था कि हमें ऐसे एक व्यक्ति की जरूरत है जो सरकारी शिकंजे की परवाह किए बगैर एक स्पष्ट निर्णय दे सकें। मुझे यकीन था कि ऐसे निर्णय लेने वाले एकमात्र व्यक्ति हमारे माननीय स्वस्थ्य मंत्री जी ही हैं।

सर को फोन पर ही सारी आपबीती सुनाई और कहा कि अगर वे सहमति प्रदान करेंगे तो हम मरीजों को स्लीपर बस के जरिए ले जाने की व्यवस्था करेंगे। मंत्री जी ने एक ही बार में हमारे प्रस्ताव सिर्फ सहमति ही नहीं, बल्कि मरीजों को मुंबई की सबसे प्रतिष्ठित और भरोसेमंद कंपनी से 'मोस्ट कॉम्फोर्टेबल' बस किराए में लेकर, बीच रास्ते में बिना किसी असुविधा के असम लाने की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। पैसों की चिंता उन्होंने अपने सिर पर ले लिया। मंत्री जी को हम सभी की ओर से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन किया था। मन में फिर आशा की किरणें जग उठीं।

हमारे मरीजों को बस से ले जाने का निर्णय तो ले लिया गया, लेकिन इसे अमली जामा पहनाना कोई आसान कार्य नहीं था। मंत्री जी के साथ बात करते वक्त जोश में आकर मैने सोचा ही नहीं था कि इस भारी दायित्व का पालन हमें करना होगा। असम भवन के जयेश, ध्रुव, मृदुल और राजू को तत्काल मेरे ऑफिस में बुलाकर निर्णय के बारे में अवगत किया गया। उन लोगों ने भी एक ही स्वर में निर्णय पर सहमति जताई थी। (ये चारों सहकर्मी मेरे ढाल-तलवार जैसे थे। 'असम भवन' संचालन करने में हर पल वे लोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हमेशा मेरा साथ देते थे।)

हमें लक्ष्य तक पहुंचने के लिए फिर से आशा दिखाई दे रही थी। दरअसल, उस वक्त कैंसर रोग, आशा और निराशा के बीच एक अद्भुत लड़ाई चल रही थी। इस लड़ाई के विजेता वह व्यक्ति बने थे, जिहोंने आशा, दृढ़ता और आत्मविश्वास को अपना ढाल बना लिया था। उस विश्वास को मन में ठान लेते हुए आशा का सूरज ढूंढने यात्रा पर निकल पड़ा था।

चौथा अध्याय

यात्रा की योजना तथा तैयारी

4 मई को रात में मैंने अपने दीपशिखा की आजीवन सदस्य तथा वित्त विभाग के प्रमुख श्रीमती नीता दोशी को फोन किया। मैंने पहले भी इस बात का उल्लेख किया है कि यह महिला काफी प्रभावशाली है। उनका विभिन्न क्षेत्रों के काफी लोगों के साथ अच्छे संबंध तथा संपर्क हैं। हवाई जहाज कंपनियों से संपर्क साधने में भी उन्होंने हमारी मदद की थी। उनके संपर्क के माध्यम से ही हमारे रोगियों की आरामदायक बस यात्रा के लिए मुंबई के किसी विख्यात कंपनी की बसें मिल सकती हैं क्या, यह आग्रह करने के लिए मैंने उन्हें फोन किया था। हमने अपने स्तर पर अलग-अलग ट्रैवेल कंपनियों को भी फोन किया था। असम भवन में कोविड-19 के संक्रमित होने की खबर मीडिया में आ जाने के बाद भय से कोई ट्रैवेल

एजेंसी हमारे रोगियों को लेकर जाने को तैयार नहीं हो रही थी। उस समय बस से ले जाने के बाद तो दूर, कोविड रोग का नाम सुनते ही लोग भय से कांपने लगते थे।

इस बीच मेरी ओर से माननीय स्वास्थ्य मंत्री को दिये गये प्रस्ताव की जानकारी प्रशासनिक गलियारे में कई लोगों को हो चुकी थी। साथ के कई वरिष्ठ, मेरे शुभचिंतक अधिकारियों ने मुझे फोन करके सावधान किया था कि मैं बहुत बड़ा खतरा मोल ले रहा हूं। साथ ही यह भी समझाया था कि ऐसे रोगियों को लेकर लगभग अढ़ाई हजार किलोमीटर के सफर के दौरान यदि किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ा तो सरकार के साथ मेरी बदनामी की आशंका हो सकती है। मेरे वरिष्ठ अधिकारी मेरे हित में ही अपनी राय दे रहे थे। लेकिन मैं अपनी राय पर अटल था। हमारे सामने मुंबई में चिकित्सा नहीं करा पाने वाले कैंसर रोगी की चिकित्सा एक बड़ी चुनौती थी। जिसके सामने बाकी बातें गौण लग रही थीं। अनेक शुभचिंतकों ने इस यात्रा को मेरा दु:साहस बताया और कहा कि दूसरे के लिए मैंने मुसीबत ओढ़ ली है। कुछ ने तो इस यात्रा के अशुभ होने की भविष्यवाणी भी कर दी थी। यह कहना गलत होगा कि कई दिशाओं से ऐसी हताश करने वाली बातों का प्रभाव मेरे मन पर नहीं पड़ा था। मैं भी किचिंत असमंजस में पड़ गया था। मन पर कई तरह के प्रश्न उठ रहे थे। लेकिन अंत में एक बात बार-बार मन में आ रही थी कि जीवन में कभी-कभी सिर्फ यर्थाथवादी होने से नहीं होगा। कभी-कभी विवेक जिसे उचित मानता है, उसे ही करना चाहिए। वैसा ही करने का समय आ चुका था।

5 मई की सुबह नीता दोशी ने सूचना की दी कि नीता वाल्वो नामक मुंबई की सर्वपरिचित एक विख्यात और भरोसेमंद कंपनी के मालिक सुनील भाई अपनी छह बसें हमारी यात्रा के लिए भाड़ा पर देने को तैयार हो गये हैं। नीता ने मुझे सुनील भाई का फोन नंबर भी दे दिया। मैंने तत्काल सुनील भाई से बातचीत की। पहले उन्होंने भी कोरोना संक्रमण से पैदा हुई स्थिति को दोहराया, लेकिन जब मैंने अपनी स्थिति के बारे में उन्हें विस्तार से समझाया तो वे अपनी एक टीम के साथ छह बसें असम भेजने को राजी हो गये। उनके आश्वासन के बाद हमलोगों ने 8 मई को अपनी यात्रा आरंभ करने का निर्णय लिया। हमारी ओर से उन्हें बताई की बातों के अलावा नीता के साथ उनका गुजराती कनेक्शन भी काम आया। इतने दिनों तक मुंबई में रहते हुए मैंने गुजराती लोगों के बीच एकजुटता देखकर अभिभूत था। दुख-सुख, विपद-आपद तथा व्यवसायाय के क्षेत्र भी एक गुज्जु भाई या गुज्यु बेन का

अन्य एक गुजराती की मदद के लिए बिना किसी संकोच आगे आना एक साधारण बात है। किसी के साथ व्यापार करने के दौरान वे एक-एक पैसे का हिसाब लेते हैं, भोग-विलास में आमतौर पर कम पैसे खर्च करते हैं और हवाई जहाज के टिकट कटाने में भी दर-मोल करते हैं। अनेक लोग अपनी एक निजी गाड़ी खरीदने की जगह टैक्सी से आना-जाना करते हैं। हमारे असम के कुछ बरपेटिया व्यवसायी की तरह 10 बसों के मालिक होने के बावजूद घर के लिए एक छोटी गाड़ी भी नहीं खरीदते हैं। जरूरत पड़ने पर टैक्सी से आना-जाना करते हैं। अधिकांश समय थाकरा, घामन, धोखला, थेपला, फाफड़ा और सुंदा जैसे पारंपरिक वस्तु खाते हैं। लेकिन ऐसे व्यक्ति को अच्छे काम के लिए करोड़ रुपए दान देते देख अचरज होता है।

एक विश्वसनीय बस कंपनी को राजी करना एक बड़ी चुनौती थी। मुझे लगा कि नीता की वोल्वो के सुनील भाई के बीच जारी संवाद के अलावा भी मुंबई के कुछ और कंपनियों के साथ बात करना बेहतर होगा। अपने ऑफिस के पिउन लक्ष्मीराम कलिता को एक बढ़िया चाय बनाने के लाने को कहा और आगे की यात्रा के बारे में विस्तार से योजना बनाने में लग गया। हमारे साथ काम करने वाले प्रत्येक अधिकारी में कुछ ने कुछ विशेषता है। उनके साथ बातचीत करने के दौरान किसी भी परिस्थिति या माहौल में कई राह दिखने लगती हैं। जयेश कुमार केरल के कोट्टयम के निवासी तथा असम के दामाद हैं। यदि शैक्षणिक योग्यता की बात करें तो उनके पास मरीन इंजीनियरिंग का डिप्लोमा है। नौकरी आरंभ करने वक्त वे संविदा पर नियुक्त अधिकारी थे, लेकिन बाद में उनकी नौकरी नियमित हो गई। वे कुछ हद तक गुस्सैल और भावुक थे। जब भी मैं उन्हें कोई काम करने कहते, वे कभी न नहीं कहते थे। वे हर काम पूरी निष्ठा से पूरी करते। कभी क्रोध नहीं करते। ध्रुवज्योति शर्मा दूसरे अधिकारी थे। मंगलदै के आउलसोका में पैदा हुए थे। उसके बाद गौहाटी विश्वविद्यालय से अर्थनीति विषय में अच्छे नंबर से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। उनका स्वाभाव बड़ा शांत था। उन्हें कोई काम कहने पर, उस काम को करने के दौरान क्या परेशानी हो सकती है, इसे वे तत्काल भांप लेते थे। ध्रुव को कोई काम देने से वे बेहतर तरीके से पूरा करते, हालांकि बीच-बीच में उनकी पत्नी का फोन आते रहता, जिसे वे बेहद प्यार करते थे। तृतीय अधिकारी के रूप में राजू शर्मा वहां पर कार्यरत थे। यदि शैक्षणिक योग्यता की बात की जाये तो वे एक स्नातक थे। पिछले लगभग बाहर वर्षों से वे कैंसर रोगियों की नि:स्वार्थ

सेवा कर रहे थे। अब तक मैं उनकी नौकरी नियमित करने में विफल रहा था, इस बात को लेकर अफसोस भी है। वे अत्यंत बुद्धिमान और कर्तव्यपारायण थे। उन्हें चाहे जो भी काम देने पर मैं मानकर चलता था कि वह काम पूरा हो जाएगा। काम के दौरान उन्हें इस बात का अफसोस नहीं रहता है कि इतने दिनों तक कार्य करने के बाद भी उनकी नौकरी नियमित नहीं हो पाई है। डिफू के मृदुल हजारिका ने असम भवन, मुंबई में संविदा पर चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में योगदान किया था। हर काम को गंभीरता से करने वाले मृदुल हजारिका के चेहरे पर रहने वाली मीठी मुस्कान असम भवन वाले प्रत्येक अतिथि का मन जीत लेती है। वे सभी काम अच्छे तरीके से करते थे, लेकिन शाम के समय स्वागत कक्ष में कार्यरत उनकी पत्नी अनिमा कुछ समय आकर उनके पास आकर बैठ जाती थी।

हम असम भवन में एक परिवार के रूप में रहते आए हैं। हमारे समूह में लोक निर्माण विभाग के सेक्शन अधिकारी त्रिनयन संदिकै नामक एक दक्ष अभियंता भी थे। यदि वे सरकारी नौकरी नहीं करते और गिटार वादन को अपना पेशा बना लेते तो आज एक सफल गिटार वादक के रूप में उनकी पहचान होती। संदिकै जी के सिर पर हमेशा गुस्सा रहता। यदि उन्हें गुस्सा नहीं आया तो मेरे भ्राता तुल्य संदिकै हर कार्य वे पूरी निष्ठा से पूरी कर देते। उनके अलावा लक्ष्मीराम कलिता, महेंद्र दास, प्रदीप हालै, हरिश आइश मंडल, संतोष, विपुल मालाकार, वीरेन हालै, नजमूल हक और गणेश पाटिल समेत हमारे असम भवन, मुबंई में एक छोटा और सुखी परिवार था। सभी को साथ में लेकर असम भवन का कामकाज सफलतापूर्वक चला रहा था। अधिकांश कर्मचारी असम भवन में अपने-अपने परिवार के साथ रहते हैं। उनके बच्चे भी मेरी नजरों के सामने पले-बढ़े हैं। सभी मुझे बड़े पिता जी और मेरी पत्नी आइनु को बड़ी मां के रूप में पुकराते हैं। अन्य असम भवनों की तुलना में हमारे कर्मचारियों की संख्या बहुत कम है। फिर वे सभी इसे अपना घर समझकर हर काम बड़ी निष्ठा से करते हैं। इसलिए असम भवन, मुंबई के बारे अच्छी धारणा है।

सभी अधिकारियों को यात्रा की तैयारी की जिम्मेदारी समझा दी गई। जयेश और ध्रुव को जाने के इच्छुक यात्रियों से संपर्क करने तथा यात्रा के कार्यक्रम के बारे समझाने की जिम्मेदारी दी गई। यह जिम्मेदारी बेहद मुश्किल और जटिल थी। क्योंकि वापस असम जाने को इच्छुक अधिकांश यात्री असम भवन या दीपशिखा आरोग्य भवन से बाहर रहते थे। किसी कारण से यदि बाहर रहने वाला कोई रोगी

सही सूचना के अभाव में जाने की इच्छा के बावजूद जाने से वंचित रह जाता है तो परिणाम बड़ा दुखद होगा। इधर ऐसे रोगी भी थे, जो मानसिक रूप से जाने को तैयार थे, लेकिन शारीरिक रूप से उनका जाना संभव नहीं था। उनके न ले जा पाने की स्थिति के बारे में बहुत धैर्यपूर्वक और कौशलपूर्ण तरीके से समझाना था। इस काम में राहुल और मृदुल ने ध्रुव और जयेश को समय-समय पर मदद कर रहे थे। लेकिन वे चाहकर भी ज्यादा समय नहीं दे पा रहे थे। क्योंकि उनके पास असम भवन के शेष कर्मचारियों के साथ असम भवन में श्रमिकों के लिए रोजाना सहायता वितरण की भी जिम्मेदारी थी।

इस बीच अन्य ट्रेवल एजेसिंयों से फोन पर किए गए संपर्क का परिणाम बहुत सुखद नहीं था। इसलिए हमने नीता वोल्वो की छह बसों को तय कर लिया। प्रत्येक बस पर दो ड्राइवरों तथा उनके राह खर्च के लिए प्रत्येक दिन 500 रु अलग से देना था। हमने जुबिन गर्ग के लिए एक कंपनी से बात करके अलग से एक बस ठीक कर लिया था और गरिमा से बात करके 5 मई की सुबह मुंबई से एक साथ निकलने का फैसला किया था। हालांकि बाद में ऐसा नहीं हो पाया। 6 मई को दिन के प्रथम भाग में हमने बसों का निरीक्षक किया और हमारे जाने के लिए निकले नीता वोल्वो के मैनेजर कमलेश भाई से बातचीत की। यात्रा के लिए अनुपति पत्र असम पुलिस के अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजीपी) हरमीत सिंह जी के माध्यम से प्राप्त कर लिया गया था।

लॉकडाउन के दौरान छह राज्यों के बीच से गुजरते हुए लगभग 2800 मिलोमीटर लंबी यात्रा के दौरान क्या-क्या चुनौतियां हो सकती हैं, इसे अच्छी तरह समझ लिया था। इसलिए भावी यात्रा के लिए हर बात पर पूरी तरह सोच-विचारे बिना जल्दीबाजी में मैं कोई निर्णय नहीं लेना चाहता था। उधर तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री ने एक संवाददाता सम्मेलन में असम की मीडिया के सामने मुंबई में फंसे असम के कैंसर रोगियों के लाने के बारे में घोषणा कर दी थी। हाथ में बहुत कम समय था। क्योंकि अधिकांश रोगी असम लौटकर अपनी चिकित्सा आरंभ करने के लिए व्याकुल थे। शाम का समय होगा। जयेश और ध्रुव से खबर मिली की अधिकांश इच्छुक यात्रियों को 5 तारीख को यात्रा के बारे में बता दिया गया है। लॉकडाउन की वजह से कुछ लोगों से अब तक संपर्क नहीं हो पाया है, लेकिन वे बात को लेकर दृढ़ थे कि रात तक सभी को बता दिया जाएगा। असम के स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पीयुष हजारिका व्यक्तिगत स्तर मेरे साथ फोन पर लगातार संपर्क में थे। उन्होंने

मुझे आश्वासन दिया था कि यात्रा के लिए राज्य सरकार की तरफ से सारी सुविधाएं उलब्ध कराई जायेंगी। रास्ते में होटल या ढाबे में यात्रियों को खिलाने के लिए भी धनराशि उपलब्ध कराई गई थी।

हमारी यात्रा के दौरान सर्वप्रथम तो यात्रियों के लिए एक डाक्टर की जरूरत थी। एक दुर्गम यात्रा। जिसमें सिर्फ कैंसर रोगी और उनके अभिभावक ही नहीं थे, हमारी इस यात्रा का समाचार पाकर असम से चिकित्सा के मुंबई लाये गये एक नवजात शिशु और उसके अभिवावक भी हमारे साथ जाने के लिए कातर अनुरोध कर रहे थे। जिस नवजात शिशु का मुंबई के नारायणा अस्पताल में ऑपरेशन हुआ था। हमने उन्हें अपने साथ ले चलने का भरोसा दिया था। कई परिचित डाक्टरों और एजेंसियों से संपर्क किया। पहले सुना था कि किसी रोगी को दूर जाने के लिए एंबुलेस में एक डाक्टर भी रहता है। हमने सोचा था कि यदि ऐसे एक-दो डाक्टर हमारे साथ चलेंगे तो यात्रा के दौरान किसी आपातकालीन स्थिति का मुकाबला कर सकेंगे। बात में पता चला कि एजेंसी की तरफ से उपलब्ध कराये गए लोग दरअसल डाक्टर नहीं, पारामेडिक्स हैं। सिर्फ पारमेडिक्स के भरोसे इस तरह की यात्रा करना उचित नहीं होगा। परिचित डाक्टरों ने अत्यंत विनम्रता से साथ चलने से मना कर दिया। उस समय एक नाम मन में आया। डॉ. नीलाक्षी चौधरी का। उनके साथ कुछ दिन पहले ही मेरा परिचय हुआ था। उन्होंने हमारे कैंसर रोगियों और उनके अभिभावकों के लिए कोविड-19 की जांच के दिन एक सौ से अधिक प्रिस्क्रीप्सन लिखकर हमारी मदद की थी। बडी उम्मीद से डॉ. नीलाक्षी चौधरी को फोन किया और अपने रोगियों की स्थिति के बारे में बताया। इसके साथ ही इस यात्रा में सहयात्री बनने के विनम्र अनुरोध किया। डॉ. नीलाक्षी के बात करने के लहजे से हमारे प्रति सहानुभूति का भाव परिलक्षित हो रहा था। उन्होंने अपने पिता और पति से बात करने के लिए अंतिम फैसला के बारे में सूचित करने का आश्वासन दिया। करीब दस मिनट बाद ही उन्होंने फोन करके बता दिया कि वह हमारे साथ चलेंगी। उनकी बात सुनते ही मुझे लगा कि आने वाले युद्ध में विजयी हो गया।

दूसरी महत्वपूर्ण बात थी यात्रियों की खाने-पीने की व्यवस्था करना। मैं अच्छी तरह जानता था कि इस काम के लिए हमारे दीपशिखा की आजीवन सदस्य सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं। हमें 168 व्यक्तियों के लिए कमसे चार दिनों के खाने की ऐसी वस्तुओं का इंतजाम करना था, जो जल्दी खराब न हो या फफूंदी न लग जाए।

सिर्फ चार दिनों के अंदर लॉकडाउन के बीच मुंबई महानगर में खाद्य वस्तुओं की व्यवस्था करना आसान नहीं था। क्योंकि सिर्फ जरूरी वस्तुओं की दुकानें को छोड़ अन्य दुकानें खोलने की अनुमति नहीं थी।

नीता दोशी से मैं जनवरी, 2009 में वाईकुल स्थित हार्ट टू हार्ट काउसेलिंग सेंटर में पहली बार मिला था। हमदोनों रोबर्ट कारखुफ मोडेल अंतर्गत प्रशिक्षण देने वाले काउसिंल के सर्टिफिकेट कोर्स करने गये थे। वह कोर्स करते रहने के दौरान क्लास में हमारे द्वारा किए गए कार्यों का सपूंर्ण विवरण देना पड़ा था। मेरी तरफ से दिए गए विवरण से उन्हें मुंबई के असम भवन तथा दीपशिखा के बारे में पता चला। तब उन्हें यह भी पता चला कि कैंसर रोगियों के लिए काम करते हैं। इस जानकारी के बाद वह हमारे संस्थान के प्रति आकर्षित हो गईं। इस तरह से नीता दोशी के साथ दोस्ती का आरंभ हुई थी। उसके बाद नीता दोशी दीपशिखा की स्तंभ बन जाएंगी, यह तो कभी सोचा ही नहीं था। बाद के दिनों में नीता दोशी दीपशिखा के माध्यम से कैंसर रोगियों जुड़ी हर योजना में सिर्फ आर्थिक रूप से ही नहीं, शरीरिक रूप से भी कैंसर रोगियों की मदद करने में आगे रहती थीं।

खैर, उस दौरान सारी दुकानें बंद थीं। मुझे पता था कि नीता दोशी जैन मंदिर नेटवर्क की मदद से यात्रा के लिए साथ ले जाने वाली खाद्य सामग्रियों की व्यवस्था कर सकेंगी। जैन समुदाय के लोगों के साथ हम पिछले कई वर्षों से पूरी घनिष्ठता से काम कर रहे थे। उनके लिए जीवनदान, अन्नदान, ज्ञानदान और अभयदान का विशेष महत्व है। पूरी श्रद्धा के साथ वे लोग ऐसे काम में लग जाते हैं। नीता दोशी को बताते हुए उन्होंने कहा- हो जाएगा... चिंता मत करो। उसी दिन रातभर के अंदर उनके मेरिन ड्राइव के पास स्थिति जैन मंदिर से जुड़े दस परिवारों को फोन किया तथा प्रत्येक परिवार से कमसे 50 खेपला बनाने का अनुरोध किया। नीता दोशी ने खुद 50 से अधिक खेपला बना डाला। खेपला एक गुजराती व्यजंन है। देखने में पराठा की तरह लगता है। लेकिन तैयार करने के लिए आटा गूंथने के दौरान उसमें तेल, नमक, हल्दी, गुड़, तिल आदि मिलाया जाता है। उसके बाद आटा को पतला-पतला बेलकर पराठा की तरह बनाया जाता है। लंबी यात्रा के दौरान यदि अच्छी तरह पैकिंग कर दिया जाये तो खेपला 3-4 दिनों तक खराब नहीं होता है। बात में बातचीत के दौरान नीता से पता चला कि 3 तारीख को ही सुबह कमसे कम पांच-छह गुजराती भाई के दुकान में फोन करके दुकान खोलने का अनुरोध किया था और दुकानों से खाकड़ा (पापड़ की तरह का एक

गुजराती नमकीन व्यंजन), धोकला, फाफड़ा, कई तरह के बिस्किट के पैकेट, सूखे फल, कॉर्नफ्लेक्स, आचार, जैम, जूस, आधा लीटर के पैक में डेढ़ हजार लीटर पानी, ब्रेड, चीज, विभिन्न तरह के चना के पैकेट, ग्रीन टी और अलग-अलग स्वादों की चाय के पैकेट, सोनपापड़ी, बेसन के लड्डू, सिनेटाइजर, फेस मास्क, कागज के प्लेट आदि संग्रह कर लिया था।

समानांतर रूप से हमारी यात्रा की शेष तैयारी पूरी योजना के साथ चल रही थी। असम भवन के अधिकारी अपना घर-परिवार छोड़कर यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए यात्रियों से संपर्क में थे और उनकी यात्रा के दौरान साथ लेकर चलने वाले जरूरी सामानों के बारे में बता रहे थे। इस दौरान मैंने बसों के नंबर, ड्राइवर के नाम और पते तथा लाइसेंस की प्रतिलिपि असम पुलिस विभाग के अतिरिक्त महानिदेशक हरमीत सिंह जी को भेज चुका था। हरमीत सिंह के साथ स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव समीर सिन्हा जी भी हमारी यात्रा के बारे में पूर्ण विवरण ले रहे थे। उन्होंने रास्ते में आने वाले सभी राज्य सरकारों को यात्रा के दौरान हमारी मदद करने के लिए असम सरकार की तरफ अनुरोध पत्र भेजा था। इसके साथ ही आईपीएस अधिकारी अजय शंकर तिवारी जी ने भी हमारी यात्रा को सफल बनाने में मदद की थी।

दूसरी तरफ मुंबई के बस मालिक को अग्रिम राशि देने और गुवाहाटी पहुंचने के बाद किसी तरह से सरुसजाई स्टेडियम पहुंचेंगे, कहां ठहरेंगे और सरकार के कौन-कौन से नियमों को यात्रियों को मानना पड़ेगा, ये सारी बातें हमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य अभियान के निदेशक डा लक्ष्मणन तथा एएसवी पोमी बरुवा ने अवगत करा दिया था। माननीय स्वास्थ्य मंत्री डा हिमंत विश्व शर्मा, स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पीयुष हजारिका ने हमारी यात्रा की योजना के बारे में जानने के लिए और कोई भी असुविधा होने पर सूचना देने के लिए हमारे साथ फोन पर पूरी तरह उलपब्ध थे। वे लगातार खबर ले रहे थे।

इस यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण तैयारी थी कि कोविड-19 के संक्रमण को ध्यान में रखकर हम रात में किसी स्थान पर नहीं रुकेंगे। हमारी बसें सिर्फ खाने-पीने तथा शौच के लिए रुकेगी। गुगल मैप देखकर प्रत्येक 200 किलोमीटर जाने के बाद कौन-कौन पेट्रोल पंप पर शौच के लिए गाड़ी रोक सकते हैं, किन स्थानों पर हाइवे होटल ढाबा है- जहां पर खाने-पीने के लिए रुक सकते हैं और किन शहरों में हाइवे से कम दूरी पर अस्पताल हैं, पूरी जानकारी अपनी डायरी में लिख ली थी।

यह यात्रा को सुचारू रूप से पूरी करने का मूलमंत्र था- विस्तृत योजना। जिसे शतरंज की तरह अगले तीन चाल के बारे में योजना बनाकर रखना। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने प्लान ए, प्लान बी और प्लान सी नामक तीन तरह के (अलग-अलग स्थितियों में) विकल्प के बारे में सोच रखा था।

प्लान ए के अनुसार, रास्ते में कोई असविधा नहीं होगी। हम गुगल पर दिखने वाले ढाबा या पेट्रोल पंप पर जाकर अपनी बसों को रोकेंगे, वहां पर हमारे यात्री उतर खाने-पीने के साथ शौच कर पायेंगे। प्रतिदिन(24 घंटा रास्ते में रुकने और खाने-पीने का समय छोड़कर) न्यूनतम 18 घंटे तक बसें चलेंगी। और इस समय के अंदर दिन भर में 800 किमी का सफर तय करने का लक्ष्य तय हुआ था। इसी अनुपात से यात्रा तीन दिन और चार रात के अंदर पूरी की जा सकेगी।

प्लान बी के अनुसार, यदि रास्ते में दुकानें खुली न पायें या किसी रोगी की तबीयत ज्यादा बिगड़ती है तो या बस में कोई तकनीकी खराबी आती है, तब हम सबसे पहले असम भवन में स्थापित कंट्रोल रूम में खबर देगें। जहां पर असम भवन के कोई अधिकारी हमें उत्तर देंगे तथा वह अधिकारी अन्य अधिकारियों को खबर देंगे। वे लोग एक साथ उस समस्या का समाधान करेंगे। समानांतर रूप से मौजूदा समस्या के बारे में अमस पुलिस के नियंत्रण कक्ष और स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव समीर सिन्हा जी को, एनएचएम मिशन संचालक डा लक्ष्मणन जी या ओएसडी पोमी बरुआ को सूचना दूंगा। खाने-पानी के लिए कोई ढाबा या होटल न मिलने पर अपने पास की खाद्य सामग्रियों के काम चलाया जाएगा और शौच के लिए हाइवे से कुछ दूर होने से भी सरकार अतिथिशाला की तलाश करूंगा। किसी तबीयत बिगड़ने पर आपातकाली चिकित्सा डॉ. नीलाक्षी संभालेंगी। जरूरत पड़ने पर हम रोगी को सबसे करीब अस्पताल तक स्थानांतरण करेंगे। उनकी तरफ उपलब्ध कराई गई तालिका के अनुसार, जरूरी दवाएं, इजेक्शन के सीरींच, सलाइन, ऑक्सीजन सिलिंडर आदि हम साथ लेकर चल रहे थे।

प्लान सी के अनुसार, यदि ऐसी परिस्थिति सामने आ जाए, जब तत्कालीन स्थानीय लोगों की जरूरत पड़े, तब हम नीता दोशी की मदद मांगेंगे। क्योंकि उनका सर्व भारतीय स्तर जैन मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर और रोटरी क्लब के सदस्य के रूप में भारत के अधिकांश राज्यों तथा जिला स्तर पर अच्छा संपर्क है। हालांकि हमारे साथ सरकारी स्तर पूर्ण व्यवस्था थी, फिर भी कभी-कभी आपातकालीन स्थिति में स्थानीय लोगों या संस्थाओं की मदद की जरूरत पड़

सकती है, इसलिए प्लान सी में इसे रखा गया था।

प्रत्येक क्षण में हमारे वरिष्ठ अधिकारी और बंधु-बांधव आदि सतर्क कर रहे थे, आशंकाओं के प्रति जितना संभव हो सकता था, गंभीर रूप से विस्तारित चिंतन करने की कोशिश की थी। मेरे मन में एक ही उम्मीद थी कि ऊपर वाले भले न करें, यह 2800 किमी रास्ता पार करते समय यदि किसी रोगी या अभिभावक के साथ कुछ अनहोनी हो जाए, तब समाज या मैं खुद कभी शायद क्षमा नहीं कर पाऊंगा। मेरे मन में भी कई तरह की आशंकाएं थीं। मेरे साथ सहायता कर रही थी मात्र एक कम उम्र की चिकित्सा डॉ. नीलाक्षी चौधरी, मेरे कार्यालय के पिउन लक्ष्मीराम कलिता और यात्रियों के बीच के पांच टीम लीडर, जिन्हें में मैने देखकर चयन किया था। शेष सहयात्री खुद एक अनिश्चिता और अंतद्वंद के समुद्र में डूबे हुए छोटी-छोटी नावों में यात्रा कर रहे थे। अधिक संख्यक कैंसर रोगी की चिकित्सा के पूरा हुए काफी दिन नहीं हुए थे, इसलिए उनलोगों की रोग प्रतिरोध क्षमता बेहद कम थी। यही कारण इस यात्रा की चुनौतियां और अनिश्चितता बहुत अधिक थी। एक तरफ कैंसर रोग और नवजात शिशु हृदय रोगी, जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम थी, दूसरी तरफ कोविड संक्रमण की भयावहता और सरकार द्वारा घोषित देशव्यापी तालाबंदी। जो भी हो, जब निर्णय हो गया तो पीछे लौटने का सवाल ही नहीं था। यात्रा जितनी भी दुर्गम या कठिन क्यों न हो, भगवान को साक्षी मानकर आगे बढ़ने को तैयार हो गया। यह यात्रा किसी दैविक शक्ति गले लगाकर नहीं पकड़ने से असंभव लग रही थी।

पांचवा अध्याय

यात्रा की दहलीज पर

8 मई, 2020। मुंबई महानगर में वैशाख महीने की एक सुबह। हल्की-सी गर्मी थी और लोगों की व्यस्तता शुरू हो गई थी। हमारे असम भवन के पूर्व दिशा में इनओबिट मिल अवस्थित है और उसके सामानंतर सीधा आगे बढ़ने पर उलवे नामक एक गांव मिलता है। उस गांव की सीमा पर बड़े-बड़े पत्थरों और छोटे-छोटे पेड़ से घिरे एक छोटा जंगल है और उसी जंगल के गर्भ से सुबह करीब छह बजे सूर्योदय होता है। अपने कार्यालय में (जिसे मैंने अस्थाई बेडरुम बना लिया था) बैठकर मैं चाय की चुस्की ले रहा था। उसी समय महेंद्र ने दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खुलते ही देखा कि ध्रुव और जयेश दौड़ते हुए स्वागत कक्ष पहुंचे और कुछ अजनबियों के साथ बात करने में व्यस्त हो गए। मैंने देखा कि बाहर कुछ यात्री भी एक-एक कर अंदर प्रवेश कर रहे हैं। मैं भी नहा-धोकर तैयार हो गया था। कार्यालय के ही नजदीक बरामदे में कुछ लोगों द्वारा धीरे-धीरे बातें करने की आवाज सुनाई दे रही थी। पत्नी आइनु द्वारा लाए गए ब्रेकफास्ट फटाफट ग्रहण कर मैं भी बरामदे में पहुंच गया। मुझे देखते ही बच्चों सहित पुरुष-महिलाओं का एक दल मेरी ओर बढ़ रहा है और सभी ने हंसकर मेरा स्वागत किया। एक महिला की गोद में एक नन्हा बच्चा देखकर मेरी रूह कांप उठी। सोच में पड़ गया कि इन लोगों का इतना विश्वास मैं बरकरार रख पाऊंगा कि नहीं? ज्यादातर चेहरे जाने-पहचाने थे और कुछ लोग अनजान। उन लोगों के पास पहुंचकर मैंने नमस्कार किया और सभी से धैर्य व संयम बनाए रखने का अनुरोध किया। तब तक 'नीता वोल्वो' कंपनी की बसें नहीं पहुंची थीं। उसी समय गरिमा का फोन आया और वे जानना चाहती थी कि हम कब यात्रा शुरू करेंगे। उन्होंने बताया कि वे लोग 7 बजे ही असम के लिए रवाना हो चुके हैं। इस यात्रा में इच्छा के बावजूद जुबिन की बस के साथ हम शामिल नहीं हो सकें।

सारी तैयारियों का जायजा लेने के बाद मैं समझ चुका था कि 12 बजे से पहले यात्रा शुरू कर पाना असंभव है, क्योंकि बसों में खाद्य सामग्री लादने का काम तब

तक पूरा नहीं हुआ था। उधर, दूरस्थ इलाकों में रहने वाले कुछ यात्री भी तब तक नहीं पहुंचे थे। इससे बड़ी बात यह थी कि यात्रियों को एकत्र कर यात्रा दौरान बरतने वाली सावधानियों की जानकारी भी देना था। मैंने अपने कैंटिन से नजमूल को बुलाकर जल्द से जल्द यात्रियों के लिए चाय-नास्ता और 11 बजे के अंदर खिचड़ी व एक सब्जी पकाने का निर्देश दिया।

तभी मेरी नजर असम भवन पहुंचने वाले 12 नन्हें बच्चे और उनके माता-पिता व अभिभावकों पर पड़ी। हृदय रोग से पीड़ित ये बच्चे अपने अभिभावकों के साथ लॉकडाउन के कारण मुंबई के विभिन्न स्थानों में कई दिनों से फंसे हुए थे। वे सभी अपने-अपने घर लौटने को व्याकुल थे। इस दल का नेतृत्व श्री सइकिया जी ने किया था और वे लंबे समय से मेरे संपर्क में थे। मैं उन लोगों के साथ बात कर रहा था और तभी देखा कि असम भवन परिसर में एक एंबुलेंस से डॉ. निलाक्षी चौधुरी उतर रही हैं। ऐसी एक विषम परिस्थिति में इतने सारे रोगी और इनके अभिभावकों के साथ सहयात्री बनने के लिए डॉ. निलाक्षी हमेशा धन्यवाद के पात्र बनी रहेंगी। मुझे बाद में पता चला था कि डॉ. निलाक्षी को उनके शुभचिंतकों ने इस यात्रा में शामिल होने से मना किया था। लेकिन डॉ. निलाक्षी ने अपने माता-पिता, पति और दो वरिष्ठ चिकित्सकों के अलावा अन्य सभी की बातों को नजरंदाज किया और यात्रा के लिए राजी हो गई थीं।

मैं सुन रहा था कि थोड़ी दूरी पर तूफान मेल की गति से कोई किसी को कुछ समझा रहे थे। ध्यान से नहीं सुनने पर वह व्यक्ति क्या बोल रहा सुनाई नहीं देगा। वह थी हम सभी के अति चहेती तथा कभी-कभार गुस्सा करने वाली नीता दोशी। मुड़कर देखा तो दिखाई दिया कि 'दीपशिखा' के निरीक्षक जियाउर रहमान (भाई) को साथ लेकर असम भवन के दो नंबर गेट के पास फुटपाथ पर बैठकर तथा सामने पहाड़ सदृश खाद्य सामग्री रखकर कुछ हिसाब कर रही है और सामग्री को कई भागों में विभक्त कर रही है। नजदीक पहुंचने पर पता चला कि पूरी तरह निजी खर्चे पर प्रत्येक बस के लिए कम से कम तीन रोज की खाद्य सामग्री जुगाड़ कर वह उसकी सूची बना रही हैं। जिस तरह धनंजय के अर्जुन की तीर का लक्ष्य कभी विफल नहीं होता ठीक उसी तरह नीता दोशी को किसी काम का दायित्व देने पर वह लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाने तक कोई दूजा नहीं सोंचती। कई दफा नीता की इस गुण के लिए हमें गुस्सा भी आता है। लेकिन नीता किसी का परवाह करे बगैर जो ठान लेती वह कर दिखाती है।

ठीक उसी समय राजू ने बताया कि सभी बसें पहुंच गई है और सूची के अनुसार सभी यात्रियों की रिपोर्टिंग का काम भी पूरा हो चुका है। देखने में लगभग एक जैसी छह सफेद रंग की मर्सिडीज बस असम भवन और मेघालय भवन के बीच वाली सड़क पर खड़ी है। बस कंपनी के व्यवस्थापक कमलेश भाई ने मुझे इन बसों को निरीक्षण करने के लिए बुलाया। बसों के अंदर की व्यवस्था हुबहू हवाई जहाज की तरह थी। प्रत्येक कंपार्टमेंट एक छोटा बेडरूम सदृश है। प्रत्येक बस में दो-दो चालक हैं। मैं उन सभी से मिलकर असम भवन में होने वाली ब्रिफिंग के लिए बुलाया।

इससे पहले ही हमारे सेक्शन ऑफिसर त्रिनयन संदिकै यात्रियों को असम भवन के गेट के सामने एकत्र कर ब्रिफिंग की सारी बातें समझा चुके हैं। साथ ही इन सभी मुहूर्तों को कैमरे मे कैद कर उन्होंने यात्रा के बारे में मीडिया को जानकारी दे दी थी। उस वक्त असम भवन के प्रत्येक कर्मचारी तथा 'दीपशिखा' के सभी पदाधिकारी अपने-अपने दायित्वों को निभाने में व्यस्त थे। 'दीपशिखा' की आजीवन सदस्य तथा वाइस प्रेसिडेंट रिसोर्स मोबाइलिजेशन श्रीमती पारुल नेगी तड़के ही उपस्थित होकर रोगियों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर उनके सुख-दुख की सुध ले रही थी। हमें सामान पैकिंग में मदद करने के अलावा यात्रा के दौरान खाने के लिए मेरे लिए एक पैकेट ड्राई फ्रूट्स और जरूरी खाद्य सामग्री लेकर आई थीं।

मेरे सामानों की पैकिंग के बाद पत्नी आइनु ने रोगी तथा उनके अभिावकों की सुध ली थी और मुझे आश्वासन दिया था कि घर और उन्हें लेकर बिल्कुल चिंता न करें, सिर्फ यात्रा पर ध्यान दें। हमारे वैवाहिक जीवन के प्रारंभ से ही मैने आइनु में एक विशिष्टता महसूस किया था कि मैं जो भी काम करना चाहता था, उसमें वह कभी बाधा नहीं डालती थी। कैंसर रोगियों के लिए आज जो कुछ भी थोड़ा बहुत मैं कर रहा हूं, इसका आधा श्रेय निश्चित रूप से आइनु को भी जाता है। वैवाहिक जीवन में तथा एक पिता के हैसियत से मैं हमेशा अपने परिवार की अवहेलना नहीं करने का भरसक प्रयास करता आया हूं। लेकिन सामाजिक कार्य में व्यस्त रहने के कारण कभी-कभार कुछ दायित्वों का पालन नहीं कर पाता हूं। इसके लिए आइनु ने मुझसे कभी शिकायत नहीं की है। दिनभर रोगियों के साथ व्यस्त रहने के बाद जब मैं घर वापस आता हूं तब आइनु के चेहरे पर गुस्से की लकीर कभी नहीं देखी है। अगर वैसा होता तो शायद आज ऐसा एक असम भवन और 'दीपशिखा' कभी नहीं बन पाता। यही बात मेरा पुत्र आर्यमान के संदर्भ में भी कहूंगा। ऐसा भी हुआ

होगा कि जब उसे मेरी जरूरत रही होगी और मैं वहां मौजूद नहीं रह पाया होऊंगा, लेकिन इसे बात को लेकर उसने भी कभी कोई शिकायत नहीं की। मेरे हर निर्णय पर आर्यमान अनायास ही सहमत हो जाता है। इस दिशा में मैं अपने आपको सौभाग्यशाली महसूस करता हूं। परिवार की सहयोग के बिना कोई भी व्यक्ति अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर सकता।

यात्रा की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थीं। असम भवन में एकत्र लोगों में से पांच युवाओं का चयन किया गया। उनकी चयन प्रक्रिया में मुझे ध्रुवज्योति ने मदद की। उनमें से ज्यादातर से मैं पहले मिल चुका हूं। मुझे विश्वास था कि वे अपनी जिम्मेदारियां बखूबी से निभा सकेंगे और जरूरत पड़ने पर उचित निर्णय भी ले सकेंगे। उन्हें अलग-अलग बुलाकर हरेक को टीम लीडर की जिम्मेदारी सौंप दी गयी थी। बस नं. 1 का दायित्व मैंने खुद लेते हुए बस नं. 2 का पन्ना लाल, बस नं. 3 का बिपुल दास, बस नं. 4 का विकास बसुमतारी, बस नं. 5 का राजीव अली और बस नं. 6 का दायित्व रंजीत डेका को दिया गया। उन्हें साथ लेकर हम असम भवन के लाचित द्वार गए, जहां सभी यात्री एकत्र हुए थे। डॉ. निलाक्षी, त्रिनयन और असम भवन के कर्मचारियों के साथ मैं भवन के सामने की सीढ़ी पर खड़ा था। सीढ़ी से ही बसों के टीम लीडरों को यात्रियों के साथ परिचय करा दिया था और संक्षिप्त में यात्रा के दौरान पालन करने वाले कुछ महत्वपूर्ण दिशा-निर्देशों के बारे में बताया। मैंने कहा कि एक नंबर बस में मैं खुद रहूंगा और वह बस कॉन्वाय के आगे रहेगी। छह नंबर बस में नीता वोल्वो के मैनेजर कमलेश भाई रहेंगे और निरीक्षण करेंगे कि कोई बस उनकी बस के पीछे न रह जाए। बस नंबर दो, तीन, चार और पांच हमेशा एक नंबर व छह नंबर बस के बीच रहेंगी और प्रत्येक टीम लीडर इस निर्देश का पालन करेंगे। अगर किसी कारण हेतु किसी बस को रुकना पड़ा तो बस रुकने से पहले टीम लीडर इसकी सूचना मोबाइल पर मुझे देंगे, तदनुसार मैं यह खबर अन्य टीम लीडरों को दूंगा। एक नंबर बस नहीं रुकने तक कोई भी बस कहीं भी नहीं रुकेगी। जरूरत के वक्त किसी कारणवश बस का टीम लीडर अगर मुझे फोन पर संपर्क करने में विफल होंगे तो वे अन्य टीम लीडरों से संपर्क कर सकते हैं। पांच नंबर और छह नंबर बस एक घंटे के अंतराल में मोबाइल पर संपर्क में रहेंगी। किसी कारणवश अगर अधिक समय तक पांच नंबर बस को छह नंबर बस दिखाई नहीं देगी व संपर्क करने में विफल होगी तो पांच नंबर बस मोबाइल से एक नंबर बस को संपर्क करेगी और बस को रुकने को

कहेगी, ताकि छह नंबर बस से संपर्क नहीं होने तक आगे नहीं बढ़े। किसी भी आपातकालीन परिस्थिति में प्रत्येक टीम लीडर अपनी-अपनी बस में जरूरत के हिसाब से निर्णय लेंगे और हर यात्री को टीम लीडर के निर्देश का पालन करना होगा। अगर कोई यात्री शरीरिक रूप से अस्वस्थ हो जाएंगे तो बस के टीम लीडर तत्काल मुझे व डॉ. निलाक्षी से संपर्क करेंगे। रास्ते पर अगर कोई ढाबा व होटल खुला नहीं मिला तो टीम लीडर बस में मौजूद खाद्य सामग्री समयानुसार यात्रियों के बीच वितरण करने की व्यवस्था करेंगे।

ये सारी बातें सभी को विस्तृत रूप से समझायी गयी। प्रत्येक टीम लीडर के हाथों उनकी बस के यात्रियों की एक-एक सूची सौंप दी गई। इसके बाद सभी यात्रियों से भोजन करने का आग्रह किया गया। ठीक उसी समय भवन के सामने स्थित पेड़ के नजदीक एक महिला की रोने की आवाज सुनाई दी। वहां जाकर ध्रुवज्योति शर्मा का लाचार चेहरा दिखाई दिया। वे कुछ लोगों को अति विनम्रता से कुछ समझाने की कोशिश कर रहे थे। पता चला कि उन लोगों का नाम हमारी यात्रियों की सूची में नहीं है। लेकिन बस यात्रा की खबर उन्हें कहीं से मिली और मुंबई के किसी दूरस्थ क्षेत्र से हमारे साथ यात्रा करने के लिए मन में कई उम्मीद लेकर यहां पहुंच गए थे। ध्रुव उन्हें भीड़ से बचने व सामाजिक दूरी की दुहाई दे रहे थे कि तभी एक महिला व उनका बेटा मायूस होकर रो पड़े और उन्हें भी साथ ले जाने के लिए अनुनय विनय करने लगे। मां-बेटा सहित उनके साथ आए कैंसर रोगी को यात्रा में शामिल नहीं करने पर वे समय पर इलाज नहीं करा पाएंगे। इसलिए अंतिम समय पर अनिच्छा के बावजूद एक बस में उन तीनों यात्रियों को ले जाने का निर्णय लेना पड़ा। आपदा की उस घड़ी में मुझे सरकारी नीति-नियमों से अधिक महत्व मानवीयता को देनी पड़ी। सभी यात्री बस में चढ़ गए थे। प्रत्येक बस के अंदर घुसकर मैं यात्रियों के कुशल-मंगल की जानकारी लेने के बाद एक नंबर बस के पास पहुंचा। बस के सामने नीता दोशी, जयेश, आइनु और पारुल नेगी दीदी मेरा इंतजार कर रही थी। नीता और पारुल दीदी ने मंगलमय यात्रा के लिए भगवान की जप व श्लोक पाठ की थी। आइनु ने मुझे गले लगा लिया था। इसके बाद मैं एक नंबर बस में चढ़ गया। करीब 12.10 बजे हमारी बस के चालक उपेंद्र सिंह ने यात्रा शुरू कर दी थी। पीछे मुडकर देखा तो हमारे पीछे-पीछे सभी पांच बसें धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। सीने में सुख-पीड़ा मिश्रित एक अज्ञात दर्द महसूस किया था।

छठा अध्याय

कोविड-19 लॉकडाउन यात्रा की शुरुआत

रायगढ़ और ठाणे जिलों के बीच विभाजित नवी मुंबई को मुंबई की सैटेलाइट सिटी के रूप में जाना जाता है। शहर उत्तर में अयरोली से शुरू होता है और दक्षिण-पूर्व में लोनावला और खंडाला की ओर बढ़ता है और मुंबई-पुणे राष्ट्रीय राजमार्ग को पार करता है। नवी मुंबई के दक्षिण की ओर बढ़ते हुए आप धारा पर बने पुल को अरब सागर से ट्रॉम्बे तक, फिर चेंबूर से मुंबई के प्रसिद्ध क्षेत्रों तक पार करते हैं। वहां से सीधे दादर, लालबाग, छत्रपति शिवाजी रेलवे स्टेशन और गेटवे ऑफ इंडिया की ओर बढ़ते रहें। सायन से धारावी, बांद्रा, सांताक्रूज और अंधेरी पहुंचने के लिए दाएं मुड़ें।

मुंबई शहर की तुलना में नवी मुंबई एक सुनियोजित शहर है। शहर अच्छी तरह से आवासीय क्षेत्रों, विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड), केंद्रीय व्यापार जिला बेलापुर, बाजार क्षेत्र और तलोजार की ओर औद्योगिक क्षेत्र के आसपास के विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित है। असम के हजारों मजदूर यहां काम कर रहे हैं। नवी मुंबई का नगरपालिका प्रशासन ग्रेटर मुंबई के नगरपालिका प्रशासन से अलग है। ये घर बनाने और कोई भी व्यवसाय स्थापित करने के लिए भी सख्त नियमों का पालन करते हैं। नागालैंड सरकार को नगरपालिका प्रशासन के नियमों और विनियमों का

ठीक से निरीक्षण किए बिना एसईजेड में अपने 'नागालैंड भवन' के निर्माण के लिए भवन खोलने की अनुमति नहीं मिली है, जिसके परिणामस्वरूप एक सुंदर इमारत धीरे-धीरे खराब हो रही है। नागालैंड भवन असम भवन' के ठीक बगल में है। नवी मुंबई एक मिश्रित नस्लीय आबादी है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों के पेशेवरों द्वारा बसाई गई है। कई असमिया पनवेल में ओएनजीसी कॉलोनी में काम करने के लिए आते हैं और उनमें से ज्यादातर नबी मुंबई में पनवेल, खारघर, बेलापुर, वाशी आदि में फ्लैट खरीदते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद रहते हैं। मुंबई में रहने वाले असमिया लोगों का असम एसोसिएशन नामक एक बहुत सक्रिय संगठन है। यह संस्था भारत के आजाद होने के पहले डॉ. यतींद्रनाथ बरुआ जी के प्रयासों से 'असम क्लब' नाम से आरंभ हुआ था।

1936 में जब गोपीनाथ बरदोलोई लंदन जाते समय जहाज से मुंबई पहुंचे तो डॉ. जतिंद्रनाथ बरुआ मुंबई में रहने वाले अन्य दो असमिया श्री अभयधर बरुआ और श्री पणिधर बरुआ को लेकर अन्य असमिया लोगों के साथ मिलकर गोपीनाथ बरदोलोई के स्वागत के लिए असम समाज नामक एक संस्था मुंबई में पंजीयन कराया था। इस संस्था का शुभारंभ मुंबई के विक्टोरिया गार्डन में डॉ. जतिंद्रनाथ बरुआ के आधिकारिक आवास के एक कमरे में किया गया था। 1991 में श्री सुधीर संदिकै और श्री गोलाप बोरा ने मुंबई में कुछ अन्य असमिया लोगों के साथ 'असम समाज' का नाम बदलकर 'असम एसोसिएशन, मुंबई' कर दिया था। अभी लगभग 2,000 लोग इस सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था के सदस्य हैं। इस संगठन की अधिकांश बैठकें असम भवन में होती हैं। संगठन का नेतृत्व वर्तमान में डॉ.ज्योतिर्मय दास और महासचिव के रूप में उमाकल माजिद कर रहे हैं।

आइए हम अपनी यात्रा के अगले भाग पर आते हैं।

8 मई, 2020

असम भवन के पास स्वामी प्रणवानंद मार्ग रोड। हम वाशी के सेक्टर एक के पास फ्लाईओवर के नीचे गए और दाएं मुड़ गए और नबी मुंबई शहर से एनएच के साथ आगे बढ़ने लगे। लगभग एक घंटा बीस मिनट के बाद कल्याण क्रॉस करने के कुछ ही देर बाद बस नंबर दो के टीम लीडर पन्ना पाल से मुझे खबर मिली कि उनकी बस बिल्कुल नहीं चल रही है। मैंने उनसे कहा कि धीरे-धीरे आगे बढ़ें और दूसरी बसों को बस नंबर दो आने तक इंतजार करने को कहा। करीब 40 मिनट इंतजार के बाद वह बस आई। ड्राइवर से बात करने पर मुझे पता चला कि

बस में सामान्य यांत्रिक गडबड़ी थी और हम इसे नासिक में शो-रूम में दिखा सकते हैं। चूंकि बस संख्या दो 40 किमी प्रति घंटा से अधिक की गति से चलने की स्थिति में नहीं थी, इसलिए मैंने उन्हें धीरे-धीरे नासिक के शोरूम में जाने के लिए कहा। मैंने तय किया कि बाकी पांच बसें 60 से 70 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेंगी और धुले में रुकेंगी। फिर हम धुले से इंदौर पहुंचने तक बिना रुके पूरी रात चलते रहेंगे। इंदौर से हम देवास नामक स्थान पर रुकेंगे, जहां पर कुछ दुकानें होटल खुलने की संभावना थी, जैसा कि नीता दोशी ने कहा। अगले दिन सुबह करीब 9 बजे से बस नंबर दो नासिक में कार रिपेयर कराने के बाद देवास में हमारे साथ हो जाएगी। वाशी से नासिक 162 किमी और नासिक से धुले 159 किमी दूर है, जबकि धुले से इंदौर 260 किमी और इंदौर से देवास लगभग 40 किमी दूर है। हमारे पहले और दूसरे दिन की सुबह तक अंदाजा लगाया जा रहा था कि हम इस इलाके को पार कर लेंगे। यात्रा इतनी सुनियोजित होने के बावजूद हमें नई मर्सिडीज बसों के यांत्रिक गड़बड़ी की उम्मीद नहीं थी। ब्रेकडाउन ने हमारे प्रस्थान में कम से कम तीन से चार घंटे की देरी की। एक और बात हमारे दिमाग में नहीं आई। यात्रियों में से कई रोगियों को बार-बार पेशाब के लिए जाना पड़ता था। हर आधे घंटे से एक घंटे में हर बस को रोकना पड़ता था। इससे हमारी यात्रा भी धीमी हो गई। हालांकि, हम सड़कों पर बसों को रोकने के नियोजित तरीके को लागू नहीं कर सके। मुझे धीरे-धीरे एहसास हुआ कि हम काफिले के रूप में बसों को एक साथ नहीं ले जा सकते। सब कुछ सुनियोजित नहीं है। मैंने प्रत्येक टीम लीडर को फोन किया और उनसे कहा कि अब से उन्हें हर बार रुकने पर मुझे सूचित नहीं करना पड़ेगा और सभी बसों को रोकने की कोई आवश्यकता नहीं है। हर 150 या 200 किमी पर, मैं गूगल मैप्स को देखता और एक पेट्रोल पंप या आसानी से मिलने वाली जगह को ठीक करता, जहां प्रत्येक बस एक निर्दिष्ट समय के भीतर रुकती और तब तक नहीं चलती जब तक कि सभी बसें नहीं मिल जातीं। योजना को पूरी तरह से लागू करना मुश्किल था।

रात करीब 9 बजे नीलाक्षी और लक्ष्मीराम की मदद से हमने अपनी डिक्की नंबर एक और दो के बगल वाली डिक्की से खाने के पैकेट निकाले और अपनी बस में सवारियों में बांट दिए। मैंने टीम के अन्य लीडरों से भी कहा कि वे अपनी बसों में खाने के पैकेट वितरित करें। हम महाराष्ट्र से यात्रा कर रहे थे और चूंकि हमे नेशनल हाइवे के किनारे कोई दुकान या होटल नहीं दिख रहा था, हमने कहीं भी

खाने के लिए बिना रुके अपनी यात्रा जारी रखी और बस के अंदर खाना खाया। उस रात हमने पैकेट से थेपला (गुजराती डिश), तली हुई गोभी और मटर और नीता देशी द्वारा बनाई गई मिठाई निकाली। सिल्वर फॉइल में लिपटे ये खाद्य पदार्थ बिल्कुल ताजा थे और हमारे यात्रियों ने परोसे गए गुजराती भोजन का आनंद लिया। खाने के बाद मैंने अपने दूसरे ड्राइवर जोगेंद्र शाह को गाड़ी चलाने के लिए कहा और उपेंद्र सिंह, जो अभी भी तक गाड़ी चला रहे थे, खाने और आराम करने के लिए कहा। उस रात हम उत्तर-पूर्व महाराष्ट्र से होते हुए मध्य प्रदेश की ओर बढ़े।

मैंने खाने के बाद सोने की कोशिश की। पर ठीक से नींद नहीं आई, क्योंकि बिस्तर पर जाते ही चिंताओं ने घेर लिया । बस आंख लगी ही थी। फिर जोगेंद्र शाह ने आकर मुझसे कहा कि बस को रोकना पड़ा क्योंकि हम महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर विलाद नामक स्थान पर पहुंच गए थे। सामने एक चौकी है और कम से कम दो किलोमीटर लंबी वाहनों की कतार है। पुलिस ने उन्हें अपनी गाड़ी पार्क करने के लिए कहा है। जब तक आगे की गाड़ियों की जांच नहीं हो जाती तब तक वे हमें आगे नहीं बढ़ने देते। हमारी बस में लगभग सभी यात्री सो चुके थे। मैंने अपने बैग से टॉर्च निकाली और नीचे चला गया। मेरे साथ ड्राइवर शाह भी थे। मैंने सड़क के किनारे इंतजार कर रहे कुछ ट्रक ड्राइवरों से बात की और पता चला कि वे दोपहर 12 बजे के बाद से केवल दो किलोमीटर ही आगे बढ़ पाए हैं। रात के करीब 11 बज रहे थे और हमारे काफिले की बाकी बसें आ चुकी थीं। थोड़ा और आगे बढ़ने पर मेरी मुलाकात मध्य प्रदेश पुलिस के एक सिपाही से हुई। मैंने उनसे कहा कि हम छह बसों में कैंसर के मरीजों को ले जा रहे हैं और अगर वह हमारी मदद कर सकें तो हमें सुविधा होगी। उन्होंने मुझे बताया कि इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था, क्योंकि प्रत्येक वाहन के यात्रियों का पंजीकरण किया जा रहा था और वाहनों के कागजात की जांच की जा रही थी। कांस्टेबल शायद थोड़ा परेशान था कि उसे रात 11 बजे तक ड्यूटी करनी पड़ रही है और वह थोड़ा झुंझलाहट में बोल रहा था। मैं जानता था कि उससे बात करने का कोई मतलब नहीं होगा। मैं समझ नहीं पाया कि हम कहां थे। मोबाइल फोन का नेटवर्क नहीं था, इसलिए मैं जीपीआरएस चालू नहीं कर सका। ऐसे निर्जन क्षेत्र में 168 कैंसर रोगियों और उनके अभिभावक के साथ अनिश्चितकाल तक प्रतीक्षा करना कठिन होगा। मैं चौकी की ओर जा रहा था, सोच रहा था कि क्या करूं और क्या न करूं। तभी मैंने अपने पीछे एक मोटरसाइकिल के आने की आवाज सुनी। मैंने तुरंत

अपने पीछे देखा और मोटरसाइकिल को रोकने की कोशिश की। हेडलाइट्स की वजह से मैं यह नहीं देख सका कि मोटरसाइकिल पर कौन बैठा है। ड्राइवर ने मेरा सिग्नल देखा और मोटरसाइकिल रोक दी। मैं जल्दी से उसके पास पहुंचा। उस पर दो आदमी बैठे थे। चालक के सिर पर पगड़ी थी। मैंने उन्हें अपने मरीजों के बारे में हिंदी में बताया और मैंने उनसे मध्य प्रदेश सीमा चौकी तक जाने का आग्रह किया। चौकी की दूरी लगभग चार किलोमीटर थी और मुझे पैदल वहां पहुंचने में काफी समय लगता। मोटर साइकिल वाले ने एक बार में ही हां कहा, पीछे वाले आदमी को नीचे उतारकर उसे वहीं पर रुकने के लिए कहा। मैंने ड्राइवर शाह को उन सज्जन के साथ कुछ देर रुकने को कहा और तुरंत मोटरसाइकिल पर बैठ गया। चांदनी की रोशनी में मैं बता सकता था कि दो आदमी लुंगी और गंजी पहने हुए थे और उनकी बातों से मैं बता सकता था कि वे पास के गांव के थे। पांच मिनट के भीतर हम मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित चौकी पर पहुंच गए। मैं मोटरसाइकिल से उतरा और ड्राइवर का हाथ पकड़ कर उसे धन्यवाद दिया। उसने कहा कि वह नहीं जाएगा। उसने मुझसे कहा, 'आप अपना काम कर लो, मैं रुकता हूं।'

मैं उसकी बातों से चौंक गया और समझ नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दूं। चौकी के पास जनरेटर चल रहा था। फूस की छत वाला एक लंबा अस्थायी शिविर। वहां वर्दीधारी पुलिसकर्मी और कुछ सादी वर्दी में कर्मचारी बैठे थे। उनके सामने एक टेबल। प्रत्येक टेबल के सामने एक लंबी कतार में बैठे सभी लोगों के हाथों में कुछ कागजात थे। मैंने कई पुलिस अधिकारियों को शिविर के पास प्रतीक्षा करते देखा और उनके पास जाने लगा। जैसे ही मैं पास आया, उनमें से एक ने मुझे ऐसे देखा जैसे किसी भूत को देख रहा हो। उसने सीटी बजाई और हाथ से इशारा किया,'रुक जाओ।'

मुझे समझ नहीं आया कि इतनी तीखी प्रतिक्रिया क्यों हुई। अधिकारी ने मुझे वहीं रोक दिया जहां मैं था और थोड़ा सा मेरी ओर चला और चिल्लाया, 'जो बोलना हो दूर से बोलो।'

मुझे तब एहसास हुआ कि अधिकारी ने मुझे सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए कहा था और मुझसे कोविड बीमारी संक्रमित होने की शंका से डर रहा था। मैंने अपनी पिछली जेब से अपना पहचान पत्र निकाला और चिल्लाया, ज्वाइंट रेजिडेंट कमिश्नर, असम। कमिश्नर की शब्द सुनते ही सामने वाले व्यक्ति की प्रतिक्रिया आमतौर पर बदल जाती है। मेरे सामने वाले पुलिस अधिकारी ने

कमिश्नर शब्द सुना और शायद उसे लगा कि मैं पुलिस कमिश्नर हूं। वह कुछ कदम आगे बढ़ा और बोला, 'आई एम सॉरी सर, हाऊ केन आई हेल्प यू?'

अधिकारी के कंधे पर तीन सितारों देखकर मुझे पता चला कि वह डीएसपी है। मैं सामाजिक दूरी का पालन करते हुए कुछ कदम आगे बढ़ा और उन्हें अपनी समस्या बनाई। उन्होंने दो सिपाहियों को मोटरसाइकिलों पर आगे बढ़ने और हमारी बसों को सड़क की विपरीत दिशा से जल्द से जल्द आगे बढ़ाने का निर्देश तुरंत दे दिया। मैं अपनी आधी रात के मोटरसाइकिल मालिक देवदूत के साथ वापस अपनी बसों में लौट आया। दो कांस्टेबलों ने मोटरसाइकिलों पर हमारी बसों से कुछ पीछे चल रहे थे। मुझे पता चला कि मुझे मोटर साइकिल ले जाने वाले व्यक्ति का नाम गजेंद्र सिंह था। मैं मोटर साइकिल से उतरा और मिस्टर सिंह को गले लगा लिया। उस समय कोविड-19 की भयावहता, संक्रमण या सामाजिक दूरी के बारे में कुछ भी दिमाग में नहीं आया। आभार व्यक्त करने के लिए मुझे कोई शब्द नहीं मिले। आंखों में कुछ आंसू थे। मिस्टर सिंह ने अपने दोस्त को वापस बैठाकर हमें अलविदा करते हुए मोटर साइकिल स्टार्ट की और धीरे-धीरे रात के अंधेरे में गायब हो गए।

पहले ही मध्य प्रदेश पुलिस के सिपाही द्वारा दिखाए गए रास्ते के मुताबिक हमारी बसों को सड़क से थोड़ा पीछे कर नेशनल हाइवे के विपरीत सड़क पर ले जाया गया। इस रास्ते को विपरीत दिशा से आने वाले यातायात के लिए नामित किया गया था। विपरीत दिशा से आने वाले वाहनों को कुछ देर के लिए रोक दिया गया और हमारी बसें चौकी के सामने रुक गईं। डीएसपी ने अपने मोबाइल फोन पर वाहनों के अनुमति प्रमाण पत्र, वाहन नंबर और प्रत्येक ड्राइवर के ड्राइविंग लाइसेंस और मेरे पहचान पत्र की तस्वीरें लीं। पांच मिनट के भीतर हमने डीएसपी को धन्यवाद दिया और बसों को वापस नेशनल हाइवे पर अपने निर्धारित मार्ग पर ले आए और अपनी यात्रा जारी रखी। मध्य प्रदेश पुलिस की इस मदद और हमदर्दी के बिना शायद हमें कम से कम 10 से 12 घंटे इंतजार करना पड़ता। मुझे एक बार फिर अहसास हुआ कि हम पुलिस के बारे में कुछ गलतफहमियां पाल लेते हैं।

9 मई 2020

सुबह लगभग 7.30 बजे मैंने जोगेंद्र शाह से कहा कि अगर उन्होंने कोई ढाबा या होटल खुला दिखे तो एक कप चाय के लिए बस रोक दे। मैं बस नंबर एक की कंपार्टमेंट नंबर एक में था और डॉ. नीलाक्षी चौधरी मेरे ऊपर वाले कंपार्टमेंट में

थीं। हमारे पीछे कंपार्टमेंट नंबर पांच में 'असम भवन' के कर्मचारी लक्ष्मीराम कलिता थे। हमने अपनी सीटें इस तरह चुनीं कि जरूरत पड़ने पर तुरंत मिल सकें और किसी भी स्थिति को संभाल सकें। ड्राइवर ने मुझसे कहा, 'देखते आ रहा हूं साहब। एक भी दुकान खुली नहीं हैं।'

उनसे मुझे पता चला कि नेशनल हाइवे के किनारे एक चाय की दुकान भी नहीं खुली थी। मुझे अपने आगे या पीछे एक भी बस नहीं दिख रही थी। सौभाग्य से मैं सभी टीम लीडर्स से फोन पर संपर्क कर पाया और उनसे पता चला कि हमारी बस दूसरी बसों से आगे जा रही थी और सभी बसें इंदौर से गुजर चुकी थीं। मैं आकर ड्राइवर की पास वाली सीट पर बैठ गया। चारों ओर सन्नाटा है। मैंने मील के पत्थर को देखा और देखा कि देवास तक पहुंचने के लिए केवल पांच किलोमीटर शेष थे। मैं थोड़ा चिंतित था, क्योंकि मैं सोच भी नहीं सकता था कि ढाबा या होटल इस तरह बंद रहेगा। हमारे पास में खाना था। लेकिन सुबह-सुबह एक कप गर्म चाय तो हर कोई चाहता है। साथ ही यात्रियों के लिए सुबह की शौच के लिए उपयुक्त जगह की तलाश करना चिंता का विषय था। कई यात्री बार-बार मेरे पास आए और पार्किंग के समय के बारे में पूछने लगे।

थोड़ी देर बाद हमने अपनी बाईं ओर एक लकड़ी का गोदाम देखा, जिसके सामने हमारी बसें खड़ी की जा सकती थीं। सुबह के करीब 8 बज रहे थे। मैंने अनुमान लगाया - जब लकड़ी का गोदाम है, तो हम उसके आस-पास प्रातःकार्य करने के लिए एक उपयुक्त स्थान अवश्य खोज लेंगे। अपनी बस को वहीं पर खड़ी छोड़कर, मैंने प्रत्येक टीम लीडर को हमारे जीपीआरएस स्थान का अनुशरण करने और सभी को इस लकड़ी के गोदाम में आने और रुकने के लिए कहा।

यात्री इस बात से थोड़े परेशान थे कि उन्हें चाय और बाहर जाने के लिए उपयुक्त जगह नहीं मिल रही थी। मैंने जल्दी से लकड़ी के गोदाम के एक कर्मचारी से बात की और उसे अपनी स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने गोदाम के पीछे चार शौचालय और दो बड़े बाथरूम हमारे लिए खोल दिए। जबकि महामारी के इस समय में कई लोग छह बसों के यात्रियों के लिए ऐसे निजी शौचालय या बाथरूम खोलने से हिचक रहे होंगे। धीरे-धीरे एक-एक कर हमारी बसें आने लगीं। यात्री प्रातःकार्य से निपटने के लिए पहले से ही लाइन में लग गए थे। श्री कालीपद साहा, लगभग 75 वर्षीय, तिनसुकिया के निवासी, जो हमारी बस में आए थे, अपनी पत्नी के साथ मेरे पास आए और मुझे बताया कि उन्हें सिरदर्द होने लगा था

क्योंकि उन्हें अभी तक एक कप चाय नहीं मिली थी। मैं बता सकता था कि साहा दंपत्ति की तरह और भी कई यात्री थे जो एक कप चाय के लिए बेताब थे। बिना समय गंवाए मैंने मुंबई में दीपशिखा की आजीवन सदस्य नीता दोशी को हमारे प्लान सी के अनुसार स्थिति समझाई और उनसे यात्रियों के भोजन की व्यवस्था जल्द से जल्द करने को कहा। हम नीता दोशी के नेटवर्क से अच्छी तरह वाकिफ हैं और मुझे विश्वास था कि वह इस संबंध में कोई उपयुक्त विकल्प खोज लेंगी। 10 मिनट बाद ही नीता दोशी ने मुझे फोन किया और बताया कि स्थानीय विधायक को सूचित कर दिया गया है और वह खुद हमसे मिलने आ रहे हैं। उन्होंने हमें यह भी बताया कि अखिल भारतीय जैन मंदिर के स्वयंसेवक 'गर्म नाश्ता' लेकर आ रहे हैं। कुछ यात्री पहले से ही असंतुष्ट थे क्योंकि उन्हें प्रातःकार्य के लिए कतार में लगना पड़ा था। अधिकांश यात्रियों ने स्थिति और वातावरण को समझा और सभी कठिनाइयों को मुस्कराहट के साथ गले लगा लिया। हालांकि, हम कुछ यात्रियों को संतुष्ट नहीं कर सके। बेशक, यह सामान्य बात थी।

थोड़ी देर बाद, एक इनोभा और उसके बाद एक टाटा सूमो तेज गति से हमारे पास आई। सफेद कपड़े जवाहर कोट पहने एक सज्जन इनोभा से नीचे उतरे। उन्होंने अपने माथे पर एक लंबा नारंगी तिलक, छोटे बाल, सांवला और मोटा शरीर, सिर पर एक गांधी टोपी, गले में एक मोटी सोने की चेन और अपने बाएं हाथ में एक सोने की घड़ी पहन रखी थी। उसके उनके पीछे कम से कम आठ सज्जन थे जो टाटा सूमो से बाहर निकले। वे धीरे-धीरे आए और सफेद कपड़े पहने सज्जन के पास खड़े हो गए। जैसे ही मैंने उसे देखा, मुझे पता चल गया कि वे एक विधायक या राजनीतिज्ञ होंगे। जिस तरह हमारे असम में ज्यादातर लोग राजनीति की दहलीज पर पहुंचते ही जवाहर कोट पहन लेते हैं, उसी तरह महाराष्ट्र में सज्जन सिर से पांव तक सफेद कपड़े पहनते हैं, भले ही वे राजनीति में ढीले-ढाले हों। उदाहरण के लिए, एक सफेद शर्ट, सफेद पैंट, सफेद मोजे और साथ ही यदि बॉलीवुड अभिनेता जितेंद्र द्वारा पहने गए सफेद जूतों की एक जोड़ी इकट्ठा कर सकते हैं वह भी (मुझे नहीं पता कि बाकी चीजें सफेद हैं या नहीं)। मैंने सज्जन का अभिवादन किया और उनके पास पहुंचा।

मुझे पता चला कि वह विधायक नहीं बल्कि पूर्व विधायक हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने किसी से सुना है कि कैंसर के कुछ मरीज मुंबई से असम की यात्रा कर रहे थे। इसलिए वह बीमारों की हाल-चाल पूछने आये थे। कुछ बातचीत के बाद

उन्होंने अपने साथ आए एक सज्जन से हमारे साथ उनकी कुछ तस्वीरें लेने के लिए कहा- एक पत्रकार भी उनके साथ आया था। उन्होंने मुझसे पूछा कि पूर्व विधायक ने हमें क्या सुविधाएं दी हैं। मैं एक पल के लिए तैयार नहीं था और स्थिति को समझा और उसे बताया कि वह हमारी हाल-चाल पूछने आये है और हमारी मदद कर रहे है। पूर्व विधायक जिस तरह आए थे उसी तरह गाड़ी में वापस बैठ गए। जाने से पहले उन्होंने हमें बताया कि शिवपुरी नामक स्थान पर उनकी टीम द्वारा रात के खाने की व्यवस्था की जाएगी। पूरी घटना में करीब 15 मिनट लगे।

उनके जाने के कुछ ही देर बाद लाल कॉलर वाली पीली टी-शर्ट पहने कुछ लोग आ पहुंचे। वे भोजन से लदी दो कार लेकर आए थे। उनके नेता श्री बिपुल भाई ने आगे आकर अपना परिचय दिया और कहा कि वे स्वामी नारायण मंदिर और सिद्धि विनायक मंदिर से खाद्य सामग्री लाए हैं। पांच मिनट के भीतर हमारे यात्री लकड़ी के गोदाम के सामने एक घर के बरामदे में बैठ गए। एक तरफ गरमागरम पूड़ी-सब्जी और चाय बांटी जा रही थी। लगभग सभी यात्री पहले ही स्नान कर चुके थे। मैं अनुमान लगा सकता हूं कि 168 यात्रियों को अपना प्रातःकार्य और नाश्ता पूरा करने में लगभग डेढ़ से तीन घंटे लगेंगे। जब यात्री खा रहे थे, बरामदे के नीचे अचानक शोर हुआ। जब मैं पहुंचा तो मैंने एक यात्री, जो पैर के कैंसर से पीड़ित थे, गर्मी सहन नहीं कर सके और अचानक जमीन पर गिर पड़े। डॉ. नीलाक्षी ने तुरंत आकर मरीज की जांच की। उन्होंने भीड़ को वहां से हटने के लिए कहा और बीमार आदमी को दवा दी। करीब दस मिनट के अंदर मरीज उठकर बैठ गया। हम सभी डॉ. नीलाक्षी के कौशल से प्रभावित थे। उस समय बाहर का तापमान कम से कम 40 से 42 डिग्री था, मुझे स्थानीय स्वयंसेवकों से पता चला जो हमारी मदद के लिए आए थे। श्री बिपुल भाई और उनकी टीम न केवल हमारे लिए गर्मागर्म नाश्ता लेकर आए, बल्कि कम से कम 500 लीटर पानी और ढेर सारी सूखी खाद्य सामग्री भी लाए थे। शशि बेन खंडेलवाल ने इसे लंच के लिए पैक कर लिया। मैं अगले सफर के लिए तैयार ही हो रहा था कि बस नंबर तीन के लीडर बिपुल दास आए और उन्होंने मुझे बताया कि उनकी बस स्टार्ट ही नहीं हो रही है। मैंने अन्य यात्रियों से कहा कि वे अपनी बसों में जाएं और ड्राइवरों को एसी चालू करके यात्रियों को बैठने दें। मैं बस नंबर तीन पर गया और ड्राइवर और मैनेजर से बात की तो पता चला कि बस में करंट की खराबी थी। मैंने कहा कि इतने सारे लोग थे, चलो बस को धक्का देकर स्टार्ट

करते हैं। ड्राइवर मुस्कुराया और जवाब दिया कि बैटरी में चार्ज कम होने से धक्का देकर स्टार्ट किया जा सकता है और हमारी बस की बैटरी में चार्ज कम नहीं थी। इसके अलावा विदेशी निर्मित मर्सिडीज बसें इस तरह धकेलने पर स्टार्ट नहीं होतीं। मुझे भी यह पता था, लेकिन मुझे उनकी बातों में दृढ़ विश्वास का संकेत मिला, जहां उन्हें यकीन था कि मैंने पहले कभी मर्सिडीज बस नहीं देखी थी। हालांकि, मैं विनम्रतापूर्वक उनकी बात से सहमत था। मध्य प्रदेश के एक गांव में बस में क्या खराबी हुई किसी को भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अब करें तो क्या करें। हमारी यात्रा के प्लान-बी के अनुसार मैंने अपने असम भवन के कंट्रोल रूम को फोन किया। ड्यूटी पर मौजूद अधिकारी ने तुरंत बस मालिक सुनील भाई को सूचित किया और मर्सिडीज बस की सर्विस सेंटर से संपर्क करने की कोशिश की। इस बीच, स्थानीय जैन मंदिर और सिद्धि विनायक मंदिर के स्वयंसेवक वहां से थोड़ी दूर पर रहने वाले एक एक बस मैकेनिक को लेकर आ गए। मैकेनिक हाथ में रिंच लेकर आत्मविश्वास से बस के निचले हिस्से में घुस गया। हमारे मन में बस ठीक होने की उम्मीद लौट आई। लगभग पांच मिनट के भीतर वह बस के नीचे से बाहर आया और अपना सिर खुजाते हुए, 'कुछ समझ में नहीं आ रहा है।'

वे सज्जन अपने जीवन में पहली बार मर्सिडीज बस के नीचे थे। उसे वह जगह नहीं मिली जहां बिजली का कनेक्शन था। इस बीच मुंबई में हमारी टीम ने हमारे लिए मर्सिडीज बस सर्विस सेंटर के इंजीनियर से संपर्क करने की व्यवस्था की। इंजीनियर ने वीडियो कॉल के जरिए बस का जायजा लिया। उसने एक ड्राइवर और एक अप्रेंटिस को वीडियो कॉल के जरिए हथौड़े और रिंच से बस के नीचे उतरने को कहा। उसने बस के इंजन के नीचे कुछ नट खोलने का निर्देश दिया। करीब 20 मिनट के भीतर हमारी बस का इंजन फिर से चालू हो गया। यह सोचना आश्चर्यजनक लगता है कि एक ड्राइवर अपने हाथ में एंड्रॉइड फोन लेकर कम से कम 1,000 किलोमीटर दूर बैठे कई इंजीनियरों के साथ संवाद करके राजमार्ग के बीच में बस की मरम्मत कर सकता है।

हमने देवास के स्वयंसेवकों को धन्यवाद दिया और अपनी यात्रा फिर से शुरू की। इस बार हमारी मंजिल मध्य प्रदेश में शिवपुरी थी। देवास से शिवपुरी की दूरी 262 किमी है। हालांकि यह यात्रा आमतौर पर लगभग पांच घंटे में पूरी की जा सकती है, लेकिन मैंने अनुमान लगाया कि इसमें हमें लगभग सात घंटे लगेंगे। हमने पहले की तरह ही रणनीति के अनुसार अपना काफिला शुरू किया- बस नंबर एक

सामने, बस नंबर छह अंत में और बाकी चार बसें बीच में। मुझे नहीं पता था कि हम एक साथ कितनी दूर तक जा सकते हैं, लेकिन मैं जब तक साथ रह सकता था, रहना चाहता था। बस नंबर दो का ड्राइवर राकेश कुमार यादव थोड़ा चंचल स्वभाव का है। जैसे ही वह एक्सीलेटर पर कदम रखता है, वह सोचता है कि वह एक हवाई जहाज का पायलट है। यह सोचना गलत नहीं था, क्योंकि उसे मुंबई में नाइट बस चालकों की उस गरिमा को बनाए रखना था। एक पल में बस नंबर दो ने हमें पीछे छोड़ दिया और धीरे-धीरे एक मोड़ पर गायब हो गयी। हमारे ड्राइवर श्री यादव किसी की हिदायत सुनना भी पसंद नहीं करते। पसंद भी क्यों करते? हाईवे पर ड्राइवर का साम्राज्य होता है और ड्राइवर उस साम्राज्य के बेताज बादशाह होते हैं। अन्य ड्राइवर अपने तरीके से जाने में रुचि रखते थे। दो ड्राइवरों को छोड़कर बाकी सभी ने मेरी ओर देखा-जैसे कि मैं हाईवे शिष्टाचार में निम्न-वर्ग का छात्र था और वे प्रत्येक एक मुख्य शिक्षक थे। मैंने उन्हें मुख्य शिक्षक बने रहने दिया। मेरा एक ही लक्ष्य था कि इस बीच रास्ते में दिमाग को ठंडा रखूं और अपनी मंजिल तक पहुंचूं। मैंने सोचा कि ड्राइवरों के साथ हंसना और उनका दिल जीतना और उन्हें 'कमीशनगिरी' का उपयोग किए बिना स्नेह से चलाना बुद्धिमानी होगी। मैं ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठा था। हमारी बस करीब 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही थी। मैंने सड़क के दोनों ओर गेहूं, मक्का, सोयाबीन और कहीं-कहीं दालों की फसल देखीं। मध्य प्रदेश में पिछले कुछ वर्षों में खराब बारिश के कारण कृषि बहुत अच्छी नहीं हुई है। किसान भारी संकट में थे। बैंकों से ऋण समय पर नहीं चुकाया जा रहा था, जिसके कारण इन क्षेत्रों के कई किसानों द्वारा आत्महत्या करने की मीडिया रिपोर्टें सामने आईं। चारों तरफ से सूखा। हमारी बस के अंदर का तापमान लगभग 24 डिग्री सेल्सियस था। मैं ड्राइवर की आगे की सीट से अपने नंबर एक कंपार्टमेंट में वापस चला गया। मेरी बेड पर डॉक्टर नीलाक्षी बैठी थीं। कंपार्टमेंट काफी बड़ा था। एक ट्रेन की तीन सीटों के समान । डॉ. नीलाक्षी अपने मोबाइल फोन पर किसी से हिंदी में बात कर रही थी। मुझे पता चला कि मुंबई की नीता दोशी डॉ. नीलाक्षी को बता रही थी कि हमारी अगली यात्रा कहां और कैसे तय की जाएगी। यात्रा के अंत में डॉ. नीलाक्षी ने एक डॉक्टर के रूप में ही नहीं, बल्कि विभिन्न स्थानों और विभिन्न तरीकों से संवाद स्थापित करने में हमारी मदद की। असम के विभिन्न हिस्सों से कैंसर रोगियों और उनके अभिभावक मुझसे अक्सर संपर्क कर रहे थे। मेरा फोन काफी समय बिजी

रहता था। जब मरीज फोन करते हैं तो वे लंबी बात करना चाहते हैं। अगर मैं व्यस्त हूं फिर भी मैं उनकी हर बात सुनने की कोशिश करता हूं। इस बीच हमें उन प्रत्येक राज्य के सरकारी और निजी क्षेत्रों में संपर्क करने के लिए लोगों के संपर्क में रहना था, जहां से हम गुजरेंगे।

धीरे-धीरे शाम हो रही थी। मैंने अपने कंपार्टमेंट के बाएं कोने से अपना गिटार निकाला। नीलाक्षी की आंखें फैल गईं। उसके चेहरे पर मुस्कान थी- सर, मैंने सुना है कि आप गिटार बजाते हैं। मुझे भी सीखने का मन है।

मैंने कहा कि जब मेरे पास समय होगा तब मैं तुम्हें सिखाऊंगा। इसके साथ ही मैंने गिटार एक तार पकड़ ली और धीरे-धीरे अपने दाहिने हाथ से तार को छेड़ना शुरू कर दिया। गिटार की आवाज सुनते ही दूसरे कंपार्टमेंट से एक-एक कर सिर निकलने लगे। नीलाक्षी गाना अच्छा गाती है। हमने उस दिन शाम से लेकर रात तक ढेर सारे गाने गाए। मुझे पता चला कि नीलाक्षी को बंगाली गानों पर बहुत अच्छी पकड़ है। लक्ष्मीराम कलिता दो कप चाय लेकर हमारे पास आए। लक्ष्मी एक मजाकिया और बेहद प्रतिभाशाली लड़का है। जब हम नाश्ता कर रहे थे, उसने फ्लाक्स को गर्म पानी से भर दिया, ताकि बस में हर किसी को शाम में एक कप गर्म चाय पिला सके। बस में बातें करने, किताबें पढ़ने, समय-समय पर संगीत सुनने, कभी गिटार बजाने और कभी गाने के अलावा कुछ भी करने को नहीं था। उसके बीच जब अचानक गर्म चाय आ जाती तो मस्ती बढ़ जाती।

शिवपुरी पहुंचने ज्यादा दूर नहीं था। यात्रियों को एक दो घंटे में भूख लग जाएगी। बस में थेपला और खाखरा था लेकिन चावल और दलिया खाने के शौकीन असम के लोग गुजराती खाना कितना खाएंगे? हालांकि, नीता दोशी ने शिवपुरी में स्थानीय विधायक के माध्यम से हमारे लिए रात के खाने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया, पर नेटवर्क की समस्या के कारण हम उनसे संपर्क नहीं कर पाए।

नीलाक्षी मेरे पास आई और बोली, सर, मैं शिवपुरी के श्री तरुण अग्रवाल से संपर्क स्थापित कर पाई हूं। उम्मीद फिर लौट आई। मैंने नीलाक्षी के हाथ से फोन लिया और शिवपुरी के मिस्टर तरुण अग्रवाल से बात करने लगा। मुझे एक संकेत मिला कि वह मुझसे थोड़े नाराज है। जैसे ही मैंने हैलो कहा, वह दूसरी तरफ से कहने लगे कि मुझे आप का फोन बिल्कुल नहीं मिल रहा है और वे कम से कम पांच घंटे से सड़क किनारे पेट्रोल पंप पर हमारा इंतजार कर रहे हैं। काफी कोशिशों

के बाद ही उनका संपर्क डॉ. नीलाक्षी से हुआ। हमारे द्वारा उनको हुई असुविधा के लिए मैंने उनसे क्षमा मांगी। श्री अग्रवाल का गुस्सा शांत हो गया। हमारा जीपीआरएस सिस्टम ठीक से काम नहीं कर रहा था। उन्होंने बहुत ही धैर्यपूर्वक हमें उस स्थान के बारे में बताया जहां पर वे प्रतीक्षा कर रहे थे। मुंबई में निमेश भाई नाम के एक सज्जन, केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा सरकार के एक सक्रिय सदस्य होने के नाते मध्य प्रदेश में अपनी पार्टी के सदस्यों, श्री राजेंद्र सिंह और श्री तरुण अग्रवाल के माध्यम से हमारे खाने की व्यवस्था की थी।

जैसा कि श्री अग्रवाल ने कहा, हम शिवपुरी में राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे अग्रवाल पेट्रोल पंप गए। पेट्रोल पंप के सामने फुटबाल के मैदान की करीब आधी जगह खाली थी। एक बहुत बड़ा पेट्रोल पंप था, बहुत साफ-सुथरा और कई शौचालय और स्नानघर थे। तरुण अग्रवाल ने हमारे लिए गरमागरम खिचड़ी, फरसान (गुजराती खाना), अचार, केला, मिठाई, बिस्किट के पैकेट और पानी तैयार रखा था। लगभग दो दिनों के सफर के बाद हमारे यात्री खिचड़ी देखकर देख खुश हो गए। लेकिन उन्हें मसालों और काली मिर्च पाउडर वाली मध्य प्रदेश की खिचड़ी का स्वाद पसंद नहीं आया। मुझे थोड़ी निराशा हुई कि अग्रवाल ने इतने उत्साह से जो खिचड़ी बनवाई थी, वह उस तरह खत्म नहीं हो रही थी जैसा वे चाहते थे। मैंने दो प्लेटें खा लीं भले ही वे तीखी थीं। मिस्टर अग्रवाल मेरे पास एक मुस्कान के साथ आए और बोले, 'आपलोग मसालादार खाना नहीं लेते हो ना?'

मुझे पता था कि अग्रवाल सब कुछ समझ गए। वह निश्चित रूप से खिचड़ी को खत्म करने में सक्षम नहीं होने का बुरा नहीं मानगें। हमने करीब दो घंटे पेट्रोल पंप पर बिताए। उनके एक बड़े भाई और उनके दो छोटे भाइयों ने भी हमारी देखभाल की। हमने अग्रवाल और उनकी टीम के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए अपनी यात्रा जारी रखी।

इस बार हमारी मंजिल करीब 420 किमी दूर लखनऊ है। लखनऊ पहुंचने से पहले करीब 100 किलोमीटर आगे झांसी पहुंचेंगे। कानपुर झांसी से लगभग 230 किमी और लखनऊ वहां से लगभग 100 किमी दूर है। डॉ. नीलाक्षी मरीजों की जांच के लिए पहले ही हर बस का दौरा कर चुकी थीं। मैंने उन्हें हर दिन बहुत ईमानदारी से ऐसा करते देखा है। यात्रियों का मनोबल बनाए रखना बेहद जरूरी था। इसलिए मैंने व्यक्तिगत तौर पर उनके साथ हंसने और उनकी स्थिति को समझने की कोशिश की। प्रत्येक बस के लीडर ने इस संबंध में एक बहुत ही

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कोई परेशानी होने पर मरीज ने तुरंत मुझे बताया और हम सबने मिलकर समस्या का समाधान करने की कोशिश की। इस यात्रा को सफल बनाने की कुंजी उचित समन्वय और अपनी जिम्मेदारियों को सावधानीपूर्वक निभाना था - प्रत्येक के लिए एक और एक के लिए प्रत्येक। इस यात्रा का नेतृत्व करने वाले के लिए इस पहलू पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण था। यात्रियों के साथ-साथ डॉक्टरों, टीम के नेताओं और सक्रिय रूप से हमारी मदद करने वाले प्रत्येक स्वयंसेवक का मनोबल बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण था।

यात्रा के दूसरे दिन से किसी को सिर दर्द और पेट में दर्द, किसी को उल्टी और किसी को हल्का बुखार होने लगा था। इसलिए डॉ. नीलाक्षी ने अपने साथ लाई गई दवाओं में से हमें आवश्यक दवाएं दीं और अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन किया। करीब आधे घंटे के सफर के अंदर ही दूसरी बसों के चालक गति सीमा का पालन करने लगे। ड्राइवर की बगल वाले सीट पर सफर करने का एक अलग ही मजा होता है। विंडस्क्रीन एक मूवी स्क्रीन की तरह है! उसके सामने कई अलग-अलग पृष्ठभूमि और घटनाएं घटित होती है। मैंने अपना मोबाइल फोन अपने हाथ में लिया और कुछ वीडियो बनाने के लिए आगे की सीट पर बैठ गया। गति नियंत्रण में हम कोई अनुशासन नहीं रख सके। प्रत्येक चालक को मेरा केवल यही निर्देश था कि प्रत्येक बस को मेरे द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर रुकना चाहिए, चाहे गति कितनी भी हो; अन्यथा मैं उचित कार्रवाई करने के लिए विवश हो जाऊंगा। मुझे खुद नहीं पता था कि क्या करना है, लेकिन मुझे पता था कि कुछ स्थितियों में थोड़ी सी आदेश देना काम करती है।

जैसे ही हम प्रत्येक राज्य में प्रवेश करते हैं, हमारी बसों को स्थापित जांच चौकियों के कारण हमारे बसों की गति धीमी हो जाती थी। मध्य प्रदेश सीमा चौकी पर अहसास होने के बाद मैंने हर वाहन चालक से कहा कि अगर उन्हें चौकी पर जाम दिखे तो जरूरत पड़ने पर वे पीछे हट जाएं और सड़क की विपरीत दिशा से बस ले जाएं। मैं विपरीत दिशा से आगे बढ़ गया और बस को ओर से आगे बढ़ गया और बस को चौकी के पास रोक दिया। अन्य बसें पहुंची नहीं थीं, इसलिए उनका इंतजार करने लगा। मैंने हमारे पीछे आने वाली बसों को हमारी बस का पीछा करने के लिए कहा। चौकी पर पहुंचकर मैंने वहां के प्रशासन और पुलिस कर्मियों को अपना पहचान पत्र दिखाया और अपनी स्थिति बताई कि मैं कैंसर के मरीजों को अपने साथ लाया था। जैसे ही उन्हें पता चला कि कैंसर के

मरीज हमारी बसों में यात्रा कर रहे हैं, उन्होंने हमारे लिए रास्ता खोल दिया और हमें हर संभव मदद दी। यदि यह तरीका नहीं अपनाता तो हमें प्रत्येक चौकी पर लंबा इंतजार करना पड़ता। इससे हमारी यात्रा पूरी करने में कम से कम दो दिन की देरी हो जाती।

मैं ड्राइवर के पास वाली सीट पर बैठा था। मैंने नेशनल हाइवे के दोनों किनारों पर सैकड़ों लोगों को ट्रंक, छोटे बैग, कपड़े की पोटली और छोटे बच्चों को गोद में लिए चलते देखा। हमारे सामने हाईवे पर अनगिनत ऑटो रिक्शा, मिनी ट्रक, टेम्पो, छोटी कारें और हर वाहन में असंख्य पुरुष, महिलाएं और बच्चे थे। इस दृश्य ने मुझे बेन किंग्सले की फिल्म 'गांधी' (भारत के विभाजन के दौरान) के कुछ दृश्यों की याद दिला दी। ये यात्री प्रमुख शहरों में कारखानों और परियोजनाओं में काम करने वाले श्रमिक थे, जो लॉकडाउन के कारण बंद हो गए थे। सभी गतिविधियों के अचानक बंद हो जाने और बीमारी के फैलने के डर के कारण वे जितनी जल्दी हो सके, अपने घरों को लौट जाने चाहते थे । इनमें वे लोग भी शामिल थे, जो कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद अपने घर पहुंचने की उम्मीद में कम से कम 10-15 दिनों से चल रहे है। रात के बावजूद अपनी बस की हेडलाइट्स में हम सड़क के किनारे बांस या डंडों से बंधी छोटी-छोटी छोपड़ियों को देख सकते थे, जहां आस-पास के गांवों के स्वयंसेवकों ने इन यात्रियों के लिए पीने का पानी और भोजन उपलब्ध कराया था। यह था- मानवता का एक दुर्लभ उदाहरण। आजादी के बाद से भारत के इतिहास में संभवत: ऐसा घर वापसी मार्च कभी नहीं हुआ।

हमारे पीछे बैठे सरकार जी मेरे पास आए और मेरे कंधे पर दस्तक दी। उन्होंने बस को कुछ देर के लिए रोकने कहा। सरकार जी की शारीरकि स्थिति बहुत अच्छी नहीं थे। वह अपने मन के बल से इस यात्रा पर निकले पर उनका शरीर उन्हें साथ नहीं दे रहा था। इन सज्जन के कारण हमें बार-बार अपनी बस रोकनी पड़ी थी। हमारी बस एक मील के पत्थर के पास रुकी। मुझे पता था कि हम उत्तर प्रदेश से होकर आ रहे हैं। एक-एक करके दो और बसें आईं और हमारी बस के पास रुक गईं। रात के सन्नाटे में कई यात्री बसों से उतर गए। आकाश में चमकीले तारे नहीं थे। पृथ्वी घनघोर अंधेरे में डूबी हुई थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हवा बहती हुई आहें भर रही है। मैं दोनों बसों में गया और जाग रहे यात्रियों को देखा। कुछ मरीज तो घंटों के सफर से असहजता महसूस कर रहे थे। जब मैंने उससे पूछा

कि वह कैसे है, तो उनलोगों ने मुझे एक सूखी मुस्कान दी। मुझे उनका दर्द समझ में आया। मैंने उनमें से कुछ के कंधे पर हाथ रखा और मजाक में कहा कि दिल्ली ज्यादा दूर नहीं है। कम से कम माहौल थोड़ा हल्का हुआ। लगभग दस मिनट के बाद हमने फिर से अपनी यात्रा शुरू की।

कुछ देर बाद हमने ऐतिहासिक महारानी लक्ष्मीबाई के झांसी को पार किया। अब हमारी मंजिल थी 230 किमी दूर कानपुर। धीरे-धीरे रात सुबह की ओर बढ़ रही थी। तभी मेरे मोबाइल फोन की घंटी बजी। दूसरी तरफ से किसी ने घबड़ाहट में मुझसे कहा-'सर, हमारी बस का एक्सीडेंट हो गया है। एक सरकारी बस पीछे से आई और हमारी बस को टक्कर मार दी।'

उन्होंने कहा, 'दूसरी बस के कुछ लोग हमारी बस के चालक को मारने के लिए छड़ें लेकर आए थे।' यह सुनकर मेरा केलेजा फटने लगा। एक अनहोनी आशंका मन में भर गई। मुझे लगा कि बस नंबर दो का ही एक्सीडेंट हुआ होगा। फोन करने वाले की आवाज कांप रही थी। मैंने उस आदमी को फोन पर शांत होने को कहा लेकिन मेरे अंदर तूफान सा था। मैंने अपने दिमाग को जितना हो सके ठंडा करने की कोशिश की। मैंने उस आदमी से पूछा ' क्या कोई घायल हुआ है।'

उसने मुझसे कहा, 'मुझे कुछ भी पता नहीं चल रहा।' मैंने उनसे टीम लीडर को फोन देने के लिए कहा, जिसने जवाब दिया कि टीम लीडर कुछ यात्रियों के साथ दूसरी बस से उतर रहे लोगों से बहस कर रहे थे। मैंने सज्जन से अनुरोध किया कि वे मरीजों और महिलाओं को छोड़कर हर अभिभावक को बस से उतार दें और दूसरी बस से लड़ने आए लोगों को बहुत धैर्य से समझाएं और हमारी ओर से लड़ाई या कोई अनुचित कार्रवाई न करें। बातचीत में मुझे उनसे पता चला कि वे हमारी बस की आगे थे। मैंने फोन काट दिया और जल्दी में टीम लीडर को फोन करने की कोशिश की, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। मैं अपने ड्राइवर के पास गया और उससे बस तेज चलाने को कहा। ड्राइवर ने बार-बार पूछा क्यों। मैंने उस समय उनसे या डॉ. नीलाक्षी से कुछ भी कहने की जरूरत नहीं समझी। करीब 20 मिनट बाद हम घटनास्थल पर पहुंचे। मैं जल्दी से अपनी बस से उतरा और दूसरी बस में चला गया। मैंने देखा कि बस की पिछली दाहिनी सीट के पास के करीब तीन शीशे टूट कर चूर-चूर हो गए थे। मेरा पहला सवाल था, क्या कोई घायल हुआ तो नहीं? बस के पास इंतजार कर रहे कई यात्रियों ने कहा कि कोई घायल नहीं हुआ है। मैंने भगवान का नाम लिया और झुक कर वहीं बैठ गया, जहां पर

मैं खड़ा था। मुझे नहीं पता था कि एक पल के लिए हंसू या रोऊं। तुरंत, मैंने अपनी भावनाओं को फिर से काबू में किया और टीम लीडर के साथ यात्रियों से मिलने के लिए बस के अंदर चला गया। कई महिलाएं डरी हुई थीं। मैं उनके पास गया और उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की। जब तक मैं पहुंचा, लड़ाई पहले ही समाप्त चुकी थी। हमारा ड्राइवर राकेश यादव लड़ाई के मूड में इंतजार कर रहा था। वह मेरे पास आया और कहा कि अगर यात्री नहीं रोकते तो वह दूसरी बस से उतरे लोगों से मारपीट करता। टीम लीडर ने आकर मुझे बताया कि वह और कुछ अन्य यात्री न होते तो स्थिति बिगड़ जाती। उनके मुताबिक पीछे से आई एक बस ने हमारी बस के पिछले हिस्से में जोरदार टक्कर मार दी। गनीमत यह रही कि दोनों बसें अगल बगल से टकरायी थी और बस का चालक समय रहते ब्रेक लगा सका। तेज आवाज हुई और दोनों बसें रुक गईं। कुछ लोग रॉड और लाठियों के साथ नीचे उतरे और हमारी बस नंबर दो के ड्राइवर को पीटने की कोशिश की। हमारा ड्राइवर भी कम नहीं। वह युद्ध के मैदान में जाने के लिए भी तैयार थे। हमारे यात्री आनन-फानन में बस से उतरे और मारपीट रोकने की कोशिश की। लेकिन दूसरा पक्ष किसी तरह शांत नहीं हुआ। नतीजा दोनों पक्षों के बीच जमकर कहासुनी हुई। हालांकि, हमारे यात्रियों में से कुछ बुजुर्गों ने स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए टीम लीडर के साथ काम किया। उत्तर प्रदेश परिवहन निगम के बस वालों ने हमारी बस में सभी को धमकाया और वापस अपनी बस में बैठकर चले गए। यह मुझे बस नंबर दो के यात्रियों से पता चला।

युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन एक नई समस्या खड़ी हो गई। तीन खिड़कियों के शीशे टूटे हुए थे और बस का ए.सी. काम नहीं कर रहा था। चिलचिलाती गर्मी में हमारे मरीजों के लिए ए.सी. के बिना बस में अपनी यात्रा जारी रखना लगभग असंभव था। काफी समय पहले ही बर्बाद हो चुका था। हमारी योजनाओं के विपरीत हम तब निर्धारित समय से कम से कम आठ घंटे पीछे थे। प्रतीक्षा करने का समय नहीं था। मैं जानता था कि हम इन शीशों को आसानी से ठीक नहीं कर सकते। अचानक दिमाग में एक विचार आया। हमारे भोजन से भरे कार्टून के डिब्बों को एक-एक करके काटकर टूटे गिलासों पर सेलोटेप और प्लास्टर की मदद से चिपका दिया गया। लगभग आधे घंटे के भीतर तीन खिड़कियां कार्टून के गत्ते की मदद से बंद हो गईं। अस्थायी खिड़कियों को मजबूत बनाने के लिए उन्हें टेप की मदद से कार्डबोर्ड के साथ साट दिया गया। मुझे पता था कि ए.सी. पूरी

तरह से नहीं, पर कार्डबोर्ड लगाने से थोड़ा-बहुत काम करेगा। यह देखा जाना बाकी है कि और क्या मरम्मत की जा सकती है। मैंने सभी को बस में चढ़ने के लिए कहा और अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

10 मई, 2020

सुबह का उजाला बस के पर्दों की दरारों से होते हुए आया और मेरी नजर उस पर पड़ी। मैंने पर्दा खींचा और अनुमान लगाया कि हमारी बस किसी पेट्रोल पंप पर रुकी होगी। मैंने अपनी आंखें पोंछी और बस के नीचे उतर गया। जैसे ही मैंने बस के दरवाजे से बाहर कदम रखा, एक गर्म हवा ने मुझे घेर लिया। मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा तो सुबह के साढ़े आठ बज रहे थे। कानपुर अभी भी लगभग 40 किमी दूर था। मैंने अपनी बस के साथ दो और बसें देखीं। अन्य तीन बसें आगे बढ़ गई होंगी या पीछे आ रही होंगी। बस नंबर तीन का ड्राइवर कौमुद्दीन खान मेरे पास आया और मुझे बताया कि पेट्रोल पंप पर शौचालय और बाथरूम बहुत साफ हैं और पास में चाय की अच्छी दुकान है। सफर के दौरान शौचालय या बाथरूम होने का पता चलते ही मन खुश हो जाता है। नेशनल हाइवे पर सफर करने वाले हजारों यात्री इन बाथरूमों का इस्तेमाल करते थे। हमारे साथ आए 'असम भवन' और 'दीपशिखा' के यात्रियों को छोड़कर बाकी यात्रियों के कोविड-19 का परीक्षा करने का अवसर मुझे नहीं मिला। यह ज्ञात है कि ऐसे सार्वजनिक स्नानघरों से कोविड रोग फैलने की संभावना अधिक होती है। इसके अलावा कैंसर के इलाज के कारण हमारे मरीजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत कम थी। अगर हम यात्रियों में से एक भी संक्रमित हो जाता है तो सभी यात्रिओं का संक्रमित होना लगभग तय है। मुझे बदनामी का डर नहीं था, मैं कभी-कभी एक पल के लिए सोचने लगता था कि क्या मैंने मरीजों की बात मानने और उन्हें इस तरह लाने का फैसला करके कोई गलती की है? अगर आने वाले दिनों में इस फैसले की वजह से हम किसी मरीज या उनके अभिभावक को खो देते हैं तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा। इस चिंता के साथ साथ मेरे मन में कुछ उम्मीद भी जग जाती थी। दिल की बीमारी का इलाज करा रहे हमारे साथ आए बच्चों की मुस्कान देखकर सब कुछ आसान लगने लगा और मेरा आत्मविश्वास फिर से लौट आया। हम यात्रा को सुचारू रूप से पूरा कर सकें और मरीजों को उनके घर वापस भेज सकें। विघ्न विनाशक सिद्धिविनायक में बचपन से ही मेरी गहरी आस्था है। जब मैं उनकी छवि के बारे में सोचता हूं तो मुझे कुछ अलग मिलता है। मैं अपने मन में सोचता हूं कि

अगर हम सफल नहीं होंगे, तो वह हमें कभी ऐसी यात्रा शुरू करने की अनुमति नहीं देते। ऊपर वाले के आशीर्वाद के बिना यह यात्रा सुचारू रूप से संपन्न होना लगभग असंभव था।

तभी मुस्कुराते हुए लक्ष्मीराम कलिता आए और बोले-गुड मॉर्निंग सर। कलिता अपना गुड मॉर्निंग और गुड इवनिंग सही समय पर कहते हैं। सूरज ढलते ही वे आपको 'गुड नाइट सर' कहकर संबोधित करते हैं, भले ही वे आप से दिन में पहली बार मिलें।

'सर, चलिये चाय पीते हैं, मैंने अपने फ्लास्क में गर्म पानी रखा है। मैं हाथ-मुंह धोने के बाद में बस में अंदर आया और अपने कंपार्टमेंट में रखे मेघालय के लाकाडोंग से लाए गए हल्दी के पाउडर का डिब्बा निकाला तथा दो गिलास गर्म पानी मिलाया। एक गिलास मैंने पीया और दूसरा नीलाक्षी को दे दिया। मैं आमतौर पर कुछ चीजें अपने पास रखता हूं। उदाहरण के लिए, हल्दी, अखरोट, मेवे, किशमिश, एक 3/5 आकार का गोरखा रेजिमेंट का चाकू और एक विक्टोनिक्स स्विस चाकू। लाकाडोंग से यह हल्दी मेरे स्कूल के दोस्त असलम मेरे लिए लाया था और मैं लंबे समय से सुबह उठने पर इस हल्दी का उपयोग कर रहा हूं। असलम ने कहा था कि यह हल्दी इम्यून सिस्टम को बढ़ाती है। वह शब्द मेरे मन में पत्थर के अक्षर की तरह बस गया था। जब मैं सुबह उठकर एक गिलास गर्म हल्दी का पानी थोड़े से नींबू के रस के साथ पीता हूं, तो मुझे एक अजीब सा आत्मविश्वास महसूस होता है। मुझे ऐसा लगता है कि यह हल्दी और नींबू का रस मुझे कोविड के खिलाफ अजेय बना देगा। लगभग दस मिनट के बाद मैंने नीता दोशी द्वारा भेजी गई गिरनार मसाला चाय को दो गिलास गर्म पानी में डाला। साथ में थोड़ा सा खाखरा और थेपला ले लिया। मैंने लक्ष्मीराम को पास के ढाबे पर जाकर यह देखने के लिए कहा कि हमने जिस पूड़ी और सब्जी का आर्डर दिया था, वह बनी है या नहीं। मैंने पेट्रोल पंप के बगल में एक ढाबे के मालिक से बिना मिर्च हमारे लिए नाश्ते की व्यवस्था करने को कहा। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि हमारी बसें जब भी किसी होटल या ढाबे पर पहुंचती हैं तो होटल चलाने वाले लोग तुरंत दरवाजे-खिड़कियां बंद कर देते हैं और हमारी लाख मिन्नतों के बावजूद दरवाजे नहीं खोलते। मैं इस रहस्य को ठीक से नहीं समझ पाया। पेट्रोल पंप के पास वाले ढाबे के मालिक ने मुझे रहस्य समझाया। जब उन्होंने गुजरात लाइसेंस प्लेट वाली छह बसें देखीं तो उन्हें बीमारी फैलने का डर हुआ। अगली यात्रा की तैयारी करना

आसान था, क्योंकि मुझे पता था कि खाने के मामले में क्या उम्मीद करनी है।

लक्ष्मीराम खबर लाया कि हमारे सुबह का नाश्ता तैयार है। यात्री बड़े चाव से पूरियां और सब्जी खाने के लिए आगे बढ़े। काफी समय हो गया था और सभी को भूख लगी थी। उनमें से दो-चार ने पूड़ी और सब्जी मुंह में डाली और पानी पीने लगे। मैंने ढाबे के मालिक से पूछा तो उसने जवाब दिया कि उत्तर प्रदेश के उस इलाके में यह बहुत कम मिर्च है। जब उन्हें मुझे से पता चला कि यात्रीगण को कैंसर है, तो उनका कहना था कि उन्होंने बिना मिर्च के सब कुछ पकाया है। मैंने सब्जी को देखा और अनगिनत लाल मिर्चों को चारों ओर तैरते देखा। पूरियों में भी बहुत मसाला था। ढाबा का मालिक आया और उसने मुझे एक छोटा सा कागज दिया। उसने नौ हजार रुपये लिखा था। मैंने कागज लिया और एक पल के लिए सोचा - क्या मैं इसे सबक सिखा दूं? विवेक ने कहा कि इतने सारे यात्रियों के साथ उत्तर प्रदेश के एक दूरदराज के हिस्से में रहते हुए गुस्सा न होना ही बुद्धिमानी होगी और शांतिपूर्वक अपनी यात्रा को जारी रखे। युवा टीम के नेता और मेरे बगल में कई यात्रियों ने मुझे नौ हजार रुपये का भुगतान नहीं करने के लिए कहा लेकिन उस वक्त मैंने सोचा कि स्थानीय लोगों से बहस न करना ही बेहतर होगा। मैंने ढाबे के मालिक को नौ हजार रुपये थमाए और उसे नमस्ते किया और कहा कि हममें से कोई भी उसकी पूरियां और सब्जी नहीं खाएगा। उसने चौंक कर मेरी तरफ देखा। वे पूरी-सब्जी पैक करके बस में मुझे देना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि हममें से कोई भी ऐसा मसालेदार खाना नहीं खा सकता। वह किसी उपयुक्त को ढूंढ कर इस खाने को वितरित कर दे।

मैंने यात्रियों से अपनी बसों में चढ़ने को कहा और यात्रा शुरू की। (लक्ष्मीराम कलिता मेरे लिए राम के हनुमान की तरह थे। वह अत्यंत प्रभुभक्त और मेरे सुविधा और असुविधा से बहुत वाकिफ थे। लक्ष्मी के साथ मेरा एक सदी से भी अधिक समय का रिश्ता था। उनके होने के कारण मैं अकेला महसूस नहीं कर रहा था और मेरे मन में एक ताकत थी कि मेरा कोई मेरे साथ था।)

कानपुर पहुंचना ज्यादा दूर नहीं था। सारी बसें एक जगह जमा हो जाने के बाद जब हम दोबारा सफर शुरू करते हैं तो करीब आधे घंटे तक सब कुछ ठीक चलता है। लगभग आधे घंटे के बाद हम अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद अपनी बसों को एक साथ नहीं रख पा रहे थे। प्रत्येक चालक के लिए अपनी मनोदशा को नियंत्रित करना एक कठिन कार्य था। हाईवे के दोनों ओर ट्रंक, पोटली या छोटे

बच्चों को ले जा रहे हजारों पैदल यात्रियों को देखकर दुख होता था। एक पल के लिए हमारी एसी बस के अंदर से मैं उन्हें इस गर्मी की तपिश में इस तरह जाते देखकर खुद को दोषी महसूस कर रहा था। जिन पेट्रोल पंपों से हम गुजरे, वहां ट्रक ड्राइवरों और कई पैदल यात्रियों से बात करने पर पता चला कि इस कठिन यात्रा को झेलने वाले कुछ अभागे लोगों की रास्ते में ही मौत हो गई, क्योंकि वे यात्रा की चुनौतियों को सहन नहीं कर सके। उनकी हालत देखकर लगा कि हमलोग स्वर्ग में हैं।

कानपुर केवल 10 किमी दूर था। तभी मेरे मोबाइल फोन की घंटी बजी। बस नंबर दो के टीम लीडर पन्ना पाल ने फोन किया था। उत्तेजित स्वर में उसने मुझे बताया कि बस नंबर तीन, जो बस नंबर दो से आगे थी, उस बस ने अचानक ब्रेक लगा दिया था और पीछे की बस ने आगे की बस को टक्कर मार दी थी। टक्कर से बस नंबर दो का शीशा टूट गया और शायद इंजन भी क्षतिग्रस्त हो गया है। ऐसी खबरें लगभग आम होती जा रही थीं। इसलिए जब मैंने इस बार यह सुना तो मैं अपने दिमाग को ठंडा रख सका। मैंने पन्ना पाल से दोनों बसों को नेशनल हाइवे पर एक खुली जगह पर पार्क करने और हमारी बस के वहां पहुंचने तक इंतजार करने को कहा।

जब आप आग से खेलते हैं तो कभी-कभी थोड़ा जल जाना सामान्य बात है। मैंने बार-बार ऊपर वाले से प्रार्थना की कि किसी यात्री को नुकसान न हो। ऐसी स्थिति में उनके सिवा और कौन हमें बचाएगा? मैं किस पर भरोसा करूं? लगभग 20 मिनट बाद मैंने अपनी बस की आगे सीट से देखा कि दो दुर्घटनाग्रस्त बसें सड़क के किनारे खड़ी थीं। हादसे में बस नंबर तीन को कोई चोट नहीं आई है। हालांकि, बस नंबर दो का शीशा टूटा हुआ था और ए.सी. सिस्टम काम नहीं कर रहा था। ज्यादा सोचने का समय नहीं था। कुछ यात्रियों की आपत्ति के बावजूद हमने अपने काफिले में बस नंबर दो के यात्रियों को दो बसों के बीच बांट दिया। हालांकि, मैंने यात्रियों से कहा कि वे अपना सामान बस नंबर दो पर छोड़ दें। मैंने बस को कानपुर के एक गैरेज में जाने और जल्द से जल्द आवश्यक मरम्मत कराने के लिए कहा। उसी के साथ इस घटना के बारे में बस के मालिक सुनील भाई को अवगत कराया। उनसे बस की मरम्मत के लिए कानपुर में उचित व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया। हम अब सोशल डिस्टेंसिंग नहीं रख सकते थे क्योंकि बस नंबर दो के यात्रियों को दो अन्य बसों में मिलाना था, लेकिन हमारे पास कोई

विकल्प नहीं था। इस दुर्घटना ने हमें और भी धीमा कर दिया।

यात्रियों को बस में खाना खाकर अपना पेट भरना पड़ा, क्योंकि हमें नेशनल हाइवे के किनारे कोई ढाबा या होटल खुला नहीं मिला। हमारे मन में आशा की किरण यह थी कि लखनऊ पहुंचते ही हमें गर्मागर्म चावल और दलिया मिलने की संभावना है।

हर साल हमारी संस्था 'दीपशिखा' दो वार्षिक सम्मेलन आयोजित करती है- एक गुवाहाटी में और दूसरा मुंबई में। पिछले साल मुंबई में हमारे वार्षिक समारोह में प्रसिद्ध भारतीय कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव को हमारे मरीजों का मनोरंजन करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने दो घंटे तक 'दीपशिखा' और 'असम भवन' में रोगियों और अभिभावकों के लिए एक सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री राजू श्रीवास्तव सत्तारूढ़ भाजपा की उत्तर प्रदेश शाखा के एक सम्मानित सदस्य हैं। हमारी संस्था की नीता दोशी ने उनसे संपर्क किया और लखनऊ में यात्रियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहा। श्री राजू श्रीवास्तव ने लखनऊ में 'छप्पन भोग' नामक प्रसिद्ध मिठाई की दुकान के मालिक राजेंद्र अग्रवाल को जिम्मेदारी सौंपी। श्री राजेंद्र अग्रवाल ने लखनऊ पहुंचने से लगभग 50 किमी पहले हमसे संपर्क किया और लखनऊ शहर पहुंचने से पहले नेशनल हाइवे के एक बाईपास पर अपनी टीम के साथ हमसे मिलने की सूचना दी। हमने फ्लाईओवर के पास अपनी बसें रोक दीं। कोविड दिशा-निर्देशों के तहत अग्रवाल और उनकी टीम ने 'सोशल डिस्टेंसिंग' के तहत हमारी तीन बसों के टीम लीडरों को गर्म खाने के पैकेट सौंपे। श्री अग्रवाल ने लॉकडाउन की परवाह किए बिना हमारे लिए भोजन उपलब्ध कराने में जिन कठिनाइयों का सामना किया, उनका विवरण देने की आवश्यकता नहीं है। कोई जान-पहचान नहीं, कोई रिश्ता नहीं, कोई स्वार्थ नहीं। इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि हम अपने जीवन में श्री अग्रवाल से फिर कभी मिलेंगे या नहीं। फिर भी कुछ लोग मानवता की इतनी भक्ति और मौन से सेवा करते हैं कि मेरा सिर कृतज्ञता और सम्मान से झुक जाता है।

राजेंद्र अग्रवाल ने बहुत करीने से हमारे लिए दिन का भोजन कुछ सुंदर प्लास्टिक के बक्सों में पैक किया था । लखनऊ शहर को पार करने के बाद मैंने प्रत्येक बस के टीम लीडर को उस स्थान पर भोजन करने के लिए रुकने के लिए कहा, जहां हमारी नंबर एक बस (जो पहली बस थी) रुकेगी। मैंने अपनी छह बसों को रास्ते में खड़ा करने के लिए पहले से ही एक उपयुक्त जगह खोजने की कोशिश

की थी। थोड़ी दूर जाने के बाद हमने अपनी बसों को नेशनल हाइवे के किनारे एक अधूरे निर्माण स्थल के सामने रोक दिया। मैंने टीम लीडरों को बस से उतरने और अपनी-अपनी बसों में खाने के पैकेट बांटने को कहा। मुझे पता चला कि जिन तीन बसों में खाने का सामान रखा हुआ था उनके टीम लीडरों ने बिना मेरी अनुमति के पहले ही अपनी-अपनी बसों में खाने के पैकेट बांट दिए थे और कुछ यात्रियों ने एक से ज्यादा पैकेट ले लिए थे। नतीजतन यात्रियों को दिए जाने वाले पैकेटों की संख्या घट गई है। पैकेटों की गिनती की गई तो पता चला कि करीब 25 पैकेट कम पड़ रहे थे। हर यात्री बहुत भूखा था। ऐसे में मैं असमंजस में था कि किससे और कैसे बताऊं कि खाने के 25 पैकेट कम पड़ रहे हैं। मैं इस तरह के गैरजिम्मेदाराना व्यवहार के लिए बसों के टीम लीडरों से नाराज था। फिर एक ही बात दिमाग में आई कि उस स्थिति में किसी को गाली देने का कोई मतलब नहीं था। बाकी बसों में खाने के पैकेट की कमी की खबर पहले से ही फैल रही थी। कुछ यात्री थोड़े उत्तेजित हो पड़े थे। ऐसी स्थिति में मैंने टीम लीडरों को बुलाया और उनसे कहा कि वे बस से सभी ब्रेड, मक्खन, जाम और फल इकट्ठा करें और उन्हें सड़क के किनारे भवन के बरामदे में ले आएं। मैं बसों में चढ़ा और लगभग 15 युवा माता-पिता को बस से बाहर बुलाया और उन्हें स्थिति के बारे में बताया। मैंने उनसे यह भी अनुरोध किया कि यदि वे उस दिन मेरे साथ रात के खाने की ब्रेड और मक्खन से संतुष्ट हैं, तो हम रोगियों के बीच बचे हुए खाने के पैकेट वितरित कर सकते हैं। हर अभिभावक मुझसे सहमत थे। मुझे पल भर के लिए यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि भूखे होने के बावजूद वे मुझसे एक शब्द भी कहे बिना इतने सकारात्मक दृष्टिकोण से मुझे स्वीकार करते हैं। बाकी यात्रियों के बीच खाने के पैकेट बांटे गए। सड़क किनारे बने भवन के बरामदे में मेरे और टीम लीडर के साथ 15 यात्री मुस्कराते हुए जमीन पर बैठे और रात को ब्रेड, मक्खन और फल खाया पर किसी को कोई शिकायत नहीं थी। यदि थी भी तो उसे व्यक्त नहीं किया। सबके सामने जो मिला उसे सबने स्वीकार किया। यह इस यात्रा की एक और विशेषता थी।

सबके खाने के बाद हमने फिर से अपनी यात्रा शुरू की। धीरे-धीरे यात्रियों पर सफर का दबाव पड़ने लगा। किसी को चक्कर, किसी को पेट दर्द, किसी का जी मिचलाने और किसी को पेचिश की समस्या थी। डॉ. नीलाक्षी ने हर यात्री की समस्याओं का सहज समाधान करने का प्रयास किया। धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ

कि बिना डॉक्टर के हमारे साथ क्या होता! ऐसे में यात्रियों का मनोबल बनाए रखना बेहद जरूरी है। मैंने यात्रियों को यात्रा के तनाव पर ध्यान न देने के लिए अधिक से अधिक यात्रियों से बात करके और कभी-कभी कुछ मजेदार बातें कहकर हंसाने की कोशिश की। यात्रियों में कई बुजुर्ग भी थे जो मुझे बहुत प्यार करते थे और मेरी भलाई के लिए बहुत जागरूक थे। उनकी तरह की बातें सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। धीरे-धीरे हम एक परिवार बनने लगे, जहां कुछ दिनों के लिए हो यात्रियों के बीच हमें अपने माता-पिता, भाई-बहन मिले। हालांकि, मैं यह सोचकर थोड़ा दुखी था कि बस एक-दो रातों में हमारे रास्ते अलग-अलग हो जाऊंगे।

11 मई 2020

लखनऊ से करीब 130 किमी के बाद हम पहले फैजाबाद पहुंचे और फिर गोरखपुर पहुंचने से बाद करीब 145 किमी. का सफर तय करके उत्तर प्रदेश की सीमा पार करने के बाद हम बिहार में प्रवेश करेंगे। प्रत्येक राज्य की सीमा में प्रवेश करते समय हमने लंबा ट्रैफिक जाम देखा था । कई बार ये जाम कई किलोमीटर लंबा हो जाता था। जैसे ही हम सीमा चेक पोस्ट पर पहुंचे, ड्राइवर मेरे पास आए और मुझे सोते से जगाया। मुझे अपने साथ चेक पोस्ट तक ले गए। मैं आगे बढ़ा और चेक पोस्ट पर तैनात पुलिस और सिविल सेवा के अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे हमारी बसों को प्रतीक्षारत ट्रैफिक से आगे ले जाएं। मैं हर राज्य की पुलिस और नागरिक प्रशासन से मिले सहयोग को कभी नहीं भूलूंगा।

हमारी बसें बिहार की सीमा पार कर मुजफ्फरपुर की ओर जा रही थीं। बस नंबर दो, जो पहले ही दुर्घटनाग्रस्त हो चुकी थी, ठीक हो गई और हमारे काफिले तक पहुंच गई। मैंने बस के ड्राइवर से बात की और पता चला कि केवल ए.सी. ठीक की गयी। टूटी हुई विंडशील्ड को बदला नहीं जा सका, क्योंकि मर्सिडीज बस का विंडशील्ड कहीं नहीं मिला। शीशा नहीं बदलने के कारण चालक को वाहन चलाने में परेशानी हुई। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि जब बस को 40 किमी/घंटा से ऊपर चलाया जाता है तो शीशे के छोटे-छोटे कण सामने से उड़कर चालक की आंखों पर लगते हैं। इस कठिनाई के लिए ड्राइवर ने एक जोड़ी चश्मा पहना था। लेकिन यह काम नहीं आया।

मैं दुर्घटनाग्रस्त बस से उतारे गये और अन्य बसों में सवार यात्रियों से अपनी बसों में लौटने के लिए कहा। उनमें से अधिकांश ने मेरे अनुरोध का अनुपालन

किया, लेकिन बस संख्या तीन में कुछ यात्रियों ने बस बदलने पर आपत्ति जताई। यथासंभव यात्रियों के बीच सामाजिक दूरी बनाए रखना आवश्यक था। मेरे पास बसों को बदलने का विरोध करने वाले यात्रियों को यह बताने के अलावा कोई चारा नहीं था कि जिस बस में वे बैठे थे, वह भी टूटी हुई थी। और उस बस को भी मरम्मत के लिए भेजना होगा। दूसरा सवाल किए बिना वे बस से उतर गए और दूसरी बस में बैठ गए।

जैसे ही हमने बिहार में प्रवेश करते ही रोटरी इंटरनेशनल ने हमें भोजन उपलब्ध कराने की पूरी जिम्मेदारी ली थी। रोटरी क्लब के साथ यह संपर्क हमारे लिए नीता जोशी ने रोटरी क्लब ऑफ मुंबई मेट्रोपॉलिटन के माध्यम से बनाया था। वह क्लब की वरिष्ठ सदस्य हैं। इस पूरे आयोजन में मुंबई के रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3141 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर हरजीत सिंह अलवर और बिहार के रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3250 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर भोपाल खेमका की अहम भूमिका रही।

मुजफ्फरपुर पार करते ही डॉ. नीलाक्षी को रोटरी के असिस्टेंट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर श्री संजीव सिंह ने फोन पर सूचना दी कि वे लोग मुजफ्फरपुर से कुछ आगे खाने का सामान लेकर हमारा इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने हमें अपनी जीपीआरएस लोकेशन दी और हम उसी हिसाब से उनके पास पहुंचे। श्री संजीव सिंह ने रोटेरियन्स की टीम के साथ मिलकर हमारे लिए पूरी-सब्जी, फल, 500 लीटर पानी और कुछ दवाइयां इकट्ठी की थीं। मुजफ्फरपुर के रोटेरियन्स के साथ कुछ समय बिताने के बाद हम फिर आगे बढ़ गए।

चार दिनों की एक साथ यात्रा के बाद हमारे यात्री लगभग थक चुके थे। उनमें से कुछ यात्रियों ने बसों के अंदर हंसते-गाते एक सकारात्मक माहौल बनाने की कोशिश की थी। उन्हें इस बात में बहुत रुचि थी कि यदि संभव हो तो स्वच्छ स्थान पर स्नान करें और साधारण भोजन करें जैसे हम घर पर पकाते हैं। हमने मुजफ्फरपुर के रोटरी क्लब के सदस्यों को यात्रियों की इस इच्छा से अवगत कराया। तदनुसार श्री संजीव सिंह ने चारों ओर तालाबंदी के बावजूद निजी पहल की और सरकारी प्रशासन के साथ बातचीत करके मुजफ्फरपुर से थोड़ा आगे 'राजा लाइन होटल' नामक एक बहुत बड़ा ढाबा खोलने की व्यवस्था की।

हमारी बसें जाकर राजा ढाबा पर रुकीं। विशाल होटल में अच्छे बाथरूम और शौचालय थे। उस दिन हमारे लगभग सभी यात्रियों ने अच्छे से स्नान किया और बड़े उत्साह के साथ राजा होटल द्वारा परोसा गया भोजन किया। हमने उस जगह

पर कम से कम तीन घंटे बिताए। नहाने के बाद यात्रियों में एक नया उत्साह देखने को मिला। हममें से कुछ खुशी से बिहू गाने गा रहे थे और नाच रहे थे। इनमें नन्ही भाग्यलक्ष्मी शईकिया, जिनकी केवल कुछ दिनों पहले कीमोथेरेपी हुई थी, ने बिहू नृत्य और गायन कर सभी का मन मोह लिया। उनका उत्साह देखकर हम सब अपनी थकान भूल गए। वे जानते थे कि बस में केवल दो और रात बिताने के बाद वे गुवाहाटी पहुंच जाएंगे। यात्रियों में खुशी का माहौल था। ऐसा लगता था कि वे अपनी सारी थकान, कमी और शिकायतें भूल गए हैं।

हम होटल में खाना खा रहे थे। तभी हमने एक महिला के रोने की आवाज सुनी और उसके पास गए। पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि उनके पति बसंत कुमार दास के गले में ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब लगी हुई थी। वह ट्यूब उनके गले से निकल रही है। नतीजतन आदमी कुछ भी निगल नहीं सका। डॉ. नीलाक्षी ने उस आदमी की अच्छी तरह से जांच की और किसी तरह पानी में कुछ प्रोटीन पाउडर मिलाकर उन्हें खिलाने में सफल रहीं। श्री दास ने कहा कि उन्हें बहुत भूख लगी है, लेकिन नली में छेद होने के कारण वे ठीक से खा नहीं पा रहे थे। उसने हमें इशारों में समझाने की कोशिश की कि वह अभी भी भूखे है। गले में ट्यूब लगी होने के कारण वह बोल नहीं पा रहे थे। डॉ. नीलाक्षी से बात करने के बाद हम श्री दास को जल्द ही कुछ राहत दिलाने का आश्वासन दिया।

संतोषजनक भोजन और इच्छानुसार अच्छे स्नान के बाद हमने राजा लाइन होटल के मालिक को धन्यवाद दिया और अपनी यात्रा फिर से शुरू की। शाम के करीब साढे तीन बज रहे थे। इस बार हमारी मंजिल 280 किमी दूर पूर्णिया थी, जहां हमारे लिए डिनर का इंतजाम रोटेरियन श्री राजेश सिंह ने किया था।

केवल एक रात के बाद गुवाहाटी पहुंचने की आशा ने मेरे मन में कई तरह की भावनाएं पैदा कर दीं। मैं अपने गिटार के साथ कंपार्टमेंट में बैठा था और थोड़ा-बहुत टुंगटांग कर रहा था। नीलाक्षी भी मेरे साथ बैठी थी। मैंने जयंत हजारिका के गाने गाए और नीलाक्षी ने बंगाली गाने गाए। एक बार अचानक नीलाक्षी ने पूछा, 'सर, जब हम गुवाहाटी पहुंचेंगे तो सरकार की ओर से हमारा भव्य स्वागत किया जाएगा, है न?ङ्ख

नीलाक्षी के मन में ऐसी भावनाएं होना स्वाभाविक ही थी। मैं उस समय उनके खुश मन को हताश नहीं करना चाहता था। मैं मुस्कुराया और बस इतना कहा कि समय बताएगा। शायद हमारे व्यस्त कार्यक्रम के बीच हमारी यात्रा को नियमित

रूप से लिया जाएगा और कोई विशेष व्यवस्था नहीं की जाएगी। नीलाक्षी उस समय शायद मेरी बात नहीं समझ पाई होगी। हमारा गाना फिर से शुरू हो गया। शाम धीरे-धीरे गिटार की धुन पर उतर आई।

रात के करीब 8 बज रहे थे। मैं ड्राइवर के बगल की सीट पर बैठा था। हमारे ड्राइवर उपेंद्र सिंह से उत्तर प्रदेश में उनके गांव के बारे में बात कर रहा था। उपेंद्र सिंह बहुत गंभीर थे। वे ज्यादा बात नहीं करता थे। मैं बहुत गंभीर लोगों से थोड़ा सावधान रहता हूं-अनुभव ने मुझे सिखाया है। मैं नहीं जानता कि वह क्या सोच रहा था और किस समय क्या कर दे। कहा जाता है कि लंबी यात्रा पर जाने वाले कुछ बस या ट्रक चालक शराब पीते हैं। सिंह की आंखें देखकर शराबी जैसी लग रही थी। इसलिए जैसे ही वह स्टीयरिंग व्हील पर चढ़े मैं हमेशा सतर्क रहता था। मील के पत्थर पर बस की रोशनी में मैंने देखा कि हरिया नामक स्थान तक लगभग 20 किलोमीटर बाकी था। बस नंबर दो के चालक कमलेश कनबर का फोन आया। उन्होंने मुझे बताया कि उनकी बस हमारे काफिले से काफी पीछे थी क्योंकि विंडशील्ड धीरे-धीरे टूट रहा था। बस तेजी से चलाने से कांच के कई छोटे-छोटे टुकड़े उड़कर ड्राइवर की आंखों और नाक में जा रहे हैं। मैंने उससे कहा कि मैं बाकी बसों को आगे मिले पेट्रोल पंप के पास ही रोक दूंगा। मैंने उनसे धीरे-धीरे से आने और पेट्रोल पंप पर मिलने को कहा। अन्य बसों के टीम लीडरों को सूचना देने के बाद हमने हारिया के एक पेट्रोल पंप पर बसों को रोका। करीब एक घंटे बाद बस नंबर दो हमारे पास आई। यात्री दूसरी बसों से उतर चुके थे और पेट्रोल पंप के चक्कर लगा रहे थे। मैं बस नंबर दो पर चढ़ा और विंडशील्ड की स्थिति का जायजा लिया। सही में उसकी स्थिति खराब थी, लेकिन पूरी तरह शीशा टूटने की संभावना नहीं थी। ड्राइवर ने मुझे बताया कि आने वाली कारों की हेडलाइटें जलती हैं तो उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता है। हवा में उड़ते शीशे के टुकड़े भी उनकी आंखों में आने लगे हैं और इसलिए मुझे बार-बार बस रोकनी पड़ी।

अगर काफिले में कोई बस 20-25 किमी/घंटा की रफ्तार से चलती है तो उस बस के यात्रियों का बहुत बुरा हाल होगा। मुझे यह भी पता था कि हम अपनी अगली यात्रा के दौरान कहीं भी मर्सिडीज बस की विंडशील्ड को बदलने में सक्षम नहीं होंगे, क्योंकि विंडशील्ड को विशेष रूप से ऑर्डर करके शोरूम में लाना पड़ता था। एक बार फिर यात्रियों को दूसरी बसों में ट्रांसफर करना संभव नहीं था। पिछली बार भीड़ में बैठने से यात्रियों को पहले ही काफी परेशानी हो चुकी थी।

सुबह तक कहीं भी बस खड़ी करना सुविधाजनक नहीं था। मैंने बिना ज्यादा सोचे-समझे सभी ड्राइवर और मैनेजर कमलेश भाई को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि हम बस नंबर दो के शीशे को हथौड़ा से पूरी तरह से तोड़कर फ्रेम से हटा दें। मेरी बात सुनकर कमलेश भाई उछल पड़े। वे मालिक से पूछे बिना ऐसा काम नहीं कर सकते। मालिक को फोन करने को कहा तो वे एक-दूसरे का चेहरा देखकर सोचने लगे। मुझे पता चला कि वे दुर्घटना के बारे में मालिक को सूचित नहीं करना चाहते थे और यह सही है कि शीशा टूटने की जानकारी से भी मालिक को अवगत नहीं किया गया है। वह लोग संभवत: रास्ते में ही बस की मरम्मत कर मालिक को न बताने की कोशिश कर रहे थे। मैंने सोचा कि ऐसे नहीं चलेगा। मैं थोड़ा गुस्से में दिख रहा था और उनसे कहा कि जब तक शीशा नहीं तोड़ा जाता हम दूसरी बसों के साथ बस नंबर दो नहीं ले सकते। यदि किसी भी कैंसर रोगी को इसके परिणामस्वरूप नुकसान होता है, तो वे जिम्मेदार होंगे और हमें उनके खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। मैंने अपना मोबाइल फोन ले लिया और पुलिस से बात करने की धमकी दी। अगर उन्होंने मेरी धमकी को अनसुना कर दिया होता और मुझे पुलिस को बुलाने दिया होता, तो मुझे नहीं पता कि मैं क्या करता। भगवान की कृपा से मैनेजर तुरंत मेरे पास आया और मुझे फोन करने से मना कर दिया। क्या आप पुलिस को बताए बिना समस्या का समाधान नहीं कर सकते? मुझे जब पता चलता है कि वे थोड़े डरे हुए हैं! मेरा स्वर एक और पायदान ऊपर चला गया। मैंने उन्हें बताया कि मैंने पहले ही व्हाट्सएप के माध्यम से असम पुलिस को सूचित कर दिया था और असम पुलिस उनके असम पहुंचते ही उनके खिलाफ उचित कार्रवाई करेगी। ड्राइवरों में से एक ने मुझसे पूछा कि शीशा तोड़ दिया तो बिना किसी कवर के इतनी तेज हवा में बस कैसे चला सकता हूं। मैंने उससे कहा कि मैं इसके बारे में पहले ही सोच चुका था। उन्हें बस को सड़क के किनारे ले जाना है और चाकू से फ्रेम से कांच को हटाना है। ड्राइवर की टीम भी समझ गयी कि मैं एक आसानी से माननेवाला नहीं था। हो सकता है उनमें से किसी ने बस मालिक को फोन कर इसकी जानकारी दे दी। बस नंबर दो के चालक कमलेश ने जल्द ही बस को पेट्रोल पंप से बाहर निकालकर नेशनल हाईवे के पास रोक दिया। हथौड़ा लिए दो चालक बस पर चढ़ गए और शीशा तोड़ने की कोशिश की। उस दिन मैंने जाना कि गाड़ी के सामने का शीशा तोड़ना कितना कठिन होता है।

अध्याय 7

सरुसजाइ स्टेडियम

सरुसजाइ स्टेडियम में कार्यरत असम सिविल सेवा की अधिकारी पोमी बरुआ हमारे गुवाहाटी पहुंचने के लगभग दो घंटे पहले से ही फोन पर संपर्क में थीं। उनसे हमें पता चला कि माननीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हिमंत विश्व शर्मा और स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री पीयुष हाजरिका स्टेडियम में उपस्थित रहेंगे। इस बात को सुनकर मैं उत्साहित हो गया।

मध्यम गति से जा रही एस्कॉर्ट गाड़ी के पीछे हम सरूसजाइ के लिए जा रहे थे। फोरलेन हाईवे के दोनों ओर सोलर लैंप जल रहे थे। यह किसी एयरपोर्ट के रनवे जैसा लग रहा था। मन भ्रमित था। यात्रा की सफलतापूर्वक सम्पन्न होने से हर्ष और अपार संतोष का भाव तो था, लेकिन यात्रियों से फिर कब मिलेंगे, इसकी अनिश्चिताएं मन में उदासी का भाव ले आई। उस समय ऐसा लग रहा था कि

सरुसजाई 100 किलोमीटर दूर हो जाए तो बेहतर होता। मेरी बगल में गाड़ी चला रहे उपेंद्र सिंह भी भावुक हो गए थे। यह ड्राइवर, जिसने यात्रा के पहले भाग के दौरान मेरी बिल्कुल भी बात नहीं मानी थी, वह अब मुझसे पूछे बिना कुछ नहीं करता था। उसने स्टीयरिंग व्हील पकड़ते हुए आगे की सड़क को शून्य दृष्टि से देखा और बोला, साहब हम फिर से कब मिलेंगे?

मैंने उनसे कहा कि हमारे दूर जाने के लिए अभी भी काफी समय है, क्योंकि गुवाहाटी में उनके तरह एक दिन आराम करने के बाद मैं भी बस से उनके साथ वापस चलूंगा। उपेंद्र सिंह एक पल के लिए देखते रहे। वह जानना चाहते थे कि इतनी दूर आकर मैं घर क्यों नहीं गया। इस सवाल के पीछे कई बातें थीं। कोविड के संक्रमण के कारण मुंबई में स्थिति बहुत विकट थी। हमारे असम भवन में रहने वाले कैंसर के कुछ मरीज कोविड के कारण अस्पताल में भर्ती थे। वे और उनके माता- पिता यह जानकर टूट गए थे कि मैं इस समय मुंबई छोड़कर असम आऊंगा। उन्होंने मुझसे बार- बार एक ही बात कही, 'सर, आप जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाना। समानांतर रूप से एक और लेख लिखा जा सकता था। पांच दिन और चार रात की 2700 किमी की यात्रा के दौरान मैं कई लोगों (और हमारे साथ आने वाले मरीजों) के संपर्क में आया। मैं भी शायद कोविड संक्रमण का शिकार हो सकता हूं। इसलिए यह जरूरी था कि मैं जल्द से जल्द मुंबई लौट जाऊं। हालांकि उपेंद्र सिंह को यह सब बातें समझाने का समय नहीं था। मैंने उन्हें सिर्फ बताया कि सरकार ने आदेश दिया है कि हम मुंबई से आए चालकों को एक दिन का आराम देकर तुरंत लौट जाएं। मिस्टर सिंह ने सामने रास्ते की तरफ एक भावुक नजर से देखा और सिर हिला दिया।

आगे की तरफ देखता हुए बढ़ता जा रहा था, तभी सामने बहुत रोशनी दिखी। हमारी बस एस्कॉट गाड़ी के पीछे बायीं ओर मुड़ गई। बस की हेडलाइट 33वें राष्ट्रीय खेलों के प्रतीक रंगमन पर गिरी। मुझे पता चल गया था कि हम सरुसजाइ स्टेडियम पहुंच गये थे। गेट के सामने एस्कॉर्ट कार कुछ देर के लिए रुकी। हो सकता है कि उन्होंने हमारे बसों को अंदर जाने के लिए अनुमति देने के लिए कहा हो। गेट को धीरे- धीरे पार करने के बाद, हम सरुसजाइ स्टेडियम की ओर जाने वाली चौड़ी सड़क पर आगे बढ़ते गए और बसें स्टेडियम के ठीक सामने रुक गईं। मैं ड्राइवर की सीट के पास ही बैठा था।

मैं थोड़ी देर के लिए असमंजस में पड़ गया था कि क्या कोई आकर हमें बस

से उतरने के लिए कहेगा या हमें बिना कुछ कहे खुद उतरना होगा। मेरे मन में एक डर था कि अगर हम कोविड संक्रमण के समय से धड़ाधड़ नीचे उतर गए तो इतने लोगों के लिए सरुसजाइ कोविड जांच केंद्र में काम करने वाले लोग तैयार नहीं होंगे। पास में सलवार कमीज पहने तथा मुख पर मास्क लगाए हमारा इंतजार कर रही पोमी बरुआ को मैंने पहचान लिया। उनके साथ और भी कई लोग इंतजार कर रहे थे। बस की हेडलाइट्स की रोशनी में मैंने देखा कि पोमी बरुआ की कुछ पीछे हमारी 'दीपशिखा' की डॉ. मृण्मयी बरुआ भी इंतजार कर रही हैं। उनके बगल में मेरे सहयोगी, असम सिविल सेवा अधिकारी और दीपशिखा के आजीवन सदस्य उदयादित्य गोगोई थे। करीब पांच मिनट तक जब उस तरफ से कोई ईशारा नहीं मिला तो मैं नीचे उतर गया और पोमी बरुआ की तरफ चल पड़ा। पोमी थोड़ा आगे आयी और मुझसे मरीजों को नीचे ले जाने और उन्हें एक निश्चित जगह पर बिठाने को कहा। मैंने अपने साथ चलने वाले टीम के नेताओं से यात्रियों को नीचे उतारने को कहा। डॉ. नीलाक्षी की उम्मीद के विपरीत हमारे यात्रियों के स्वागत के लिए और कोई आगे नहीं आया और न ही किसी ने आकर सफल यात्रा के लिए बधाई दी। एक पल के लिए ही सही पर मेरा मन सूख गया था। इतनी सफल यात्रा के बाद रोगियों को बहुत खुशी होती यदि कम से कम प्रोत्साहन के कुछ शब्दों के साथ उनका स्वागत किया जाता।

इतने में ही स्टेडियम में पहले से इंतजार कर रहे पत्रकारों ने मुझे घेर लिया। करीब 15 मिनट तक उन्होंने मुझसे हमारी यात्रा के बारे में तरह- तरह के सवाल पूछें। असम के हर मीडिया संस्थान यहां के लोगों को समय- समय पर हमारी यात्रा के बारे में बहुत अच्छी जानकारी दे रहे थे। उन सभी की यह सकारात्मक भूमिका हमारे लिए काफी उत्साहजनक रही। (इसके लिए हम उनके सदा आभारी हैं।)

मीडिया से हमारी बातचीत लगभग खत्म होने के समय में मैंने माननीय स्वास्थ्य मंत्री को जाते हुए देखा। मैं उसके पास गया और उनसे कहा कि हम पहुंच गए हैं। उन्होंने निश्चित रूप से मुझे नहीं पहचाना क्योंकि मैंने टोपी और मास्क पहन रखी थी। वे ठीक है, कहकर चलने लगे थे। जब मैंने अपना मास्क खोला तो उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई थी और उन्होंने यात्रियों के बारे में कुछ देर मुझसे बात की, और साथ ही मुझे एक दिन की छुट्टी लेने और जल्द ही मुंबई लौटने के लिए भी कहा था। मंत्री के जाने के बाद हमारी 'दीपशिखा' टीम तालियों के साथ मेरे पास

आई - डॉ. मृण्मयी बरुआ के साथ उदयादित्य गोगोई, जयंत गोस्वामी, गुणगोबिंद दादा, नयन कलिता और नगेन दास थे। उन्होंने मुझे और हमारी टीम को बधाई दी थी। उनसे मिलकर मन को बहुत आंनद मिला। वे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुए कि मैं एक दिन में वापस चला जाऊंगा। मृण्मयी ने कहा था कि जाना ही है तो चिंता मत करो। वापसी की यात्रा के सभी इंतजाम दीपशिखा के ओर से किया जायेगा। हम सभी एक साथ बस से उतरे यात्रियों के पास गए। वे लोग उस समय कागज के गिलास में चाय और कुछ स्नैक्स ले रहे थे। मैंने उन सभी को बताया कि एक कप चाय पीने के बाद, वे एक- एक करके पास के कोविड परीक्षण कक्ष में जाएं और अपने नमूने दें! उस समय भारी बारिश हो रही थी। परीक्षण के लिए गए हमारे यात्रियों में से प्रत्येक को एक छाता दिया गया। यात्रियों की कतार लंबी होने के कारण कुर्सियों की व्यवस्था की गई थी। परीक्षा प्रक्रिया थोड़ी लंबी होने के कारण हमारी कतार धीरे- धीरे आगे बढ़ी। इतना लंबा सफर करने के बाद यात्रियों का सब्र टूट गया।

हालांकि, प्रशासन के पास कोई विकल्प नहीं था। हमारे यात्रियों को कोविड की जांच कराए बिना घर जाने देना एक संकट था, जब हमारे यात्री कोविड की जांच कराने के लिए लाइन में खड़े थे, हमने प्रशासन को सूचित किया कि श्री बसंत कुमार दास को अपनी गर्दन से जुड़ी ट्रेकियोस्टोमी ट्यूब के कारण कठिनाई हो रही थी। थोड़ी देर बाद स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री पीयूष हजारिका खुद आए और कहा कि श्री दास के लिए पानबाजार के महेंद्र मोहन चौधुरी अस्पताल में सभी चीजें की व्यवस्था कर दी गई है। सरुसजाइ स्टेडियम के पार्किंग स्पेस के पास रहने वाली एंबुलेंस तक हम दास को ले आये थे। हमारे पास के एंबुलेंस तक मंत्री पीयूष हजारिका भी आये थे। एंबुलेंस को देखते ही दास महोदय अचानक अस्पताल नहीं जाऊंगा कहकर शोर मचाने लगे। उन्हें लगा कि एमएमसी अस्पताल में कोविड संक्रमित रोगियों को रखा जाता है और वहां जाने से उन्हें भी कोविड संक्रमण हो सकता है। रोगी के इच्छा न होने के कारण हम भी उसी स्थान में रुक गए। डॉक्टर निलाक्षी से उस रात के लिए दास महोदय को जैसे तैसे संभालने के लिए आग्रह किया। इसके साथ ही मैंने राज्य कैंसर अस्पताल के संचालक डॉ सुभाष चंद्र गोस्वामी जी के साथ फोन में बात करके दास महोदय की इस परिस्थिति के बारे में अवगत किया। डॉ विभास गोस्वामी ने मुझे विश्वास दिलाया कि पिछले दिन रेडिसन ब्लू होटल में वह एक चिकित्सक का दल भेज देंगे और वह दास के साथ

हर असुविधा का ध्यान रखते हुए सभी रोगियों का ठीक से परीक्षा करके उचित व्यवस्था लेंगे। दास के स्वास्थ्य की परीक्षा लेने के बाद उन्हें होटल में विश्राम करने के लिए भेज दिया गया।

तब तक लाइन में रहने वाले हमारे यात्रियों की स्वास्थ्य परीक्षा धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। मेरे असामरिक सेवा के मित्र शर्मिष्ठा गोस्वामी आदि कई व्यक्ति आकर मेरी खबर ले रहे थे। मेरे लिए उनके व्यवहार देखकर मैं कृतज्ञता से आवेगपूर्ण हो गया था। दूसरी तरफ सरुसजाइ में कार्यरत भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकार डॉ एस लक्ष्मणन और कामरूप ग्राम के उपायुक्त श्री कैलाश कार्तिक जी ने आगे आकर हमारा अभिनंदन किया और मुझे व्यक्तिगत रूप से उनके अभिनंदन ने उत्साहित किया था।

पोमी बरुआ दीपशिखा दल को साथ में लेकर जांच केंद्र के पास ही एक जगह पर चाय पिलाने के लिए ले गई थी। 2002 वर्ष की इस अधिकारी के दक्षता से सभी ज्ञात है। एक सुप्रशासनिक अधिकारी होने के साथ-साथ उनकी एक मानवतावादी स्वभाव भी है, जो बहुत ही प्रशंसनीय है। बस से उतरने के बाद ही काम में व्यस्त होने के कारण मैं यह बात भूल ही गया था कि मुझे भूख भी लगी है। चाय पीकर बहुत ही अच्छा लगा था और पेट के आवाज से पता चला कि मुझे बहुत भूख लगी थी। उसी समय प्रधान सचिव समीर सिन्हा ने मुझे देख कर अपने पास बुला लिया और उनके साथ ही रहने वाले भाई नाम के एक सरदार जी को मेरे लिए रात का भोजन तैयार करने के लिए कहा। सिन्हा जी को धन्यवाद कहा किंतु उनका प्रस्ताव ग्रहण करने के लिए संकोच हुआ क्योंकि मेरे साथ आए हुए यात्रियों ने उस समय तक कुछ भी नहीं खाया था। नियम अनुसार स्वाव परीक्षा होने के बाद ही वे लोग खा सकते थे। अब तक जिन यात्रियों की कोविड जांच हो चुकी थी, उन्हें होटल रेडिसन ब्लू भेजने का निर्णय लिया। सभी यात्रियों को एक साथ लेकर जाने का कोई मतलब नहीं था। लगभग 30 यात्रियों की जांच होने के बाद ही उनको एक-एक बस में भेज देने का काम आरंभ किया।

रात के प्रायः एक बज गए। जांच कराने के लिए अभी भी 25 - 30 यात्री बाकी थें। तभी जांच केंद्र के पास ही शोर शराबा हुआ। पता चला कि हमारे यात्रियों की लाइन 20 मिनट से आगे नहीं बढ़ी है, क्योंकि जांच केंद्र के भीतर स्वाव ले रहे कर्मचारियों के बीच कुछ रिलीवर न आने से झगड़े की सृष्टि हो गई थी। मैं रूम के भीतर चला गया और कर्मचारियों को समझाने का प्रयास किया।

उन लोगों से अनुरोध की कि इतनी लंबी सफर करके आ रहे कैंसर के रोगी और उनके परिवार के लोग बहुत ही थके हुए थे। उत्तर में मुझे उन लोगों ने कहा था कि सारा दिन काम करके वे लोग भी थक गए हैं। उनकी बात इतनी ध्यान देने लायक नहीं थी। कोई भी उपाय न दिखने पर मैंने वहां कार्यरत दो महोदय को इस बात की जानकारी दी। उन लोगों ने भी बहुत कोशिश की पर फिर भी जांच केंद्र में कार्यरत कर्मचारियों को वे शांत नहीं कर सकें। जब कोई उपाय नहीं दिखा तो मैंने पमी बरुवा को फोन किया। पोमी बरुआ ने इस बात को काफी महत्वपूर्ण रूप में लिया था और मुझे बताया कि शीघ्र ही कोई व्यवस्था की जाएगी। 5 मिनट के बाद तूफ़ान के जैसे वेग से हमारे सामने एक महोदय आ रहे थे। उन्हें मामले को समझने के लिए भी समय नहीं था। वह सिर्फ जानना चाहते थे कि मंत्री को यह बात किसने कही। मैं आश्चर्यचकित हो गया था कि इन महोदय को हमारे रोगियों के दुख-कष्ट के प्रति कोई भी चिंता नहीं है । जो भी हो, बहुत जल्दी जांच केंद्र भी हलचल में आ गया और लोगों के स्वाव लेने का काम आरंभ हो गया। हमारे यात्रियों की भी जांच पुनः आरंभ हुई। 45 मिनट के भीतर हमारे सभी यात्रियों की जांच पूरी हो गई थीं। असम सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा इतनी योजनाबद्ध तरीके से यह सब काम किया गया था कि इसे भूला नहीं जा सकता। रात के प्रायः 2:00 बजे थे। यात्रियों को लेकर वहां पर बस में बैठाया और होटल रेडिसन ब्लू चले गए।

आठवां अध्याय

रेडिसन ब्लू

सरुसजाई स्टेडियम से होटल रेडिसन ब्लू तक रास्ता करीब 20 मिनट का है। रात के अंधेरे को चीरती हुई हमारी बस होटल की ओर जा रही थी। हमें नीले रंग की ग्लॉसलाइन में लिखे होटल 'रेडिसन ब्लू' के अक्षर दूर से ही दिखाई दे रहे थे। हमारी बस के होटल परिसर में घुसने के बाद हमारे यात्री आनन-फानन में उतर गए। वे इतने थके हुए थे कि उनके पास बस के डेक से अपने बक्सों को इकट्ठा करने का भी धैर्य नहीं था। ऐसा लग रहा था कि वे जल्द से जल्द नहाने के अलावा और कुछ नहीं सोच रहे थे। हालांकि, रेडिसन ब्लू के कर्मचारी भी हमारे रोगियों और उनके अभिभावक की परिस्थितियों को अच्छी तरह समझ गये थे। उन्होंने तुरंत नाम दर्ज कराया और सबको अपने अपने कमरों की चाबियां सौंप दीं। जैसे ही मैं अपने यात्रियों को शुभ रात्रि कहने के लिए होटल के रिसेप्शन पर रुका, मैं अच्छी तरह से जानता था कि उनमें से बहुत से लोगों से मैं भविष्य में फिर कभी नहीं मिल सकूंगा। कई अपना शेष इलाज असम में पूरा कर सकते हैं। मुझे नहीं पता कि मुंबई फिर कब वापस जाएंगे, यही स्पष्ट नहीं है। कोविड की स्थिति कब तक बनी रहेगी, उस समय इसका सटीक जवाब किसी के पास नहीं था।

जब मैंने पांचवीं मंजिल पर अपने कमरे में प्रवेश किया और एक शुद्ध सफेद चादर के साथ बिस्तर देखा, तो स्विमिंग पूल में कूदने की तरह बिस्तर पर कूदकर सोने के अलावा मैं और कुछ नहीं करना चाहता था। मैंने चमकदार शीशे से घिरा एक सुंदर बाथरूम भी देखा। बिना कुछ सोचे मैं सीधे बाथरूम में गया और शॉवर खोलकर खुद को गर्म पानी में भिगो लिया। धूल और थकान से लथपथ मेरे शरीर पर जैसे ही पानी का बहाव हुआ, ऐसा लगा जैसे किसी प्यासे मरुस्थल पर वर्षा

ऋतु की पहली वर्षा हुई हो। तन और मन की सारी थकान धीरे-धीरे दूर होती दिख रही थी।

असम सिविल सेवा अधिकारी भातृप्रतिम प्रशांत काठकटिया और असम पुलिस सेवा के अधिकारी पार्थसारथी महंत ने होटल में मेरी जरूरत की हर चीज की व्यवस्था की थी। (मैं उनके प्यार और भाईचारे के लिए हमेशा उनका आभारी हूं।) सुबह के करीब तीन बज रहे थे। हालांकि मैंने टेबल पर रखे खाने में से थोड़ा-सा ही खाना खाया, क्योंकि मुझे लगा कि अगर मैं खाली पेट सोने जाऊंगा तो मुझे सुबह एसिडिटी हो जाएगी। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गया।

तकिए के पास रखा मोबाइल फोन कई बार वाइब्रेट कर रहा था। मैंने फोन की ओर देखा तो देखा कि मृण्मयी फोन कर रही है। सुबह के 10 बज रहे थे। मृण्मयी जानना चाहती थी कि मेरे माता-पिता को मुझसे मिलने के लिए हमारे घर से होटल में कब लाया जाए। मुझे कोविड प्रोटोकॉल के अनुसार होटल से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। घर पर अपने माता-पिता से मिलने तो दूर की बात थी, मुझे तो 48 घंटे के भीतर गुवाहाटी छोड़ने और असम की सीमा पार करने की बाध्यता थी। इसलिए मृण्मयी और 'दीपशिखा' के आजीवन सदस्य जयंत गोस्वामी, गुनगोबिंद दास, उदयादित्य गोगोई, नगेन दास और राहुल शर्मा ने मेरे बीमार माता-पिता को होटल ले आने और मुझसे एक बार मिलाने की कोशिश की थी। गुवाहाटी में 12 घंटे से अधिक समय बिताने के बावजूद मेरे लिए अपने माता-पिता से न मिल पाना वास्तव में एक बड़ी विडंबना थी। मेरे पिता 88 साल के और मेरी मां 80 साल की हैं। दोनों धीरे-धीरे डिमेंशिया नाम की बीमारी से ग्रसित हो रहे हैं। कोविड की स्थिति के कारण मैं उनका उचित इलाज नहीं करा पा रहा था। मैंने मृण्मयी को लगभग एक घंटे में मेरे माता-पिता को होटल लाने के लिए कहा। मैंने पहले ही होटल प्रशासन से बात कर ली थी और यह पता लगाने की कोशिश करने का फैसला किया कि मैं अपने माता-पिता से कैसे मिल सकता हूं। होटल प्रशासन ने मुझे बताया कि अगर मेरे माता-पिता को होटल से बाहर लाया जाता है, तो मैं नीले रिबन के भीतर पांच फीट की दूरी से उनसे मिल सकता हूं।

मृण्मयी और 'दीपशिखा' के सदस्य जो वे कहते हैं, उसी तरह करते भी थे। दिन के 11 बजे मेरे माता-पिता और उनके साथ साये की तरह रहने वाले राहुल के साथ मृण्मयी, जयंत, गुनगोबिंद, उदय और नगेन होटल के नीचे आए और मुझे फोन किया। मैं तेजी से नीचे गया। मैं अपने पिता और मां को ऐसी अवस्था में

देखकर बहुत भावुक हो गया था। मेरी मां को मृण्मयी ने पकड़ रखा था। मेरे पिता ठीक से चल नहीं पाते थे। मेरे पिता ने जयंत और राहुल के कंधों को पकड़ लिया और खिसकते और झुकते हुए मेरे पास आए। जब मेरी मां मुझे देख मेरे पास आने लगी तो होटल के सुरक्षा गार्ड ने उन्हें पांच फीट की दूरी बनाए रखने की चेतावनी दी। ऐसा लगा कि मैं अपने सामने नीला रिबन फाड़कर अपने माता-पिता को गले लग जाऊं, लेकिन ऐसा व्यवहार अस्वीकार्य था। मेरे पिता बहुत भावुक व्यक्ति हैं और मेरी मां यथार्थवादी हैं। मेरे पिता ने बिना कुछ कहे अपनी सूखी आंखों से मुझे देखा। हालांकि मेरी मां बाते कर रही थी, लेकिन मुझे उसकी बातों में थोड़ी उलझन महसूस हुई। बात करते-करते उसने अचानक कुछ असंबंधित बात कह दी। इसे डिमेंशिया का लक्षण बताया जाता है।

मैं उस समय बहुत अपराधबोध महसूस कर रहा था। मेरा दिल को यह बात कचोट रही थी कि ऐसी असहाय स्थिति में मैं अपने माता-पिता का इकलौता बेटा होने के बावजूद उन्हें वह समय नहीं दे सका जिसकी उन्हें सख्त जरूरत थी। मैंने मन ही मन फैसला किया कि जैसे ही कोविड की स्थिति में मेरी सरकारी जिम्मेदारियां खत्म होंगी, मैं असम वापस आऊंगा और अपने माता-पिता की देखभाल करूंगा। अंग्रेजी में एक कहावत है- 'चैरिटी बिगिन्स एट होम' मैं अपने घर की उपेक्षा कर, अपने परिवार की उपेक्षा कर सामाजिक कार्य करने का अर्थ नहीं समझ पा रहा था।

उस दौरान, मृण्मयी ने मुझसे पूछा कि हमने अपनी वापसी के लिए क्या व्यवस्था की है। उनके शब्दों से मुझे अचानक एहसास हुआ कि हम जिस भी राज्य से गुजरे हैं, वहां के स्वयंसेवी संगठन और व्यक्ति हमारी मदद करने के लिए उत्सुक थे क्योंकि जब हम मुंबई से आए थे तो कैंसर के मरीज हमारे साथ थे। लेकिन वापस लौटते समय उन्हीं लोगों को फिर से परेशान करना सही नहीं होगा। छह बसों के ड्राइवरों और सहायकों सहित कुछ लोग और अरुणाचल प्रदेश के दो मरीजों के माता-पिता हमारे साथ जाने वाले हैं। जब उन्हें पता चला कि हमलोग मुंबई वापस जाएं तो वे भी साथ चलने का आग्रह कर रहे थे। उनके भाई को ल्यूकेमिया था और डॉक्टरों ने उन्हें बताया कि जल्द ही उन्हें बोन मैरो ट्रांसप्लांट की जरूरत है। भाई और बहन, जो अपने भाई को बोन मैरो दान करने के लिए आगे आए थे, इस बात से परेशान थे कि वे कोविड-19 स्थिति के कारण मुंबई की यात्रा नहीं कर सकेंगे। हमारे ड्राइवर, जिन्होंने 2,500 किलोमीटर से अधिक

दूरी तय की थी, बहुत थके हुए थे। हालांकि, थकने या आगे की चुनौतियों के बारे में चिंता करने का समय नहीं था। यह तुरंत कार्य करने का समय था।

मैं मृण्मयी की पारदर्शिता से अच्छी तरह वाकिफ हूं। मुझे पता था कि मृण्मयी वापसी के दौरान जरूरी सामग्रियों को जुटाने में मेरी कल्पना से बेहतर इंतजाम कर सकती है। उस पर विश्वास करते हुए, मैंने मृण्मयी को आवश्यक खाद्य सामग्री सहित रास्ते के लिए अन्य सारी जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी दी।

मेरे साले उदयादित्य ने बड़ी सावधानी से मेरे लिए लंच कैरियर में थोड़े सूखे चावल और मसालेदार मछली का सूप लाकर दिया। जीवन में कभी-कभी ऐसी बातें दिल को छू जाती हैं। पता नहीं जयंत गोस्वामी की मजाक और गुन भाई की सलाह के साथ मैंने वह समय कैसे बिताया। मेरे साथ करीब आधा घंटा बिताने के बाद मेरे माता-पिता और हमारी 'दीपशिखा' टीम ने मुझे अलविदा कह दिया।

जब मैं अपने कमरे में वापस आया, तो मैं सबसे पहले एक प्लेट लाया और उदय द्वारा लाए गए सूखे चावल और मसालेदार दलिया खाया। विदेशी खाना खाने के बाद करीब छह दिन से बाद पी रहे चटपटा सूप कुछ अमृत जैसा लग रहा था। अपनी मिट्टी का स्पर्श, रिश्तेदार, दोस्त और उनकी बातचीत, हल्के चावल के साथ एक मुट्ठी फ्राई राइश, पुथीमास का मसालेदार सूप पाकर जीवन सार्थक लगने लगा। दोपहर में झपकी लेने के बाद मैंने यात्रियों की जांच की। वे बहुत चिंतित थे, क्योंकि उनमें से कई यात्रियों को तुरंत इलाज की जरूरत थी। दूसरी ओर कुछ लंबे समय से अपने घरों से दूर थे और जल्द ही अपने घर लौटने के लिए आतुर थे। हमारे साथ आए हृदय रोग से पीड़ित छोटे बच्चों को यह समझ में नहीं आया कि उन्हें एक कमरे में क्यों बंद कर दिया गया और वे अपने माता-पिता से तरह-तरह के सवाल पूछते रहे। मुझे नहीं लगता कि माता-पिता उन्हें कोई सही जवाब दे पाए होंगे, क्योंकि आम नागरिक इस बीमारी से लगभग पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हो चुकी है सामाजिक व्यवस्था के बारे में समझ नहीं पाए थे। मुझे अभी भी इस बात पर संदेह है कि न केवल आम नागरिक बल्कि विचारक और बुद्धिजीवी भी कितना समझ पाए होंगे।

मुझे पता चला कि बसंत कुमार दास, जो यात्रा के बीच में बीमार पड़ गए थे और जिनकी गले की पाइप की मरम्मत डॉ. नीलाक्षी ने की थी, धीरे-धीरे कुछ भी निगलने में असमर्थ थे। मैंने डॉ. विभास गोस्वामी, निदेशक, राज्य कैंसर संस्थान से संपर्क किया और उनसे होटल में एक डॉक्टर भेजने का अनुरोध किया

ताकि वे उनकी और कुछ अन्य रोगियों की जांच कर सकें। विभास ने मेरी बातों को बहुत गंभीरता से लिया और तुरंत अपने अस्पताल से दो डॉक्टरों को भेजने की व्यवस्था की। डॉक्टरों ने आकर श्री दास को अस्पताल भेजने की व्यवस्था की।

माननीय स्वास्थ्य मंत्री हिमंत विश्व शर्मा और स्वास्थ्य राज्यमंत्री पीजूष हजारिका ने रोगियों के स्वास्थ्य की लगातार जानकारी ली। जब मैंने उनसे पूछा कि मरीज घर कब लौट पाएंगे, तो उन्होंने जवाब दिया कि आरटीपीसीआर के नतीजे आते ही निगेटिव नतीजा आनेवाले यात्रियों को राज्य परिवहन निगम की बसों से उनके घरों में उतार दिया जाएगा। पोजिटिव नतीजा आनेवालों को गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज में कोविड-वार्ड में भर्ती कर दिया जाएगा। मैं इस तरह के उपायों के लिए कोविड-19 के खिलाफ असम सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा शुरू किए गए अभियान की सराहना किए बिना नहीं रह सकता। मरीजों को मुंबई से असम वापस लाने के हमारे प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए और लगभग 50 लाख रुपये खर्च करने का फैसला करते हुए मरीजों का कायदे से आरटीपीसीआर परीक्षण करवाकर, उन्हें एक फाइव स्टार होटल में ठहराना और फिर सभी को घर भेजना (मरीजों का बिना एक पैसा खर्च किए) - यह वाकई काबिले तारीफ और उल्लेखनीय है कि इतना काम बिना किसी लापरवाही के किया गया है। मैं मंत्री जी के साथ-साथ स्वास्थ्य विभाग, प्रशासन और पुलिस विभाग के हर अधिकारी और कर्मचारी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करना चाहता हूं।

वापसी की यात्रा के लिए तैयार होने का समय आ गया था। मैं थोड़ी देर के लिए डॉ. नीलाक्षी से मिला और अलविदा कह दिया। हम दोनों और टीम लीडर सभी भावुक थे। पिछले पांच दिनों के दौरान हम सभी ने कई चुनौतियों का सामना किया। इन्हीं दिनों नीलाक्षी और हमारे टीम लीडरों के बीच भाईचारे का एक नया रिश्ता विकसित हुआ। मुझे एहसास है कि इस दिन के बाद मैं आने वाले दिनों में उन्हें और हमारे कुछ साथी यात्रियों को कभी नहीं देख पाऊंगा। मैं अपने कमरे में वापस गया और अपनी डायरी में कुछ वाक्य लिखने की कोशिश की। मेरे मन में सागर की लहरों की तरह विचारों का रेला आ रहा था, लेकिन कलम उठाने के बाद मैं कुछ नहीं लिख पा रहा था। उस दिन कुछ वाक्य ही लिखने के बाद मैं कुछ लिख नहीं पाया। मेरे मन में विचार रह गए। कॉल बेल बजी। मुझे पता चल गया कि रात का खाना मेरे कमरे के बाहर टेबल पर परोसा गया था। सुबह हमें मुंबई की ओर 2,700 किलोमीटर की वापसी की यात्रा आरंभ करनी है-तैयार रहना होगा।

अध्याय 9

मुंबई की वापसी यात्रा

रेडिसन ब्लू होटल प्रबंधन ने मुझे जो कमरा दिया था, उस कमरे की खिड़की के पर्दे से सुबह की धूप आने पर मेरी आंखें खुल गईं। तब सुबह के करीब साढे छह बजे थे। कोविड महामारी के दौरान सुबह की चाय होटल के इंटरकॉम में कहने से नहीं आती थी। होटल के कर्मचारी मेरे कमरे के बाहर रखी टेबल पर केवल सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात का खाना रख देते थे और उसके बाद वे दो बार दरवाजा खटखटा देते थे। ऐसी एक भयानक स्थिति थी कि कोई किसी के पास जाने की हिम्मत नहीं करता था। वैसे में कोई कोविड संक्रामण के बीच बस पर चढ़कर मुंबई से असम आया है, यह जानने के बाद किसी का हमारे पास नहीं आना स्वाभाविक था। बिस्तर से बाहर निकलकर, बिजली से चलने वाली केतली में पानी गर्म करके एक कप चाय बनाई और खिड़की के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया और अपने बस चलाने वाले एक ड्राइवर को फोन लगाया। तीन- चार बार की कोशिशों के बावजूद कोई जवाब नहीं आया। मुझे भी यह समझ जाना चाहिए था कि इतनी लंबी यात्रा के बाद सुबह न जगना उनके लिए सामान्य बात थी। चाय पीते हुए मैंने मन में आगे की यात्रा के लिए कुछ योजनाएं बनाने की कोशिश की, लेकिन मेरे विवेक ने मुझे बार- बार याद दिलाया कि अनिश्चिता के बीच हमारी गुवाहाटी से मुंबई की इस यात्रा के लिए विशेष योजनाएं बनाने का कोई मतलब नहीं है। पास के टेबल पर रखे रिमोट को हाथ में लेकर एक के बाद एक टीवी चैनल देखने लगा। हर एक चैनल पर हमारी यात्रा के बारे में जिक्र था। मैं एक बहुत ही भावुक इंसान हूं। अचानक ही कुछ निर्णय ले लेता हूं। मैं इतना ज्यादा नहीं सोचता। शायद इसीलिए विवेकानंद विद्यालय, डिगबोई के स्वर्गीय बिपेंद्र भट्टाचार्य सर ने स्कूल में कहा था, इसे एक सेना अधिकारी होना चाहिए। भगवान की कृपा से यात्रा में कोई अघटन न घटने के कारण 'हीरो' किंतु कुछ दुर्घटना होने से संपूर्ण रूप से एक 'जीरो' बन सकता था। हीरो हो या जीरो यह कोई बड़ी बात नहीं है।

हम सभी जीवन में कभी न कभी एक पल में हीरो होते हैं और कभी कहीं पर जीरो। केवल एक ही बात याद रखने की है कि हमें कभी भी इस हीरो या जीरो की स्थिति पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए। सब कुछ अस्थायी है। हमारे कैंसर रोगियों और उनके परिवार के चेहरे की मुस्कान ही हमारे जीवन में हमेशा के लिए एक मधुर अनुभव रहेगा।

प्रशासन की ओर से हमारे पहुंचने के अगले दिन ही हमें वापस जाने का आदेश दिया गया था। शायद हमारी हालत को देखते हुए उन्होंने हमारे आने के अगले दिन कोविड प्रोटोकॉल को मानते हुए होटल में आराम करने की आदेश दिया था और उसके अगले दिन में ही मुंबई की यात्रा शुरू करने का आदेश दिया था। गुवाहाटी आने के समय मेरे साथ सभी लोग थे। लेकिन लौटते समय मेरे साथ लक्ष्मीराम कलिता, ड्राइवर और हैंडीमेन...यही कुछ लोग। इस बात को सोचकर मैं पूरी तरह से चिंतित नहीं हूं, यह कहना सही नहीं होगा।

सबसे पहले दिमाग में आया था कि ड्राइवरों और हैंडीमेन को उनके होटलों से जल्दी बुला लिया जाए और बसों की सफाई कर दी जाए। और साथ ही मृण्मयी से संपर्क करके हमारे वापसी यात्रा के लिए उसके द्वारा एकत्र की गई सामग्रियों को जमा कर लें। आरटीपीसीआर टेस्ट के नतीजों को लेकर मन काफी असमंजस में था। उस समय एक 'पोजिटिव' आरटीपीसीआर परीक्षण को लगभग अछूत माना जाता था। सफर के दौरान अगर कोई ड्राइवर या हैंडीमेन बीमार हो जाए तो क्या करूंगा। इस बार तो नीलाक्षी भी साथ नहीं हैं। ड्राइवरों के आगे एक मास्क पहनकर, जैसा कि फिल्म थ्री इडियट्स में दिखाया गया है- ऑल इज वेल ऑल इज वेल, ऐसा मानने के अलावा क्या कोई और विकल्प था?

तभी मृण्मयी का फोन आया और बताया कि वे लोग आ गए हैं। मैं जल्दी से नीचे आ गया। मुझे ज्यादा पैक नहीं करना था, लेकिन मैंने अपना सामान बाद में आकर ले जाऊंगा यह सोचकर उन्हें रूम में ही छोड़ दिया था। जाकर देखा मृण्मयी एक गाड़ी भरकर बहुत सामग्री ले आई थीं। राशन, आलू, साग-सब्जियां, बिस्कुट, अंडे, मक्खन, ब्रेड, जैम आदि। इसके अलावा उनके साथ हमारी प्रिय अनु और मेरे मित्र शबनम मोहनराज खुद ही बड़ी सावधानी से पैक कर कई तरह के स्वादिष्ट व्यंजन लेकर आए थे। उन लोगों लाई गई इतनी सामग्री थी कि हम उन्नीस जन यात्रियों के लिए दो दिनों तक वह बहुत थी। मृण्मयी द्वारा लाए गए कुछ सामानों को देख मुझे बहुत अच्छा लगा। वे सामान थे- एक बड़ी कढ़ाई, दो पतीलें और एक

गैस चूल्हा । वाह! हमें अब कौन रोक सकता है। पूरे रास्ते में जहां भी मन करे, वहीं पर बस को रोककर खाना पकाकर पिकनिक मनाते हुए जाएंगे। परंतु वह खुशी थोड़े ही समय के लिए थी। उस समय ही फोन बजा और उधर से तत्कालीन माननीय स्वास्थ्य मंत्री और अब के मुख्यमंत्री श्री हिमंत विश्व शर्मा देव ने मुझे कहा था कि - मौकन दा (तभी के दिनों में कुछ रिश्ते से वह मुझे मौकन दा कहकर संबोधित करते थे) आप लोगों के बस में आए हुए पांच यात्रियों को कोविड पॉजिटिव पाया गया है।

हालांकि मेरा मन में पहले से इस तरह की आशंका थी, फिर भी मन में एक आशा थी कि अगर हमारी बसों में आने वाले किसी भी यात्री का कोविड पोजिटिव नहीं होता तो यह बेहतर होगा। मंत्री जी जानना चाहते थे कि हम वापसी यात्रा कब शुरू करेंगे। हमने जल्दी से यात्रा शुरू करने की तैयारी की। इस बार हमें किसी रोटरी क्लब या सपोर्ट ग्रुप ज्यादा मदद कर सकेंगे, इसकी उम्मीद नहीं थी। इसलिए गुवाहाटी से चार दिन और पांच रात की यात्रा के लिए आवश्यक लगभग सभी सामग्री एकत्र करना आवश्यक था। मृण्मयी ने भोजन और पकाने की सारी सामग्री ले ही आई थीं। लेकिन मैंने मृण्मयी को दवा और पर्याप्त पानी की जिम्मेदारी भी सौंपी, और होटल में रहने वाले ड्राइवर और हैंडीमेन को भी होटल से आते समय असम सिविल सेवा की कर्मी पमी बरुआ के साथ संपर्क करके आवश्यक सामग्री को एकत्र करने के लिए कहा। गुवाहाटी में कार के पुर्जों की दुकानें बंद रहने के कारण सारा सामान नहीं जुटाया जा सका। जिस बस की आगे की विंडशील्ड पूरी तरह से टूटा हुआ था, उसकी मरम्मत नहीं की जा सकी थी और मैंने बिना सामने वाली विंडशील्ड के ही बस लेकर जाने का फैसला किया। गुवाहाटी आने के बाद बसों के अंदर की सफाई नहीं की गई थी, क्योंकि गुवाहाटी आने के बाद ड्राइवर और हैंडीमेन सभी थके हुए थे। उनके पहुंचने से पहले दीपशिखा के लक्ष्मीराम कलिता और नगेन दास बसों के अंदर घुस गए और उन्हें साफ करने लगे। कुछ देर बाद बस चालक व हैंडीमेन सभी आ पहुंचे।

उस समय दोपहर के करीब दो बजे थे। हमने ड्राइवर, हैंडीमैन, लक्ष्मीराम कलिता और अरुणाचल प्रदेश के एक जोड़ी भाई- बहनों को (जिनके भाई का मुंबई के टाटा अस्पताल में इलाज चल रहा था) साथ लेकर मुंबई की ओर अपनी यात्रा शुरू की। जब मैंने मृण्मयी और नगेन को अलविदा कहा, तो एक बात मेरे मन को पीड़ा दे रही थी। मेरे माता-पिता की अवस्था ठीक नहीं थी। विडंबना यह

थी कि चाहते हुए उनसे मिलने जा नहीं सकता था, खासकर ऐसे समय में जब मां-बाप को मेरी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मेरे लिए यह बड़ी विषम स्थिति थी। मैंने मन ही मन फैसला कर लिया था कि चाहे कोविड की वजह से जैसी भी स्थिति हो, मैं मुंबई पहुंचते ही गुवाहाटी लौट जाऊंगा। हालांकि परिस्थितियों ने मुझे ऐसा करने की अनुमति नहीं दी।

हमारी छह बसें काफिले में रेडिसन ब्लू के गेट से निकलीं। मैं लक्ष्मीराम कलिता के साथ पहली बस में था। बस नंबर तीन में अरुणाचल प्रदेश के यात्री थे और बस कंपनी के मैनेजर बस नंबर पांच में थे। मैंने रेडिसन ब्लू होटल के गेट के सामने कई पत्रकारों को कैमरों के साथ इंतजार करते हुए देखा। कुछ लोग आगे आए और हमारी बस को रोकने की कोशिश की थी। स्वाभाविक रूप से उनके पास कई प्रश्न थे। लेकिन उस समय हम पत्रकारों के किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए तैयार नहीं थे। हमारी रणनीति लगभग पिछली बार जैसी ही थी। हमारे असम भवन के कर्मचारी प्रदीप हालै के कई कॉल मुझे पहले ही आ चुके थे। वह और उनके भाई बीरेन दोनों ने कई वर्षों तक असम भवन में काम किया है। कोविड महामारी से पहले वार्षिक छुट्टी पर वह घर आ गया, लेकिन मुंबई नहीं लौट सका। हमारे आने की खबर सुनकर वे दोनों हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो गए। मैं प्रदीप और बीरेन को बस में लेकर आगे बढ़े। वे साग- सब्जी के पैकेट लेकर बस में सवार हो गए। ये सब्जियां नलबाड़ी में उनके घर में उगाई जाने वाली सब्जियां थीं। इस बार कौन हमसे मिलेगा और.... ।

हमने प्रदीप और बिरेन को अपनी बस में बिठा लिया और आगे बढ़ गए। रंगिया पहुंचने से पहले मुझे तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री का फोन आया। मुझे उनसे पता चला कि हमारे पांच यात्रियों की कोविड की आरटीपीसीआर परीक्षा पॉजिटिव है और उनमें से एक छोटा बच्चा था। इस बात को सुनकर मेरा मन जोर से झटका लगा। एक बार कोविड पॉजिटिव होने के बाद रोगी को अलग कर दिया जाता है और किसी के भी संपर्क में आने की अनुमति नहीं होती है। मुझे इस बात की चिंता थी कि उस छोटी बच्ची का क्या होगा, मैंने उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। मंत्री ने कहा था कि जिन यात्रियों में कोविड पॉजिटिव पाए गए हैं, उन्हें गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज भेजा जाएगा और होटलों में ठहरे बाकी यात्रियों को अगले दिन सरकारी बसों से उनके गंतव्य स्थान के लिए रवाना किया जाएगा।

हाईवे पर पसरे सन्नाटे के बीच हमारी बसें तेजी से चल रही थीं। बस के पिछले

हिस्से का माहौल सुखद था। पीछे से हंसने की आवाज सुनकर अच्छा लग रहा था। पीछे लक्ष्मी, प्रदीप और बीरेन थे। उनकी हंसी सुनकर मुझे थोड़ी खुशी हुई। बरपेटा रोड पहुंचने से पहले असम भवन में कार्यरत एक वरिष्ठ अधिकारी का फोन आया। जैसे ही मैंने 'हेलो सर' कहा, वे चिल्ला उठे। उन्होंने मुझसे अंग्रेजी में बड़ी सख्ती से पूछा- मैंने किसकी इजाजत से इन मरीजों को इस तरह मुंबई से गुवाहाटी लाने की हिम्मत की। उत्तर में मैंने कहा कि माननीय स्वास्थ्य मंत्री स्वयं इस यात्रा की निगरानी कर रहे थे और कहा कि अगर इन रोगियों को मुंबई से गुवाहाटी नहीं लाया गया होता तो उन्हें बिना इलाज के मौत में ढकेल दिए जाते। मेरे शब्द जलती हुई आग में घी डालना जैसा हुआ। उन्होंने मुझे बताया कि इस तरह का व्यवहार एक मिसाल कायम कर सकता है और सरकार उन्हें ऐसे काम करने के लिए भविष्य में भी मजबूर कर सकती है। इसलिए मुझे ऐसे काम करने की कोई जरूरत नहीं है। जब मैंने वरिष्ठ अधिकारी की बातें सुनीं तो मुझे एहसास हुआ कि अब उनसे बात करने का कोई मतलब नहीं है। मैंने उनकी महान सलाह के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और बिना कुछ खास कहे उन्हें अलविदा कह दिया।

हमने बरपेटा रोड पार किया और सरभोग की ओर बढ़े। सरभोग से कोकराझार और अभयापुरी की ओर चल पड़ा। शाम को छह बजे मंत्री चंदन ब्रह्म सर ने फोन करके कहा था कि 'भाई, तू हमारे यात्रियों को ऐसे मुंबई से ले आया, यह जानकार मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने तुम्हारे लिए कुछ सामान की व्यवस्था की है।' उन्होंने मुझे बताया कि हमारे कोकराझार पहुंचने से पहले एसडीपीओ (अनुमंडलीय पुलिस अधिकारी) मुझे वह सामग्री सौंप देंगे। मुझे उनके स्नेही और व्यापक हृदय के बारे में जानकर बहुत अच्छा लगा। कोकराझार पहुंचने से पहले कई लाल और नीली बत्तियों वाली पुलिस की कारों ने हमारी बसों को रोक दिया। कोकराझार के एसडीपीओ आए और मेरे हाथ में दो बड़े कार्टून सौंप दिया। उन्होंने मुझे सैल्यूट किया और कहा, ''हमें आप पर गर्व है सर।'' थोड़ी देर एसडीपीओ के साथ बातें करके हमने फिर से यात्रा आरंभ की।

रात हो गयी थी। हम प्रायः आधी रात के आसपास पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी पहुंचे। रास्ते में मैंने सबनम मोहनराज का दिया पैकेट खोला और तरह-तरह के पकवानों का लुत्फ उठाया। सिलीगुड़ी से होते हुए हमारी बसें करीब 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही थीं। मुझे ऐसी स्थिति में अपने माता- पिता को छोड़ने का दुख था। अगले दिन हमने बिहार में प्रवेश किया। सड़क की दोनों ओर

वैसे ही सैकड़ों लोगों की लम्बी लाइने थीं। कुछ ने बिहार में प्रवेश किया है और कुछ ने बिहार छोड़ दिया है। हमारे साथ- साथ कई छोटी- छोटी गाड़ियां, ऑटो रिक्शा, टेम्पो आदि थे, जिनमें असंख्य यात्री अपना सामान लेकर घर लौट रहे थे। । जीवन अद्भुत है.....। भले ही आप तमाम विलासिता में रहते हैं, अंत में आपका अपना स्थान सबसे प्रिय हो जाता है और हमें यह सीखने के लिए कोविड की आवश्यकता थी।

हम उसी रास्ते से वापस जा रहे थे, जिससे हम गुवाहाटी आए थे। वह सड़कें भी वही थीं, बसें भी वही थीं। केवल साथ में आये यात्री नहीं थे, जिनके साथ मैंने घनिष्ठ संबंध बना लिया था। उन यात्रियों में शायद बहुतों से मैं फिर कभी नहीं मिलूंगा, लेकिन यही जीवन है। यह एक जैसे ट्रेन का सफर है जहां अलग- अलग स्टेशनों पर यात्री हमारे डब्बे में आते है और थोड़ी देर हम बात करते हैं और यात्रा का आनंद लेते हैं। लेकिन निर्दिष्ट समय पर वे हमें अलविदा कहते हैं और उतर जाते हैं।

अनु और शबनम ने हमें जो खाना दिया था, वह लगभग खत्म हो चुका था। हमने अपना पिकनिक बिहार से ही शुरू किया था। हमने अपनी बसों को हाईवे से उतार दिया और उन्हें एक आम के बगीचे के बीच के रास्ते में खड़ा कर दिया। हमने बगीचे के पास एक धारा में स्नान किया। हमारे एक ड्राइवर ने मृण्मयी की दिये हुए राशन निकाले और चावल पकाने का इंतजाम किया। गैस छोटा होने के कारण बड़े बर्तन में चावल अच्छे से नहीं पके थे। इसलिए बगीचे के अलग- अलग कोनों में पड़े सूखे आम की टहनियों को इकट्ठा किया और आग पर चावल, दाल और एक सब्जी पकाई। मैं आम के पेड़ के नीचे बैठकर दोपहर के खाने की वह संतुष्टि को कभी नहीं भूल सकता। खाने के बाद, हमने पास की धारा में बर्तन धोए और अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी। इस बार उत्तर प्रदेश की ओर।

रात को बस में सोते जाने में बहुत मजा है। उसमें अगर बस मर्सिडीज बस हो तो और भी मजा है। मेरी सीट ट्रेन के एक विशाल कंपार्टमेंट की तरह थी। मुझे धीरे धीरे नींद आ रही थी। मुझे धीरे- धीरे एहसास हुआ कि काफी समय से हमारी बस आगे नहीं बढ़ी थी। मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा तो रात के बारह बज रहे थे। मैं अपनी सीट से उठा और अपनी बस के सामने ट्रकों का लंबी कतार देखी। मैं बस से उतर गया। उतरते ही अपने ड्राइवरों से मिला। पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने के कुछ ही समय बाद हम लगभग तीन

किलोमीटर लंबे ट्रैफिक जाम में थे और जाम को हटाने में कम से कम दस घंटे लगेंगे। ऐसे में सोच रहे हैं कि 'सफर कब खत्म होगा' ऐसा सोचते रहने के बीच ही एक ऐसी परिस्थिति आने के बाद मैं पूरी तरह से भ्रमित महसूस कर रहा था। चालक उपेंद्र सिंह ने मुझे सोने को कहा। वापस बस में आकर मैंने सोने की कोशिश की। लेकिन लगभग पूरी रात मैं करवटें बदलते रह गया और सो नहीं सका। जैसे ही मैंने बस की खिड़की से सुबह की सूरज की पहली किरण देखी, मैं उठा और फिर से बस से उतर गया। जब बाहर आया तो हमने अपने सामने सैकड़ो ट्रकों की लंबी कतार देखी। हम लगभग छह घंटे तक वहां रुके हुए थे।

हमारे ड्राइवर और हैंडीमेन सभी सो रहे थे। अपनी बस के दाहिनी ओर हमें हाइवे के किनारे मीलों तक फैले खेत दिखाई दे रहे थे। वापस बस में आकर मैंने ड्राइवर को जगाया और उससे कहा कि मैं पैदल ही आगे बढ़ना चाहता हूं। मैं जल्दी ही वापस आ जाऊंगा। अपनी नींद में ही उसने मुझसे कहा- ठीक है, सर। और वे फिर से सो गए। मैं हाइवे से उतर कर खेत की ओर गया और दूर एक गांव की ओर चल पड़ा। करीब एक किलोमीटर चलने के बाद मैं एक छोटे से गांव में दाखिल हुआ। ग्रामीण पहले ही सोकर उठ चुके थे और अपने काम में लग गए थे। अब तक लगभग गांव के सभी लोग उठकर अपने अपने काम में लग गये थे। सुबह का समय था पर फिर भी सूरज की तपिश धीरे- धीरे बढ़ रही थी। मैं सूखी भूमि, गोबर और सूखे भूंसे की गंध से गुजर रहा था। मैं यह भी नहीं जानता कि मैं कहां जा रहा था। मैं बस चला जा रहा था। किसी भी ग्रामीण के चेहरे पर मास्क नहीं था। वे सभी अपने काम में व्यस्त थे। कोई कुएं से पानी भर रहा था, कोई गायों को दुह रहा था, कोई घर के पास की छोटी शाखाओं से जलाऊ लकड़ी ले जा रहा था और कोई गांव के छोटे रास्ते पर अपनी साइकिल चला रहा था। ऐसा लग रहा था कि वहां कोविड नाम की चीज का कोई निशान ही नहीं है। तभी मुझे सामने से कुछ 'हेइ- हेइ' की आवाज सुनाई दी। मैं अपने जिज्ञासु मन के साथ काफी दूर तक चला और देखा कि एक बड़े तालाब में बहुत लंबे जाल से लोग मछली पकड़ रहे हैं। तालाब के दोनों ओर लंबा जाल खींचा जा रहा था। जैसे ही वे तालाब के अंत में पहुंचे, मछलियां पानी के ऊपर तक उछलने लगीं थीं।

जैसे ही जाल तालाब के किनारे पहुंचा, किनारे पर इंतजार कर रहे लोगों ने पानी में छलांग लगा दी, जाल काटा और करीब तीन से चार किलोग्राम वजनी मछली को पकड़कर तालाब के किनारे फेंक दिया। किनारे पर इंतजार कर रहे कुछ

लोग मछली को प्लास्टिक के मच्छरदानी में डालकर दूर ले गए। मैंने पहली बार इस तरह मछली पकड़ते देखा था। उनके बीच सोशियल डिस्टेंसिंग का कोई निशान नहीं था। मैं पहले ही कुछ युवकों से मिल चुका था। लगभग सभी ने मुझे एक संग्रहालय में सजाए हुए एक वस्तु की तरह देखा। जब मैंने उन युवकों से पूछा, जिनसे मेरी दोस्ती हुई तो क्या उन्हें संक्रमण के बारे में पता नहीं था, वे जोर से हंस पड़े। उन्होंने मुझसे कहा- ''भाई साहब ये कोविड शहर का लोगो की बीमारी है, हमारे गांव की नहीं।'' उनकी बातें सुनकर मैं कुछ भी उत्तर न देते हुए सिर्फ हंसा। सच कहूं तो मेरे पास कोई उत्तर भी नहीं था। विदाई के समय उन्होंने मेरे हाथ में प्रायः तीन किलो वजन की एक मछली दी थी। पैसे देने पर भी उन्होंने नहीं ली। उन्होंने मुझसे कहा- आप खुश रहिए। मैंने मछली ली और अपनी बस की ओर वापस चला गया।

जब मैं बस के पास पहुंचा तो देखा कि बसें ठीक उसी जगह पर ही खड़ी थीं, लेकिन हमारे पीछे वाली बसें धीरे- धीरे पीछे की ओर जा रही थीं। मुझे पता चला कि लगभग दो किलोमीटर दूर एक वैकल्पिक सड़क थी। वह सड़क लगभग अस्सी किलोमीटर लंबी है लेकिन हमारे पीछे कई अनुभवी ट्रक चालकों ने अनिश्चितता में प्रतीक्षा करने के बजाय दो किलोमीटर पीछे हटना बुद्धिमानी समझा। हमारे ड्राइवरों ने अन्य ट्रकों के साथ हमारी बसों को भी पीछे करना शुरू कर दिया। दो किलोमीटर की दूरी तय करने में हमें करीब डेढ़ घंटा लग गया। लेकिन धीरे- धीरे आगे बढ़ते गए। हमारे आगे कई गाड़ियां थीं। गांव से होकर जाने वाली सड़क बहुत संकीर्ण थी। साथ ही सामने सैकड़ों गाड़ियां भी थीं। हाइवे तक पहुंचने में हमें और चार घंटे लग गए। इस ट्रैफिक जाम ने हमारी यात्रा में लगभग चौदह घंटे की देरी कर दी। एनएच हाइवे पर पहुंचने के बाद हम फिर तेजी से आगे बढ़ पाए।

लक्ष्मी कलिता के बड़े कष्ट से बनाकर लाए हुए एक कप चाय और बिस्किट के अलावा सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। भूख के मारे पेट में मरोड़ होने लगी थी। हम जिस पुल से जा रहे थे उसी के पास में बस को रोका और जल्दी से बर्तन निकालकर पुल के नीचे से बहती छोटी सी नदी के किनारे तक चले गए। अब तक हम यात्रा में खाना पकाने के काम पर एकदम उस्ताद बन चुके थे। हमने बस की डिक्की में लाई हुई सूखी डालियों को जलाकर अच्छी तरह चावल पकाया और मैं जो मछली लाया था, उसे टमाटर आलू के साथ मिलाकर एक अच्छी करी बनायी गयी। एक ड्राईवर ने टमाटर, प्याज और मिर्च की चटनी भी तैयार की थी।

उत्तर प्रदेश के बाद मध्य प्रदेश में हमने प्रवेश किया। वही सड़क, वही सड़क किनारे भीड़, वही जन विपदा। मध्य प्रदेश से महाराष्ट्र पहुंचा। महाराष्ट्र की सीमा में प्रवेश करने के बाद हमारी यात्रा पूरी होने में करीब छह घंटे बचे थे। रात हो चुकी थी। हम सबने आखिरी बार मिलकर कुछ दुकानों के पास फिर से कढ़ाई चढ़ा दी। हमारे साथ आए अरुणाचल के भाई- बहन ने खाना बनाने में हमारी मदद की। हम सब बेहद भावुक हो गए थे। ड्राइवर उपेंद्र सिंह ने बिना आलू छीले सब्जी बनाई और कच्ची मिर्च ज्यादा डाले। मैं उस स्वाद को अब भी नहीं भूल सका। खाना खाने के बाद हमने फिर से अपनी यात्रा शुरू की। बस के सामने के सीट में बैठकर पीछे जा रही सड़क को घूरते हुए मुझे पता ही नहीं चला कि मेरी आंखों से आंसू कैसे गिर गए। मुझे नहीं पता कि मैं क्यों रोया। समय- समय पर कई कॉल आए। मृण्मयी, गुण दा, जयंत, अनु गुवाहाटी से खबर ले रहे थे और नीता, जयेश, ध्रुव, मृदुल, राजू और मेरी पत्नी आइनु मुंबई से बार- बार फोन कर रही थी। उस समय में मैंने उनलोगों को क्या उत्तर दिया था, मैं खुद भी यह नहीं जानता।

मैं सिर्फ अपने बस की सामने विंडशील्ड की ओर देख रहा था। इगतपुरी के बाद हमने कल्याण पार किया। एनएइच हाइवे से बाएं मुड़ें और धीरूभाई अंबानी नॉलेज सिटी से होते हुए वासी में प्रवेश किया। सबसे पहले हमने अरुणाचल भवन के सामने अपनी बसें रोकीं और भाई के इलाज के लिए आए भाई- बहनों को वहां उतार दिया। अरुणाचल भवन में रह रहे अतिथियों ने हमें गेट तक आकर धन्यवाद दिया। हम बस में वापस चढ़ गए और पास के असम भवन की ओर चल पड़े। दूर से असम भवन दिखाई दिया और मेरी आंखों में फिर से आंसू आ गए। थोड़े ही आगे मैंने कुछ लोगों की भीड़ देखी। हमारी बस मेघालय भवन और असम भवन के बीच सड़क पर जाकर रुकी। जैसे ही मैं बस से उतरा, मेरी पत्नी आइनु ने दौड़कर मुझे गले से लगा लिया। आइनु के साथ जयेश, ध्रुव, राजू और मृदुल तथा उनके ठीक पीछे हमारे असम भवन में रहे कुछ रोगी और उनके माता-पिता थे। कुछ ने मुझे गले लगाया, कुछ ने आकर मेरे पैर छुए। उस वक्त सोशल डिस्टेंसिंग के बारे में किसी का भी ख्याल नहीं आया था।

यह हमारी यात्रा का अंतिम अध्याय था। 'ओडिसी' में जैसा कि होमर ने कहा जीवन की हर धारणा क्षितिज के किनारे की तरह है। अपने लक्ष्य तक पहुंचने के बाद भी वह तट एक नए अभियान के लिए, एक नई यात्रा के लिए, और सपनों के एक नए ओडिसी के लिए जारी रहती है।